इअ'नश्रेय'इम'नासय'

मितुनिवा



अह्र द्राया या

স্তান। স্ক্রনান্ ইবাক ইবালী প্রানাধান। বর্ষী নান। ক্রমাঞ্চনান্ সাম কিবা ইবাক ব।

न्गार क्या

ग्वनः देवः ये द्य	1
रटाचीयापविषानुष्टेयात्यापविताहेयासुष्टित्यादेष्ट्रम्य	
অ'নাইশা	1
समयः पहिना सुः र्रेपाना स्वरं में स्वरं मार्चे प्रतिः स्वरं वा वा विना	1
ह्न्- होन्- प्याःयो : रूटः यविष्- य- १० - । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	1
श्चेदिन्द्र्यामबी	1
श्चुनः मानि	2
শ্বর'বরীর'বাইশ'শ্রী'রীর'অশ'শ্রী'ন্তির্'মম'রী	3
रर-र्नेन-ले छ-र-पानन-र्नेन-ले छने-पर्ने अपने छिन्-पर-ने।	4
ग्वितः देवः हे शः द्रम्याः यो सळ्वः छेदः चन्दः मन् या शुर्या	6
रटाचीशासर्वेटाचिरार्चेत्राचल्यायात्रेश	6
वर्रे र पार्वे र पार्वे ।	6
ने न्याया या या विश्वा	7
ग्वित ग्री अ।प्रश्ना स्वर्भ रहं अ। सुन ग्री न र र र र र र र र र र र र र र र र र र	8

यर्ने र न क्षुव दी	8
ক্রুষ্যনপ্রশ্বরিষা	8
ञ्चून हो द त्या नहना या त्या ना	9
শ্বর্মান্ত্র শ্বর্মান্ত্র শ্বর্মান্ত্র শ্রন্ত্র শ্রন্ত্র শ্রন্ত্র শ্রন্ত্র শ্রন্ত শ্রন	
শৃষ্ট্ৰশ্	9
न्र्रेशः क्रून्यः ग्रीः खुवः वः खुदः वीः वार्वे नः क्रुनः क्रीः सुदः वः	
श्चेर् रत्रमूत्र परि	9
ह्वारायदी'यासी'रुट'वाचे'च्या'तु'व्यत्रि'यासी	11
ग्रद्यारुदायागुनायदे सुना ग्रेन् नार्हेन देवायायायायासुया .	15
र्ह्में निर्मेश्रयासे निर्मेश्य क्षेत्र में	
বনশ'দ্ৰ'নাইদ্'দ্বাশ'দ'দ্ব।	15
ने खुर वीश मुन पा के प्रम् पा की	15
क्षायर्चे रासर्व सुसाग्री सागु या सासी प्रवर्ग साम	16
प्रश्नात्वरश्रास्त्रुतात्वेत्राधेत्वात्रात्रात्वा	18
दे श्चितः सर ज्ञानिते देवायः नह्नायः यान्याना सः यानिया	19

न्गार क्या

नश्चुन:ग्रु:व्य:नह्रम्यायायाःमःहि।	20
वर्त्रेवारायानह्यासायान्यानाः संदी	21
रटानी वयावयुराया सर्ह्य सामा श्रूटा या दी	21
र्देव विश्व श्रूष्य प्रदे प्रवेष या विष्	24
ग्रम् जेन् क्रें रापदे न्वें राप्य ग्रम्	26
क्षिणामिहेशस्य हिन् ग्रीशसून से नुष्य स्य स्य स्वाप्त ॥	26
श्चुन हो द न सम्पर्ण द से द से सक्द र सम्पर्ध ।	29
क्ट्रिंग्श्रूट्राचायाविश्रा	33
शुद्र-द्राविष्य-वःश्रुद्र-वःदे।	33
देवाश्वादान्द्रात्वावान्यः श्रुद्रान्यः व्यवाशुस्रा	34
मुँग्रामाळेगासुन प्रामी प्यत या प्येत प्रति सु सक्त	
न्याया प्राची	34
रटानी द्वित्राया ग्री सळव दे दे दाया सळ्ट या स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्थ	40
वर्षेयाचे दामावन ची र्से दायन वर्षेया से दार प्रमुन पाने।	43
निर्मित्रिक्तिक्षिः स्टरमित्रिक्षा	45

न्तुनाश्चर्यस्व नश्चुन जुदे रूट नविव त्य नश्चरा	45
रटाख्यायाची द्याच उदे सळ्द हेट् च न्ट्र याया यहिया	45
सर्देर नमूद त्य गृहेश	45
क्षेत्र'र्देव'वे।	46
য়	48
ক্রিশ্বন্ধ্রমা	51
वर्देर्'म् कुश्राम्बर्गानेश्रा	51
र्धेट्रमः वर्डेट्र श्रीः ट्वीं मः मः व्यः विहेश	51
र्मेषानवे वे पर्ने न सुन सुन सुन परी	51
ने सेन न न न न न न न न न न न न न न न न न	58
ক্ষ'নতদ্গ্রী'দ্র্নিষ'ন'অ'নান্ট্রমা	60
ग्राट र जो श्चे र्देन ग्राबन ले प्रदेन ग्री न श्चन ग्राधन	
বিবাশ-ম-মে-বাইশা	61
क्रिट्स्य क्षेत्र क्षे	61
र्ट्र अर्द्धर्था संस्था निष्	63

न्गार क्या

भ्रे तर्देन प्रदेश्चिम् अः श्रे ने द्वावदानगामा प्रश्रादेन प्रदेश	
नश्चनः ज्ञात्यम् वित्रास्तर वित्र स्तर स्तर वित्र स्तर वित्र स्तर स्तर वित्र स्तर स्तर स्तर स्तर स्तर स्तर स्तर स	67
रट.धेट.क्रिश.य.बट.ज.याश्रुमा	69
দুইশ্ৰান্য্যা	69
न्वें राम्य सर्म् राम्य विष्	69
मुश्रासर्त्रत्वर्त्रायात्रेश्रा	70
रट.भूदे.ट्रम् श.स.तबट.सद.स्याधियाश.यवया.स.स.याहेशा	70
ग्वन्थे सुरर्देन म्यून गुर्दि र पर्देन प्राप्त म्यापि स्था मित्र ॥	71
यर्देरःनक्षुवःयःवै।	71
मुश्रासरायत्रारायाश्रुया	77
न्र्रमञ्जूनमाध्यायायायायात्वराम्बर्निन्द्वेत्र्राक्षाःस्टरमञ्जी	77
स्रद्राचीशाम्बिद्राचित्राच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्य	80
देवे त्यव द्याया संस्थाया शुस्रा	84
र्ट्याङ्ग्रेन्यायास्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान	85
विच.स.सेस.स.चर्चेश.स.सेचीची.स.ची	85

सुर-र्देव-नग्राग्-ग्रह्म अनुव्यासंदे-सुन-होन्-त्य-सुह-मीश
भेयार्वे प्रस्तु 87
खर-र्देव-नग्राग-स-र्केव-नवे-र्स्ट्रेव-र्-वर्देन-स-नग्राग-स-दे। 89
र्नेष्ठान्त्रेष्ठा
₹५.५.५८.५८.५८.५८ चार्चेश
दग्यायानायासी प्रमुखामा र्र्मुन सेनाम मानायान सुरान है। 94
स्रम्दिन या मर्वे न पा हमा या भी भी व प्रमित्र प
गहेशना के त्वर्भन से के जिल्ला का का का किया के जा जा के जा जा के जा
नष्ट्रद्रान्डें सायायर्द्र्तायस्य यह्यार्थ्या ह्रेत्राह्र्या ह्रेत्रा स्ट्रेस्
र्देव उव धिव प्र प्र ग्रामा प्र वी
क्रेंश उत्र मुन नेतर नेश परि दें तर उत्र धित पर प्रामाप पति। . 105
र्केश उत्र म्हा अळव नश्चन गुः श्रेव प्रमः नेश परि देव उत्र नुः
वर्रे र पर नामा पर ने।
र्श्चिम्रार्शः अळ्वः १६८ र म्ह्रवः प्रदे र वीं श्राः याया विश्वा 114
र्श्विम्बर्ग्यः अळव् के दिस् अयम् च विद्या च विद

न्गार क्या

नसुरान्यानसूर्यानी	117
वर हुर के मा सर छै रें व नवर पर वे।	119
र्ट्रिट्रिं शुर्वी अप्यानसूत्रा है नसूत्रा दी।	123
মার্থারান্যরান্যনান্য ক্রান্ত্রনা ক্রান্ত	124
शेषानुन्यान्योशायायायायायायायायायायायायायायायायायाया	124
सर्देर निष्ठ्व दी	125
ক্রুষানপ্রশ্বাধ্যুষা	128
धिन् केशनश्रामश्रयानितं कुषायामित्रश्	128
श्चेदिः देवः यः नि	129
स्रम्योर्वे न हो न न में या श्रा हो न न न न न न न न न न न न न न न न न न	
र्शे स्यन्प्राची	129
दबर्'रादे'र्सेवारार्स्याम्बर'रादे।	130
নমন্যন্ত্ৰা ক্ৰিন্ত্ৰ	131
ने विश्वासी	132
षवःषमामि देवःषःमहिशा	

स्रद्रमार्वेद्भुनः तुःद्रमुद्रः नदेः द्धंयः यः मादेश ।	. 133
गुद्रायसान्त्रम्सासुःसुरःद्ररःस्ट क्षेत्रासेयः होत् सुँग्रसः वार्डेय	.
र्षः सूर्रा राष्ट्रे क्रुं सळ्द्र दी	. 133
सुर मीश मार्वे र परे पुरारे शमा तुर मारा मारा हा ।	. 139
র্ক্তমান্তর দুর্নমান্ত্রীমান্ত্রনামনি শ্লুনমান্ত্রান্ত্রদা	
गोगाश हो ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ।	. 139
প্র-ডে.শুনা-গ্রু-শ্রী-মান্ত্র-শ্রন্থ-শ্র-মান্ত্র-শ্রী-শ্রী-শ্রি-শ্রী-শ্র	
নমূর খে শ্বাস্থ্যমা	. 143
5र् र ूचे।	. 143
पिश्रः सूर्शः हेशः द्यापायश्यः य द्रः दुः हें तः यदे हुः यद्धं ते।	. 143
रट.क्ट्रिया.यक्षेत्र.यक्ट्र्यायका.स्यायाका.श्री.यक्षटी.सद	
५वे अ.स.च्री	. 146
देवे खद द्याया पर दी	. 147
ळ्ट्र.सर.शुर.यदे.खर.ट्रस.या बुट.य.दी	. 149
ন্যাম্পান্যমান্ত্রমান্ত	. 152

श्चेदिः देवः या शुर्मा	152
च्यायायायाये यात्रव्यक्षयाया च्यायायाये यात्रव्याचे यायायायायाये व्यायायायायायायायायायायायायायायायायायाया	152
म्याम्यान्यः हे सार्यमानी मान्या मुद्रे मुद्रायम् है।	153
শ্বাম্পান্দিন্ট্ৰানান্ধ্য	154
ष्यवःष्यम्भः भे देवःषः माशुस्र।	154
শ্বাবাপ্যব্যস্থান্ত্রিক্ত্রাক্রা	155
यर्ने र न ह्रव दी	155
ক্রুষানপ্রশাস্থ্যা	156
ग्राम्यायायायायायायायायायायायायायायायायायाय	156
ন্যাম্যান্য শ্যুর অ'ড্রির সেম নঞ্চুর ম'অ'বাষ্ট্রমা	. 157
ह्रम् अ 'द्रमें द्र' संदे	157
नेदे से वा र्रे वा राज्य वार्ते प्र हो प्र प्र वा स्वा विकास	158
ने खुर-दर-श्रु र-हे न-१५-४-१४-१४ ।	159
सुद:इदश:दश:दब्रेव:द्वेंद:दवें	
देविदेव्यम्पर्यायाक्षेत्रा	

सुर-र्देब-न-१८-५-र्देश-य-माशुम्रा	160
स्र- द्र- स्विन् स्वाम्य याया मित्र हो द्र- से द्र- से द्र- से स्वाम्य	160
खर महिरायदे रें त मुचुर म्यायायाया मुच छेर खेर पर	
नष्ट्रम् य स्व	162
स्रद्राची देव मान्व प्रम्पद्राचा महिला	163
र्ट्रश्रेंचशः हेशः द्यापीशः युवः पदेः देवः यः वेवाः श्रेंवाशः	
ञ्चून हो ५ : से ५ : स र : त सूत्र : य : ते।	163
रे'र्नेट'रुव्'र्नेर्भ'र्वट'ग्रेशः त्रुं'विः श्रुंभ'वर्हेर्'रुट'रु	
वहवानवे हे अन्यवा सेन्यम मक्ष्र मन्त्री	165
स्रद्राची द्रोर निर्दे द्राय निर्माय निर्माय निर्मा	167
रे में र उत् हु न अ जित् है। जिंद मिरे ही म हे अ मिरे दिये जा है	<u></u>
मदे स्व र र भुँ र र र वे।	167
ह्म'न'भेन'हे। वेश'मदे'न्मे'यार्हेन्मदे'यन्, हुँ र'न'हे।	169
শ্রদাশ দের দেরী দেশ দাঙ্গিশা	173
	173

न्गार क्या

क्रु अर्ळद् उद्य अप्पेद पदि श्रुप्य या से अपमर	
নমূর্'ন'অ'না্যুমা	175
नश्रृद्र'य'दे।	
र्हेन्'र्श्नेन'ने।	176
र्नेव्यसुर्वात्यायासुस्रा	177
5年初9	
ने 'न्या'यी श'युन'रादे 'न्व'दी	
ন্যাম্পানা ই মান্দ্র্যা থে মাল স্বান্ত্র স্থান বি	
ক্রু'অর্জব'অ'ন্টিশা	179
धीन् क्रेशन्द्र गहिशागा शन्त्र नु जुश्य दिन वे शिया दी।	181
सर्दि-शुस्रामीश्वाप्यानश्वापानिः द्वापायानशुस्रा	182
सर्देव-शुस्रामी अपनिर्देद-रादे-छुत्य-दे।	183
र्देव-श्लेश-प्रवे-प्रवेश-प्राची	184
মঙ্ব-গ্র-শ্রুষ্ম-মন্ত-দ্র্রাম-ম-ম-মান্ত্র্যা	
5年初3	

क्रॅश्रास्त्र मी वित्र प्रतायार्दे त्र प्रास्त्र या सामी प्रती सामी प्रती सामित सामि
ক্রু'মর্জ্ব'শে'বাশ্বুমা
यर्ने सहर प्रमान्ते कुषापर से क्रिंत परि कु सळत्ती 205
इसायम्यायस्त्राम्यासर्वेत् मुन्ग्रीन्ने न्वन्यायाम् ॥ . 207
र्केशःग्रीः विद्रास्य यार्वेद् चिद्राग्रीः द्रसान उदिः द्रमेः
र्देशयाबुदःनदी
শ্র্রি-ভূর-দ্ম-নতদেইশ-শ্র্রন-র্বা
नेशने या है भून गर्वे न प्राये छ्याया गरिशा
ध्रेन् ग्रे ज्याविव नियाना याया या विश्वा
ইন্শস্বী
नेवे त्यव न्याया न्य वी
इे.ज.श्र्याश्रासदे.लूच.पेच.रचीया.स.ची
देशःग्विदःष्परःह्रॅग्रशःयरःग्रःतःदी
ग्वित ग्री न्या नरदे सळ्त हे न न्या मा सामा स्था मा स्था 222
सळ्त्र [:] हेन्'छ्निः केश'सदे'ग्रोहेन्'स'दे।
यार्के न् स्वादे न् स्वाद्य स

देवे अव द्याया या अपा है या	3
चु नदे श्चार क्षर न विंत्र व व ह्वा मदे व व र व व व व व व व व	3
षश्याचेत्रपर्वेदे क्रेव्येद्रप्रश्च श्रुवाच्या च्यूवाच्या च	
र्वि त्यार्थे निवे त्यव न्याया प्राची	5
বদ্বাশ্ববাবাবেরাট্ট্শা	7
নশ্বুন'ন্ত্রি'র্দ্র'শ'নদ্গা'শ'র।	8
देशम्बुद्रभीःश्चुद्रश्यायः वहवायः वि।	0
ग्वित् श्री द्रायठवः क्षूर श्रूर गी द्रो द्राया पाया गिरी ॥ 23	3
ह्याश्रायात्रञ्जूतातुःश्चृतायदेःतुशायासेत्यात्रसात्रसात्रसात्रसात्र	
वयात्यः नविः क्रिंतः धोत्रः मः न्यायाः मः वि।	3
ह्रग्रशः के शः हेन् प्राविष्यः भ्रवः हेगाः भ्रेष्मव्याप्रयः प्राव्यः प्रयः प्रयः प्रयः प्रयः प्रयः प्रयः प्रयः	
वयायः नदेः क्रिंतः धेतः प्रान्यायाः प्राया विश्वा	5
यः गुनः पदे ह्मायः ग्रे क्रिंत् ५, नक्ष्र पदी	5
नेवेरकुंवरकुर्रायम्यन्वन्यायायात्रेरा	
ষমমাত্র মাত্রীর মামা শ্রু দ্বা মাম শ্রু বা মার ক্রিমারী মার্র	

श्चिरःग्रीःश्चिषायादयायायायाची	236
ने प्यम् ह्वाया शुः से मियायाया या हेया	238
वस्र १८८ संस्थित संस्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था	
भे:रुप्तांदी	238
श्चायाधिव,रा.वश्वायावट,या.लुच,रा.ध्यायायादी,	พ 241
রম'ন'দ্র্বাদ্র'র	241
रे'ल'€र्'नश्र्रायात्रात्रेश्रा	
यर्देर:नक्ष्रवादी	
ক্রুশ্বপদ্রী	
व्रे:चग'यः हॅं न श्वनःवी	
न्र्रेश्च मह्रम् याह्रम् कियाश्च ग्री स्व न्त्री व्य याहिशा	250
नमून भने ।	
নপ্র-মান্ত্রশা	251
मुंग्राक्ष्यमी:देशम्ब्राम्यम्बर्मिन्द्र्यन्त्रम्यमाद्वेश	
देशःग्राबुदःद्रिंशःशुःश्चुदःववेःह्रयःवठदःग्रेडेदःद्धंयःदे।	

न्ग्रम:ळग

देशम्बा बुद दिर्देश शुः श्रु सः भ्रु र । भदः इस । वडद ग्री दिंद हिंग शः दिः	
र्भेदी	53
र्धिमाश्राक्षेत्रारुद्वनुम्य निवादि प्रति श्रामाया महिला 25	56
বশ্বুর'ম'অ'মান্ট্রশ্	56
মন্দ্র্দ্র্দ্র্দ্র্র্দ্র্র্ণ্র	57
क्षेत्रार्देव दी	58
নপ্র্যাম্যা	59
र्चिम्राश्चेत्रारुद्दान्विःश्चेत्रार्यादेन्द्रम् रायायायायायायायायायायायायायायायायायायाय	50
র্মান্দ্রামান্মার্ক্রিনারুদান্ধিনার্ক্রিমান্দ	50
रदःचित्रह्मार्यायाः गुरुषायाः श्रूरियायि दिमें याया दे।	52
নান্ট্রশ্যা-স্ক্রিশ্যন্দির বিশিশ্যন্দ্রী	53
हिन्यम् मुक् सिन्य धिक्य रिक्सिय पिक्य प्राप्त स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स	57
श्रिमाश्रिमाश्चिमारहमार्द्धमारहमार्द्धमार्थमार्थमा	58
<u> </u>	
देवे व्यव द्याया च दी	70

भ्रे अ शुक् र्श्वे ग्रम्भ या मह्म्या श्राया प्राप्ता या प्ता या प्राप्ता या या प्राप्ता या	273
त्रे त्र्या परि वया या सारे साम सम्भ्रामा या विश्वा	275
रेग्रथः प्रदेश विष	275
	276
	277
र्नेव न सु न ने ।	279
	280
মর্জুদ্মাদ্দির্জ্ঞানী	280
भ्रे अर्द्ध् रश्रासात्रम्याम् राष्याम् शुम्र	282
देश'ग्राबुद'त्थ'द्युद्द्र'व्रशः व्याधित'युव'स'द्याया'स'त्थ'याहेशा . 2	282
প্রথ'ন'ন্ব্রি' ::	282
ই্র্ন্স্র্র্ব্র্যা	284
र्देशसेर्थः ह्वाशस्वारास्यावासे स्वारास्य वया वि . 2	
र्ने असे न त्या मासून कुत कन सम माया न ती	287
र्टायासकुंद्रश्राम् श्रुटायायाशुस्रा	

न्ग्रम:ळग

न्यायाः श्रुवः ग्रीः नर्देशः हेवः श्रुः नेवः न्युवः यः वे।	290
रदः अळ्दः धेदः यः द्यायाः यः याद्वेश	293
धुवावाञ्च रामनी	293
ध्ययः ठदः त्यः श्रु रः नः दे।	296
शुर्देव'द्याया'श्चेय'ग्चेद'र्द्देव'त्य'यायासुस्रा	297
न्यायाः श्रुचः होन् : स्वेदः हेना : सः त्यः श्रूदः रहं त्यः हो	297
ने'य'म'सून्'मदे'ळंन्'सस्'से'गर्नेन्'य'ने	298
क्ट्रायाव्यायां व्यक्तियायम्	
शुन्त्रामदे कु सळ्द दी	301
भ्राम्बद्धम्याम्याम्यास्याक्ष्मायम्याद्धम्यायम्	302
ब्र्यान्यन्याः भेन्। विः वः यशः व्र्याः यः यात्रान्यः यात्रिशा	302
तुअः र्से ग्रायायायाये दुः दुः से प्रयुत्रायाये ।	303
নার্মুখ-বিশ্বন্না-নহম-শ্রু-খ্রীব-ম-ধ্রী	305
ने मुन गुन निवान कथा शुर शे प्रमुन पाने ।	
र्श्रेग्'नद्ग'में में होद'स'धेद'सदे हु सळद'य गश्रुम	

र्गे हो द्रायहे या प्रायहे या प्रायह या प्
दे निद्याः श्रियाः यः युअः यः यः यिष्ठेश
ञ्चुनः चेन्द्रने न्यने
ইন্মাশ্বন্থনাইশা
र्हेन्'क्ष्र-'न्देश'के।
देदे त्यव द्याया य दी
वर्तेषानानेश्वरात्रीत्रीः व्यान्त्रम्भ्यायात्रिश् 318
कुं प्रव्यक्ष देवा वेदाय विद्या विद्य
नन्गाम्बेमायबेयान्नभून् बेद्राइद्रायम्बेन्यादी 319
रैगाश उद मान्द प्यर हे सूर ग्रुव प्य की
यन्भेग्रयम्परिन्भेन्द्रियःशुःभ्रेन्भ्रम्भेन्न्यदेन् सुःसळ्न्यःयाशुस्र 321
कु'न्न'विन'वेन'अन्भेगभामवेन्नो भेज्ञ'मवे कु'मवे कु'मळन वे। . 321
रट.यवुष.स.रेश्याश.सह.रेम्.श.र्सूष.सह.मैं.सह.में.सह.
অ'বাশ্বুমা
वज्ञेषापारेषाज्ञेराज्ञे।

বশ্বুবাস্ত্ৰ-হিষাশাৰ্দ্ৰ-বেশেশান্ত্ৰী	25
र्देशकी	25
र्हें पर्शेष्ट्री	27
वेज्यम् अः अः भ्रें तः प्रदेः क्रुः यळ्तः श्रे यः देतः तसुः तः दे। 3	30
अ'न्भेग्र परे'नें व'ग्रव'प'न्य पर्यायासुस्य 3	31
श्रूट: रुट: अ'द्रियाश' पदि देव' त्य' या शुर्मा	31
रट.यध्रेय.त्रायायायद्य.ध्याया.ग्री.स्याया.क्र्याया.क्र्याया	
গ্রীমান্যুন'ম'শে'নাধ্যুমা	31
नष्ट्रव्याची	31
নপ্দ'ৰ্শন্বা	32
ने सुन मने ने अ	33
ने:हे:क्ष्रूम:गुन:पदे:ळॅन्ने।	34
ग्वित्र'र्5'रु'रुट'म्प'र्न'ते।	36
	37
अन्द्रीम् अन्यदे हुँ र न य महिश्र	39

ञ्च्रव रहेमा से माव्याय यायाय या नहेव रावे सार्व साम्याय रावे र	
र्श्वेर प्रवेर प्रवेर प्रवेर विष्	. 339
यव र्द्ध्व श्वर त्याय या नहेव रावे या रात्रे या रा	
নপ্দ'ম'মাঝুমা	. 340
सव र्द्धव श्वर त्याय श्री रहें अ रयाय दी	. 340
ह्याश्चर्रान्याया चुदे के श्राभी व्याया या दी।	. 341
ववायानाने या हो दार्शी रहिता या विद्याया विद्याया विद्याया विद्या	. 342
मुरामुद्रमी मुराया नहीं या या यह मारे या नामा या ने	. 342
क्रेंश से प्रश्चें र नि	. 346
न-१८-यासन्तर्भित्रपितः ज्ञानाया महित्रा	. 347
गल्दःहॅग्रभःदगायः नरः नक्षुतः भवेः क्षें व्रशः के नः नहेंदः भवे।	348
वदिवेदिन्दिन्हिंग्रायास्त्रित्रः हुःसत् खेत्रः के न्यान्य सूत्रः सदी	. 349
ষম্বেষ্ণবাধ্বান্ত্রিম্নী,ষাই্বান্ত্রম্	. 353

यु र्वाद्रस्य अनुन्यस्य विद्यान्त्र विद्य विद्यान्त्र विद्यान्त्य विद्यान्त्र विद्यान्त्र विद्यान्त्र विद्यान्त्र विद्यान्त्र विद्यान्त्र विद्यान्त्र विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्त विद्यान्त्र विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्त्य व

शेर-श्रून-न्यर-वह्य-न्वुन्य-नर्शेन-व्यय-ग्रीय

XXII

ग्वमःर्देनःखेद्य

याद्गेर्थाः स्टानीर्थामान्यानुष्टेर्थान्य व्यानान्त्रः हेर्थाः शुः वहेत् स्वायः स्वायः स्वावेश

स्रवत्महेश्रश्चित्रायिश्वरिष्टे स्रिक्ष्याचित्र स्रिक्ष्य स्रिक्ष्य स्रिक्षेत्र स्रिक

र्हेन् खेन् प्रमानी स्ट प्रतिव प्रमानिक प्रम प्रमानिक प्

८८.स्.जा श्रुवि.स्व.८८। त्यवायी.स्व.स्। ८८.स्। श्रुवि.स्व.वावी

र्नेत्र खे दु: न्रः गावतः र्नेत्र खे दुवे: न्र्गेत्र स्वे: श्विन् स्या गावतः र्नेतः हे रा न्यगः भी सळ्तः छे न् राज्या । न्रः स्वा

श्रुन:रगःदी

र्ह्म श्री स्र श्री स्री स्र श्री स्र श्री स्र श्री स्र

श्चित्रभेट्टी गहेशाम्यायात्रीयात्र क्षेत्रस्य हिट्ट स्य से निष्ठ स्वायात्र क्षेत्रस्य हिट्ट स्य से निष्ठ स्वायात्र हिट्ट स्य से स्वयात्र हिट्ट स्वयात्र हिट स्वयात्र हिट्ट स्वयात्र हिट स्वयात्र हिट्ट स्वयात्य हिट्ट स्वयात्य हिट्ट स्वयात्य हिट्ट स्वयात्य हिट्ट स्वयात्य हिट स्वयात्य हिट स्वयात्य हिट्ट स्वयात्य हिट्ट स्वयात्य हिट्ट स्वया

यानसून गुरियायम गुरिया धीव दि।

বাইশ্যা

श्वरायविवायविषाः श्रीः चेत्रायश्रीः चित्रायस्वी

ग्याने रहं या मह्म स्थाने स्थान स्थाने प्रति स्थाने स्थान

यद्दा में द्वा के प्राची के प्राची

क्रम् अत्र म्हार विष्या की क्रिया के दुर मुह्म प्रदेश महार महार महार विषय का महार विषय करा करा करा करा करा करा

गशुसःमा स्टःर्नेवःखेखःद्रःगाववःर्नेवःखेखवःदर्गेशःचवेः। ছ्रान्यसः वी

ळन् संस्तेन न्यान्ति हैं से संस्ति संसि संस्ति संस

देखःस्टानीशःसर्वेटःचःद्दा द्वाद्यःस्वाद्यःस्वाद्यःस्वाद्यःस्वाद्यःस्वाद्यःस्वाद्यःस्वाद्यःस्वाद्यःस्वाद्यःस्व

ये दुःचनिः सःग्नन्दः देनः ये दु।

यम् तर्दे द्राया द्राया अध्या विषय । प्राया विषय । प्राय विषय । प्राया विषय । प्राया

ने त्यान्या भ्रूया कर उव वी भ्रुवे शे ह्या भ्रे । व्यान्य वित्र हो ने वित्र श्री मा वित्र प्राप्त वित्र हो ने वित्र श्री मा वित्र हो ने क्षेत्र श्री मा वित्र श्री मा वित्र हो ने क्षेत्र श्री मा वित्र श्री मा वित

द्ये नहें न्या हुन या स्वाय क्षेत्र प्रया हुन या है र वहें नि स्वार्त क्षेत्र प्रया है र वहें नि स्वार्त क्षेत्र प्रया है र या स्वार्त क्षेत्र प्रया स्वार्त क्षेत्र प्रया है र या स्वार्त क्षेत्र प्रया स्वार्त क्षेत्र स्वार्त क्षेत्र प्रया स्वार्त क्षेत्र प्रया स्वार्त क्षेत्र स्वार्त स्वार स्वार्त स्वार्त स्

ळ्ट्रास्त्रस्यादेश्वायश्याव्यव्यक्षाः देवाक्षेत्रहेष्ट्रास्त्रस्य स्थाप्त्रस्य विष्णे स्थाप्त्रस्य स्य स्थाप्त्रस्य स्याप्त्रस्य स्याप्त्रस्य स्याप्त्रस्य स्याप्त्रस्य स्याप्त्रस्य स्थाप्त्रस्य स्याप्त्रस्य स्याप

नेश्वर्यंद्रमेश्रा विश्वर्या के क्ष्या मुख्या के क्ष्या के क्ष्या मुख्या के क्ष्या के क्ष्या मुख्या के क्ष्या के

म्बिन्द्र में न्या क्षेत्र क्

स्टानी अया अर्थेट प्रायेट दिवा प्राया के स्वार्थ के स्वार्थ प्राया के स्वार्थ के स्वार्

वर्देन्यः नाईन्यः न्यः ने प्रवावाः यर्दे । प्रदेश

द्धयापश्चिम्यदे ह्या शः श्वेताया वितार्देता है शान्यपा में विशः श्वेताया वितार्देता है शान्यपा में विशः श्वेता स्थार्के या श्वेता स्टायी शासर्वेटा या विश्वार्श्वेताया या वित्वार्थे । स्वाया वित्वार्थे । स्वाया वित्वार्थे

याल्य या मुद्र या माल्य या मा

द्ध्यापाशुक्रास्टायाम्भृदायस्त्रु प्रस्ति व स्टामी शासुनाया द्विश

येतुःनवेःमःग्वनःर्नेनःयेतु

यात्र हेत् श्रुप्त व्याद्य प्राप्त हित्र प्राप्त हित्र प्राप्त हेत् । यहात्र हेत् या व्याद्य प्राप्त हेत् या व्याद्य हेत्य व्याद्य व्याद्य व्याद्य हेत्य व्याद्य व्याद्य व्याद्य व्याद्य व्याद्य व्याद्य व्याद्

य्याः ह्रें पायाः श्री रायाः श्री श्री रायाः विष्याः विष्याः

शेश्रश्राच्यत्त्र श्री विद्या श्री श्री विद्या विद्या श्री विद्या विद्या

ব্যন্তিশ্বা

ने न्याया सः व्यायाहि शा

वर्गुर ता अर्द्ध रश पा श्रूर पर्दे ।

प्रत्ये। प्रविष्णुश्चाप्रशास्त्रम्भ संस्थान्त्रम्भ स्थान्त्रम्भ स्थान्त्रम्

सर्देर नश्रुवा क्रुश न्त्र न्त्री । प्रत्ये।

र्ह्म अप्याप्त विश्व क्षेत्र क्षेत्र

ने श्रम्धिम् नम्या अर्थेन निर्मे किया

धेरा भ्रमायमाञ्चरमार्थ्यास्याम्याम्याद्याः मुक्तान्त्रे स्वराज्ये स्वराज्ये

বাইশ্বা

मुश्राचन्द्राया विश्वा

श्चुनः ग्रेन् व्यानहराषायाः प्रानापाः प्रान्ता नेषाः श्चुनः प्रमः ग्रुः नवेः देवः

ये दु नवी भागावन में न ये दु।

অ'বদ্বাশ'অ'ব্যাঘামনী | ব্ৰম্থ

श्चुन हो द्राया नहमा याया द्याया याया शुर्या

ব্দর্শী মদমাক্রমানর দিমারুদমার্থমারুবার্রিদ্রেমানারিমা

न्द्रभःश्रेन्याग्रीःध्रयायास्यःगिःगर्वे । ह्वायायदेग्यायोःस्याग्रीःच्याःक्ष्यभ्यात्रे ।

८८:स्र्री १८८४:क्र्रियमाग्री:पुषायाग्रीटानीमार्वेट्स्युयासी:सुटायाक्ष्रीटायक्ष्र्यायात्री

> ळ्ट्रायास्यायाय्यायायाळ्या। इयास्यायायायायाळ्या। ळ्ट्रायायायाच्यायायाळ्या।

र्ट्रश्र्व्यश्रह्र्यश्रह्र्यश्रुर्पयाग्यदेख्ययायाळेषार्राचे वहूर्युय

चेट्-चे-खं-अन्न-द्रिन्-प्रदेन्-प्र-देन्-प्र-देन्-प्र-देन्-प्र-कंन्-अन्य-प्रेन्-प्र-देन-प्र-देन-

म्ब्रम्य प्राप्त स्ट्रम्य स्ट

नेरके हे अर्पनायह्ना भेरक्ष्रा

ये दुःचनिः संग्नान्तः र्ने तः ये दु।

বাইপ্রমা

ह्याश्वरी यासी सुराय ही स्वा हु स्वत्राय से

स्रद्रायाम्बिद्राष्ट्री म्याविद्रायाम्बिद्रायाम्बिद्रायाम्बिद्राष्ट्री म्याविद्रायाम्बिद्रायाम्बिद्रायाम्बिद्रायाम्बिद्रायाम्बिद्रायाम्बिद्रायाम्बिद्रायाम्बिद्रायाम्बिद्रायाम्बिद्रायाम्बिद्रायाम्बिद्रायाम्बिद्रायाम्बिद्रायाम्बिद्रायाम्बद्र्यस्य

वायाने खराने ख्रमाया ।

यायाने विर्मे उपायी अभ्यत्या क्रियायार्वे द्रायाय्ये प्राया क्रियायार्वे द्रायाय्ये स्वायाय्ये व्यायाय्ये व्याय्ये व्यायाय्ये व्याय्ये व्यायय्ये व्याय्ये व्यायय्ये व्याय्ये व्यायय्ये व्यायय्ये व्यय्ये व्यायय्ये व्यायय्ये व्यायय्ये व्याय्ये व्यायय्ये व्याय्ये व्यय

खुरःश्मन्यायदेनःयात्राक्त्याः वित्यायार्वेनःश्चनः तुर्यक्तः यात्रेनः श्चितः व्याप्ति व्यापति व्याप्ति व्यापति व्याप

"""म्मिन्येर मार धेवा।

श्ची अप्तान्त्र स्त्र स

य'दे'सेद'सदे'सुरा

ख्र-दे-हे-क्ष्र-चुन-म-ख्रेन। इन-दे-हे-क्ष्र-चुन-म-खेन।

यदशः उत् : नुः शः वतः श्राः क्ष शः सदिः ने रः प्यतः श्राः क्ष शः सदिः स्याः क्ष शः सदिः स्थाः क्ष नः स्थाः क्ष नः स्थाः स्थाः

ने दिन स्थाय न विकासे हैं । ने दिन स्थाय न विकासे हैं ।

यद्या स्थानिकाले द्राप्त स्थानिकाले स्थानिकाले द्राप्त स्थानिकाले स्यानिकाले स्थानिकाले स्थानिकाले

ने स्थायाव्य प्राप्तर से वा । ने में माध्य स्था किन से से वा ।

ध्रुरः नेतेः नेतः त्याया वितः यः नेत्याया वितः यो स्त्रात्ते स्त्रात्ते स्त्रात्ते स्त्रात्ते स्त्रात्ते स्त्र चेतः प्रदाया प्रवेतः यो स्त्रात्ते स्वतः स्वतः प्रवेतः स्वतः स

नेशन् श्वरायानित् श्वराद्य राज्य वित्र स्थानित् । वित्य स्थानित् । वित्र स्थानित् । वित्र

ये दु निव भगवित में व से दु

বাষ্ট্র শাস্থ্য ব্যাহ্য করি শ্রুব ন্ত্রী ব নেই ব নি শাস লে বা ধ্যুমা

त्रःस्। क्वें.यरे.अअअअेन्:नु:ग्रम्अःडवःस्टःग्रीअःहेंग्रअःयवेःत्रयशःनेःयहेन्दिग्र्याश्रःयहे।

र्ट्स्मिशमाटायशः व्हारक्ष्राया । श्रुवः वेदःदेवे स्वरायाः विद्या

म्यान्य क्ष्र्य क्ष्र क्ष्य क्ष्र क्ष्य क्ष्र क्ष्र क्ष्र क्ष्र क्ष्र क्ष्य क्ष्र क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्र क्ष्य क्ष्र क्ष्य क

ने खुर वीश शुन सं से तबन सं दी

र्तिः र्वाः वी अः खुदः यः नहेवः वयः हैवा अः या देः हिंदः स्वदः स्वदः प्रयः

भे खेद प्रथायाय हिंद दें ले दा

स्रम्भे किन्या स्रोत्र त्राम्या स्त्र सम्देष्ट्र में स्राम्य में स्थ्य हिंग्य यर से रुट या कंद सं धेव र्वे वे वा

> रेग्रथं यादायीय स्थात वहीत या। ने ने नि नि मार्ग में नि ।

दे के अरुवा देवा अर्था पाट वी अरुपट केंद्र अर वहीं वर्ध देवा अर यनेति। अदशःकुरुषायायादिद्वारीयार्थित। अदशःकुरुषायादिशाग्रदा ने के त्रश्रास्त्र अर्थे प्रदेश प्राधी प्रवास प्रमा अर्था सुर्था परि हैं दिर क्चें नने से समासे न क्षुन वर्ने न शें कें वा ने ख़र किन से सिन्स শ্রুব'মব'ষ্ট্রীস্

ব্যাধ্যমানা
ক্ষানেই মেই ব্যধ্যমান্ত্রী মান্ত্রবাদারী বেছদ্ মান্ত্রী

र्तिः र्वा वी शः र्त्तिः वरे से सस्य से दः ह्या दर्ति र सर्वे स्या श्री सः हैंग्रयायाने प्यराह्मयाय हीं राया विंत्रयार्थे मायर हा नायी दायया वा विदाया यःनश्रूदःभःधेदःदेःवेःदा

> स्र-ते सुन हो न नाम ना नी या। ब्रास्ट्रायान्यम् सुराहेन्यस्य प्राप्त

न्नरः में प्रश्नुरः निषः श्रुनः ने 'न्ना। नेवे 'नेव' कुषः भेषायः कुषः धेव।।

स्रवी स्राम्भित्त्वपान् विवादि स्याप्यस्य श्रिम्यस्य स्रिम्याय स्रिम्यस्य स्

यायाने। वयसाययायान्त्रीयायम्प्रत्यायम्भन्। द्वायम् स्थायम् स्यायम् स्थायम् स्थायम् स्थायम् स्थायम् स्थायम् स्थायम् स्थायम्यम्

ग्राट्याय वर्षेयाय इसा कर उद्या

श्चित्रः श्चित्रः स्था स्था स्था । देव दे दे दे त्या स्था तश्चित्रः श्चित्रः श्चितः श्चित्रः श्चित्रः श्चित्रः श्चित्रः श्चित्रः श्चित्रः श्चित्रः

ह्नाशः के शामित्रशादविषामा से नाम मानु नामा के प्राप्त के प्राप्त

বাধ্যুম্র:মা

श्चेश्वर्यस्थायत्ते प्रत्याचा । ने किन ने किन स्थेन प्रहेगाना ।

श्चेशःत्रदेश्वश्रयः पदे द्वरः दयः त्याः वीशः यात्रदः क्षेत्राशः परः द्याः

ये दुः नवि संग्वित र्ने तः ये दु।

निशः त्वर्मा ने छेन भेव प्रते भूतः भूतः वर्षे मा तुर्मा पर्ने न वर्षे न वर्षे

न् भूतः परः ग्रुः नदेः देवः यः नह्माश्रः यः न्यामाः यः यहिश

नश्चनः चुःयः नह्रम्याः यः न्यामाः यः न्दः।

वर्त्रेवारायायम्ग्राया

न्यायाः सर्दे । न्दः स्रो

नश्चनः ग्रुः वान्त्रम्यायाः यानाः यो

यान्य ग्रह्म अप्तान्य स्वान्य स्वान्य

र्थित् ग्राट प्रदेश प्रत्येय से प्रत्येय । विषय से प्रत्येय । विषय से प्रत्येय से प्रत्य से प्रत्येय से प्रत्येय से प्रत्येय से प्रत्येय से प्रत्येय से

र्म्भ निर्मा स्वास्त्र स्

स्टःनविवःद्रःवे त्य्यशः त्यश्। । श्रूटःनः सर्वेदःनः सेदः हेदः हगशः।

हवाशादे 'ते श्रुवा' श्री 'त्राचा स्वाशाये प्राण्य स्वाशाये स्वाशाये प्राण्य स्वाशाये स्वाश्वी स्वाशाये स्वाशाये स्वाशाये स्वाशाये स्वाशाये स्वाशाये स्वाश्वी स्वाशाये स्वाशाये स्वाशाये स्वाश्वी स्वाशाये स्वाशाये स्वाशाये स्वाशाये स्वाश्वी स्वाशाये स्वाश्वी स्वाशाये स्वाश्वी स्वाश्वी स्वाश्वी स्वाशाये स्वाश्वी स्

येतु निवेश्याम्बद देव येतु

वज्ञेषायाया नहमाराया नमाना यां ही।

यव्यान् निर्देश्यायात्र्यात्रात्रात्र्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र

ह्रम्थाक्ष्याची स्वीयाक्ष्याची याव्याचाची व्यव्याचाची व्यव्याच्याच्याची व्यव्याचाची व्यव्याचीची व्यव्याचीची व्यव्याचचीची व्यव्याचीचीचीचचित्यचचीचित्यचचचचीचित्यचचचचचचचित्यचचचचचचचचचचचचचचचच

বাইশ্বনা

ररःवी वयादकुराया सर्हर या साञ्चराया है।

श्चर्यात्राच्छेत्रव्यात्रास्त्रव्यात्रास्त्रव्यात्रास्त्रव्यात्रास्त्रव्यात्रास्त्रव्यात्रास्त्रव्यात्रास्त्रव वाव्याते वाव्यास्त्रवात्रास्त्रवात्रास्त्रवात्रास्त्रवात्रास्त्रवात्रास्त्रवात्रास्त्रवात्रास्त्रवात्रास्त्रव वया भे पर्देन परे के यावव नय पर न सून पर है के ये वे व

> याड्याख्यस्याक्ष्यस्याक्ष्यः। । वयः नःश्चनः याद्यस्याक्षः याद्यस्याक्ष्यः याद्यस्याक्ष्यः याद्यस्याक्ष्यः याद्यस्याक्ष्यः याद्यस्याक्षयः याद्यस्य

ह्वाश्राची न्यापान विवाधी श्राप्त न्यापान न्य

वियानु धित सदि रहुं या ग्री आदे गाहि आदने या नदि श्री मा

ह्वाश्रायः र्रेशायश्चात्र स्वाश्चात्र स्वाश्चात्य स्वाश्चात्र स्वाश्य स्वाश्चात्र स्वाश्चात्य स्वाश्चात्र स्वाश्य

वयानायमेन मित्रा नियानी क्षेत्र के स्वाप्त मित्र के स्वाप्त क

र्दे'त्र न'यर'में श्चे 'रे'यर'क'र्र्यार्ट्र'नठम'र्याये प्रमानये ' द्रम'नठवःक्ष्र्र'स्रम्भास्य म्याय्यान्य 'त्र्युर'र्दे 'बे'त्र

नःयरःगोःश्चे रुयः र्हेन्यावितःग्रो बुरः वःने ःक्ष्ररः धेवः वः परः। हो ः व्रयाः प्रयान्त्रम्यायावे ः ह्रमाः नुर्देशः श्चे शुक्ते अः उवः नुःम्। बुरः प्रतः हाः नः धेवः प्रयाः हेशमासेन्द्री।

यश्चरात्युराधरात्योषात्व। कातुः सान्दान्य सान

देश'यहम्मश्रायदे'यायदामी'श्चे क्रिंश'उद्या देवे'र्देर'क्ष'प्रप्र' यडश'यर'वया देवे'र्देर'मश्रय'य'त्'र्श्य'य'त्श'मिडेम्'ह्र'वश्चेय'यवे' श्चेर्म श्चिर'प्र'मश्राञ्चरश'र्शे'बे'द्या

क्रिंत्रक्रन्थिद्द्रिन्य्यत्ये। स्वायित्विन्य्यः व्यायित्व स्वायः विक्रायः विक्रायः

श्रुः सायाप्य स्वर्धः स्वर्धः । स्टः क्रुन्तः व्याप्य स्वर्धः विष्ठेः न्ते । स्टः क्रुन्तः विष्ठः । स्वर्धः स्वरं स्व

र्नेव विशः श्रें अ मदे न्वें अ मदी

र्नेन श्रें या ने ने ने भुग्ना प्रा

हिंगायशर्भे प्रतिमाश्चरमा हिंदा ख्वा। हमाश्चर्ने द्रिया स्मास्त्र स्मार्थित हो। देव स्थर्भ देव देव सुन हो र से ।

ण्वतः र्नेतः हे अन्वणः गो अळं तः छे न पळ न प्रतः अन्य अः शुः र्नेतः अन्य प्रः हें तः हे न हे अन्य प्रः हें न हे ते प्रतः हें न हे ते प्रतः हें न हे न प्रतः हें न हो न प्रतः हें न हो न प्रतः हें न प्रतः हें न प्रतः हो अन्य प्रतः हो न प्रतः हो प्रतः हो न प्रतः

स्र-तिन्द्रम्मः स्र्याम् स्र स्र त्याम् स्र स्र त्याम् स्र त्याम स्य

ह्मान्द्रस्य न्या होत्रसंदी।

पर्देन'म'र्डस'न्ह्स्य प्रत्नेय न्हा । न्हें स'यस'याव्य न्हा से स्थित हो ना नहमास'म'न्या वे 'यहाय'म'धेवा ।

स्टायळव् द्रान्य क्रुत्य या ग्राह्म या स्टायळव् द्राप्त क्रुत्य या क्रित्य या क्रुत्य या क्रित्य य

वाश्वा मुद्देश्वर्थं श्रायंत्र प्रमेश्वर्था

क्ष्याम्बर्धाम्बर्धाम्बर्धाम्बर्धाम्बर्धाम्बर्धाम्बर्धाम्बर्धाम्बर्धाम्बर्धाम्बर्धाम्बर्धाम्बर्धाम्बर्धाम्बर्धाम्बर्धाम्बर्धाम्बर्धाम्बर्धामित्रं स्वर्धामित्रं स्वर्यम्यस्य

न्नाः हुः भ्रेः सुरः नरः क्रूँ वः यः ध्येवः वैष्ष

र्देव श्री अर्देव हें ना अर्धे र र्देव त्या। र्धे ना अर्दर ना हव रिष्टें ना अर्थे हिंद सु अर्थे दा।

र्नेश्वरं ने प्रयास्त्रः केत्रः यथा। श्रुवः यम् स्टेत्यमः यावस्यः यथित।।

वीवाने नवार्यस्यो में केंद्रायश्राञ्चा से ह्वाय्यस्ञुवायस्त्रेत्यस् वाव्यायस्वायायस्य विकासम्बन्धा से हिन्दार्यस्य

के हो। हिंग्या के पान होता है निया के पान होता है निया के पान होता होता है निया के पान है

वर्त्रेषायासे दाये वित्रे से स्वीत्रा

यदेव.हे। यहव.क्ष्मश्राचे.क्ष्मां क्ष्मां क्ष्मां स्टामें दें हिंदाया यह क्ष्मां स्टामें क्ष्मां स्टामें क्ष्मां स्टामें स्टाम

दिन्। क्रिन्दिन्धिमाश्चानुदार्ह्यदास्य निन्दा

र्श्वन्य स्थ्रित्य स्थित्य स्थिति स्थिति स्थित्य स्थिति स्थिति स्थिति स्य स्थिति स्य स्थिति स्थिति स्थिति स्या स्थिति स्थिति स्थिति स्य स्थिति स्थिति स्थिति स्या

श्रुशःह्रगः ठेशः संदेः श्रुंग्रशः श्रुः श्रुः निः देशे क्रिंशः ठ्वा श्रुः श्रेः ह्रगः शः श्रुवः ग्रेटः प्राप्तः श्रुवः ग्रेटः प्राप्तः श्रुवः ग्रेटः प्राप्तः श्रुवः ग्रेटः ग्रुवः श्रुवः ग्रेटः ग्रेटः श्रुवः ग्रेटः ग्रे

भुःधिरः दर्भाशःश्चरा हो दः भेव। । भुःधिरः दर्भाशःश्चरा हो दः भेव। । য়ु'য়'ৼग'য়'द्र्स्स'য়ु'য়ৢয়'য়ৢৢद'য়য়'ঢ়े। য়ৢॕद'য়য়ৄँद'য়ৼ'। दे'য়য়'য়े' য়ৢয়'ৼग'য়ৢदे'ৼয়'য়'য়ৢয়'য়ৢৢয়'য়ৢৢद'য়য়'য়ৢৢয় য়ৢয়'য়'য়

श्चुन चेत्र मुश्राम प्येत् सेत् से सक्दरशन दी

नशुनःसरःग्रःनःमहेंद्रःसःधेश। नशुनःसंभेगःग्रहःनुसःसंसेद्र।।

> गहत्रक्षंग्रयम् न्यात्त्र स्त्र हिन्या । व्रथायासेन्यात्त्र स्त्र स्त्र हिन्या

दे खायदिना ह्या शक्षिया न कुन्त्र शक्षुन होन् स्परन्या हु वर्देन स

न्धन् भे नर्जेन्ते न्त्राम्य न्त्रिं भ्राम्य स्वाप्त स्वाप्त

र्द्रत्र स्वायाह्म स्वायाहम स्वयाहम स्वायाहम स्वायाहम स्वायाहम स्वायाहम स्वयाहम स्वयाहम

भ्रेत्रा होत्या द्वित्राया स्वित्राया स्वत्राया स्वित्राया स्वित्राया स्वत्राया स्वत्राय स्वत्राया स्वत्राय स्वत्राय

र्द्धयाम्बुर्याः भूरामुर्याः वेदायहेर्याः प्राप्तः स्वितः प्राप्तः विद्याः विद्याः प्राप्तः विद्याः प्राप्तः विद्याः प्राप्तः विद्याः प्राप्तः विद्याः विद्

र्दे त्र ह्या शक्षेत्र ग्रा ग्रा ह्या श्रा श्री त्र श्री त्री त्र श्री त्र

येषु निने मणान्तर में तर्येषु

र्देन धुँग्राश्चेग्राग्यम्धुँग्राश्चेग्राश्चेन्। अवसःश्चुनः चेन्। अर्वेन्। अर्वेन्।

यायाने। स्राक्षयायास्यायाने विष्यायास्यायाने विष्यायास्य प्राप्त स्राप्त स्र स्राप्त स्र स्राप्त स्राप्त स्र स्राप्त स्र स्राप्त स्र स्राप्त स्र स्र स्र स्र स्र स्रा

र्श्वित्रश्चित्रः स्वतः ध्यापान् । त्युरः नः र्ह्याः नश्चित्रः स्वतः ध्यापानः । स्वतः स्वतः स्वतः ध्यापानः । स्वतः स्वत

र्वे त्र ख्रिया नाश्चार्य प्राप्त स्त्र प्राप्त स्त्र प्राप्त स्त्र स्त

वायाने। द्वायानास्त्रसम्बन्धितान्ते त्रायान्यसम्बन्धितान्त्रसम्

वेद्रायशर्धिम्यानकुद्राद्यासुन वेद्राधिदार्दे विद्या

द्यानाशुक्षान्त्राची योग्यानान्त्राक्ष्याक्ष्यान्त्राची श्रीत्राच्यात्राक्ष्याः व्यान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्याची स्थान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्याची स्थान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्याची स्थान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्त्राची स्थान्त्

यः इसः नड्न सेन्यम् वयः वे ले व्या

द्या श्रे.श्रेम्प्रक्ष्याः स्वायः स्वयः स्वय

ये दु निव भगवित में व से दु

ने अपन म न जान के अपन के न जान के अपन के न

বাধ্যুম'শ্বা

इट्रिय:श्रुट्राचायायात्रिया

सुर-दर-विवाय-न-श्रूर-न-दी

र्श्वेत्र प्रति स्वित्र स्वत्य स्वित्र स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वित्र स्वत्य स्वत

यान्त्रः क्षेयाशः रेत् स्त्रीः खुव्यः हेत् स्त्री । तुश्रः सेतः ते सेतः स्त्रा । इश्चान्याः चार्त्रः त्रित् श्रुवाः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विषयः विषयः

र्वे निक्षण श्रमि देन हैं निक्ष निक्य निक्ष निक

रेग्रामःन्द्रः त्यायः नःश्रुदः नः यग्रम्

म्बिन् स्त्री स्त्रिया स्त्रीय स्त्री

द्रम्थः क्षेत्राः श्रुतः द्रमाः मी प्यतः त्यमाः प्यतः स्त्रीः श्रुः सळ्तः द्रमानाः पः द्री

यात्राके ने त्यत्र कुषा वि त्यह्या श्री र त्या

ये दुःचनिः भागन्त्र में तुः ये दु।

यथानिव क्ष्मां भी क्ष्मां ने त्यवर न्यून ने क्षून ने क्ष्मां में विषय क्षमां में विषय क्षम

र्वेत् नश्चुनः ग्रुप्तः द्रियायायाय स्वाधायाय स्वाधाय स्वाधायाय स्वाधाय स्वाधायाय स्वाधायाय स्वाधाय स्वधाय स्वधाय स्वाधाय स्वाधाय स्वधा

दे अर्द्धन्यः द्विम् त्वः श्वनः यो न्याः यो न्य

म् अःशःह्याःयदःश्च्रुत्राः । स्वाःयदेःश्चरः । स्वाःयदेः श्वःयः । स्वाःयदेः श्वःयः । स्वाःयदेः श्वःयः । स्वाःयदेः श्वःयः । स्वःयः । सःयःयः । सःयःयःयः । सःयःयः । सःयः

र्थित्रम्भः स्त्री विवास क्षेत्रा स्त्री प्रत्या निवास क्ष्या निवास क्षय निवास क्ष्या निवास क्ष

क्याम्युस्यन्य । व्याप्य स्था । क्ष्याम्युस्य प्याप्य स्था ।

दरमी 'पद 'यमा नश्चुन चु श्चुन पदे चु रा द्वारा पर पार्थ स्वारा प्रस्ता में स्वारा पर प्रस्ता स्वारा स्वारा

ने त्यान्त्रस्य मञ्जीन स्वा । ने त्रिन क्षेत्रात्य प्यम् न्या ग्याम्य

कुंवानाशुंशाने वा प्याप्य प्राप्त क्षेत्र प्राप्त कुंवा वा की विश्व किंदि के प्राप्त किंदी किंदि किंदि

 यायाने यामायम्बराने सामा स्रोता स्रोता स्रोता यान्त्र स्ट्रीया सामा स्रोता स्र

वुरुष्यः सुन्द्रम् प्रम्यः विष्ट्रम् ।

बुरायाय्द्रमायदेख्यायदेख्यायदेश्वर्मा अत्यक्ष्यायद्वर्मायदेश्वर्मा व स्वर्मायदेश्वर्म

मुद्रग्न प्रमाणिक त्यमा स्ट्राप्त स्था ने स्थ

ह्यनः श्रें व रुव त्याने से न ग्रामा । अपने प्रवास्त्र व स्वास्त्र व स्वास्त्

ह्यास्याहें न्याकें त्राहें त

न्वन् चेत्रायि। यात्रायि। वेश्वायाय्यम् चेत्रायाः वेश्वायाः वेश्वायाः वेश्वायाः वेश्वायाः वेश्वायाः वेश्वायाः विश्वायाः विश्वायः व

ह्मनः भूष्यः व्यव्या स्टब्स्या स्टब्स्यः स्टब्यः स्टब्स्यः स्टब्स

यदेर्यम् वित्राचार्यं वित्राचीर्यं वित्राचेत्रं वित्राचेत्रं वित्राचेत्रं वित्राचेत्रं वित्राचेत्रं वित्राचेत्रं वित्राचेत्रं वित्राचे

यद्या न्या न्या न्या क्ष्या क

ये दुःचने संग्नन्द में दु

र्श्वन्य स्वर्धन स्वर्य स्वर्य स्वर्यन स्वर्य स्वर्य स्वर्धन स्वर्धन स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्

र्द्धयानाश्चिम् स्वामायाना स्वामाया स्वामायाय स्वामायाय स्वामायाय स्वामायाय स्वामायाय स्वामायाय स्वामायाय स्वामायाय स्वामायाय स्

महिरामा रूटानी हुँ नाया ग्री सळव हिट्टाया सळ्ट्र या स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

सुवाशक्ष्याचित्रः र्त्तावाश्चरः विश्वा स्वाप्ता स्वाप्ता

मञ्जून मुन्दिन भान्य महस्य प्रमा । श्रुन भारती मुन्दिन स्थित स्थित ।

श्चन ग्रेन नन्त्र गुरुष हिन् ग्रेय।

गान्त केंग्रा शुर श्रूट श्रय सेत भेरा

ने हिन्न निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र स्था निर्मे निर्मा क्षेत्र स्था निर्मे स्था निर्मे स्था निर्मे स्था निर्मे स्था निर्मे स्था निर्मे स्

हिन्यम् सेन्यम् निह्न स्वर्धाः सेन्य स्वर्धः सेन्य स्वर्धः सेन्य स्वर्धः सेन्य स्वर्धः सेन्य स्वर्धः सेन्य स्व

गवन र भुन गुन हिंद र र गुन ।

न्यानरदानरादी प्रयानराद्युम्।

दे त्यश्चाव्यत् द्वायायाया हित्या ह्वायायाय हित्या हित्

देन्तादी देन्यावित्या स्वाकाराज्य राज्याका हिन्या के स्वाकाराज्य राज्य राज्य

यात्रात्र यात्य प्यात्र क्षेत्र स्थित । यात्र त्यात्य प्यात्र क्षेत्र स्थित ।

येषु निने मणान्तर में तर्थेषु

नायाने सुँगाया स्वीता सुनाद्या नाया नाया ने स्वीता स्वात्या स्वात्याय स्वात्याय स्वात्या स्वात्या स्वात्या स्व

रे'ते'नश्चन'ग्रुन

ने दे न भून न स्व न स्व

याशुस्रामा द्योयाचेन्यावन्यीः हेन्यन द्योयासेन्न्यम्

रेग्राश्चितः वर्षेया होत्। वर्षेया त्या वरवर वे श्चूव होता धेव हो।

स्न-स्न- वडराश्याम्य नर्गेन्य प्रम्य । यम् ने प्रमेय स्थित स्वित्य स्थित स्वित्य स्थित स्

यर्ने स्ट्रर ने वे स्वायाय हैन। । या धीत के लिया निवाय निवाय के लिया निवाय निवाय के लिया निवाय निव

देः भराने विद्या क्षेत्र क्षे

वर्दे ते त्यव साधिव हो। श्रे सश्च त्र सदे श्विम राष्ट्र त्याया या से द

मेतु निवासमान्य में वासे हु।

मदे हिन्यम् भी अदे ने यश्यान्त्र केंग्राश्रीं ग्रायम् भे तु शर्भे विश्वास वर्षायः र् निष्ठि । गहेशःय।

नर्हेर्न् मुर्देव्सी स्टानबिव वापिक्षा

न्त्रायानमून नश्चन जुने रूट निवेद रूट । न्देश नमून गहन कैंग्रथा शुःस्यान् शुःम्बन्धार्थे । ५८:स्र्

भुग्रामानम्ब्राम्ब्रुमानुदे स्टाम्बेदायाम्ब्रुम्

र्रासुन्या अः शुः द्यान्य उदे : यळ दः हे दः न १९ : य শ্ৰব্যগ্ৰি'ব্য नडवे'सळंत'हेर'र्गाग'रा गल्तु'ग्री'र्स'नडव'हूर'सूर'गी'र्से'र्गाग' यर्दि ।

<u>र्रास्य</u> क्ष्यायाः क्षेत्र क्ष्यायाः कष्यायाः व्यायाः व्यायाः व्यायाः व्यायाः व्

यर्देरः नभूमा कुषः नभूरः दे।। 55.51 सर्देर नमूत या विश्व

कैंगार्ने व प्रमा समय प्रमा ।

८८:स्र्

ळेगर्नेवदी

द्यानहते सळ्त हिन् श्रुन प्राची प्यत त्यम हिन श्रुन प्राची हिन श्रुन प्राची प्यत त्यम हिन श्रुन प्राची प्यत त्यम हिन श्रुन प्राची प्रा

য়ৢन'नहेंन्हेंग्रथ'यंदे'नेंन्'उन्हेन्।। धेन'यर सेंन्यायायेन्छेन्'यळन्हेन्।।

गहरुक्षिग्रार्थे स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्यान स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान

क्षेत्राचीर्यान्त्रम्याक्षेत्रपदित्।।

न्यानरित्या स्वाप्त स

र्षि'दिते के मास्य देश का मान्य प्रति का मान्य का मान्य प्रति का मान्य प्रति का मान्य प्रति का मान्य प्रति का मान्य का मान्य प्रति का मान्य प्रति का मान्य का मान्य प्रति का मान्य का

वर्तेर्यस्वरंहित्यीः बुर्यत्विः यश्यां श्रेंश्यां देवि श्रेंयाश्यां अस्तः हित्यस्वरं पाविः पादः यः वुपाशः दुर्याः यहितः प्रयः पविदः पाविदः यः स्वरः स्वरः स्वरः प्रयः प्रवेदः यस्यः प्रवेदः यस्यः प्रवेदः यस्यः प्रवेदः प्रवे নম'ম'র্মুম'র্মা

देशक् वेवा हिष्णदा नश्वयान वर्षे दिन्द श्वा श्वा । स्ट विश्व क्षेत्र हिन् विश्व व्या स्था वर्षे व्या वर्षे वर्

स्रवतः न्युनः यः दे।

सळंत्रिन्ध्यत्यमाश्चात्र्यास्यायते। नेपास्यस्य स्वास्य स्वास्

दे त्यः क्रें यः त्र यः व्य व्य यः व्य वः व्य यः व्य व्य यः व्यः

में या श्री या स्थानित स्थानि

ये दुःचनिः सःग्नन्दः देनः ये दु।

अःग्रुनःमःनञ्जूनःग्रुःधेव्यव्यस्त्रुअःमदेःर्देग्रयःमःश्रृंग्।मदेःकेट्रःतुःकेन्। स्र् र्भू अःश्र्।

द्वानश्रुश्वा नश्चुनानुदेर्न्स्तिं वि क्वियानास्तिं वश्वादेत् केटाळ्ट्रस्थानस्यान्यात्वास्यात्वेस्तान्ते स्वान्तिः विद्यात्वे स्वान्तिः स्वान्ति

नश्चन ग्रुव अळव हेन् ग्री श्वर त्र न्यून ग्रुव व्याप्त विष्ठ श्चित्र वि

दे के क्याय गुक् फु से संस्ट्रिस्य है। ह्याय प्याद मानी सामुक्य संदे

चीनः वी क्षेत्रः निश्च स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स

ध्रैरःक्रॅलःक्रेंद्रःक्षुवःक्रेर्णाः हा विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष

नेश्वान्य विद्यान्य विद्य

ये दुःचने संग्नन्द में दु

বাইশ্বা

ক্রুঝ'নপ্র'অ'নাধ্যুমা

पर्ने प्राच्च अप्य विद्या स्ट हिन् कु अप्य विद्या अप्य अप्य य कु अप्य विद्या व

वर्रे र म कु अ च ल्र र म ख च हि अ

ल्ट्रम् वार्ड्स् की प्रत्या म्हण वार्ष्ण वार्ष वार्ष्ण वार्ष्ण वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष्ण वार्ष वार्ष्ण वार्ष वार्

र्मेषानित्रे वे पर्ने प्रमुवा ग्रुमान्स्रवासा प्रमा दे स्रोवाव का वर्षे ।

८८:स्र्

र्केषानवे ले पर्ने न न मुन जुर न मून माने।

सन्हेंन्यणद्वेन्यस्वित्।

व्यन्तरे र्से वार्य ने न्यून ग्रून ग्री नरे के न जित्र मरे से से

न्धेर्यं म्यान्य विवासी अवार्य म्यान्य क्ष्यं म्यान्य विवासी स्थान्य स्थान्य

नन्गामी देव निवेष नश्चन श्चर पर्देन।।

नन्नामी र्नेत् ग्रेन् भारमा तुः स्था श्रूसा ग्राम् न श्रुमा ग्राम्य स्था । विष्

दे त्यायदे राजार द्वा श्रेना ने श्रेना श्राचित्र श्रेना श

देशन्त्राह्म । देवे के स्वत्राह्म । के स्वाह्म स्वत्राह्म । के स्वाह्म स्वत्राह्म । देवे के स्वत्राह्म । देवे के स्वत्राह्म । देवे के स्वत्राह्म । के स्वत्राह्म के स्वत्राह्म । देवे के स्वत्राह्म । देवे के स्वत्राह्म । के स्वत्राह्म के स्वत्राह्म । देवे के स्वत्राहम । देवे के

येतु निन्मणान्त निन्येतु

त्रेश्व श्रेवाची श्रेवाशावेद्रश्रेवश्व विश्व वि

देन्श्रमणेवन्त्रभ्राभेन्त्रम्भ्रम्यम्भ्रवन्तिः कें प्यता केंद्रम्यवेश्वर्तिः स्वर्तिः स्वर्त

र्ने न्या स्था निका के ने ने निका स्था के ने स्था के न

यायाने में यानि विष्ट्रित्यो स्टिन्यो स्वायान यायाने मानि विष्ट्रित्यो प्रायान स्वायान यायाने स्वायान स्वयान स्

ये दु 'चले 'स' मान्त 'में तु ।

यवायःहवायः धेव के वायः देव द्वेव दे ते वा हु श्वेव व्यायः हवायः हवायः द्वायः हवायः हवायः द्वे के विवायः देव द्वे विवायः देव विवायः हवायः विवायः वि

देवे के अवश्व अक्षेत्र प्रमाप्ता । के अ उत्र विद्यास्य अवस्य में द्या

र्वेग्रान्द्रन्ते ने ने श्रुते श्रुत्याया निर्म्याया स्वाया स्वाया निर्माय के या के या के स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया निर्माय के या या स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वय

तर्देन्याधेन्ति। त्यायाह्यायायानेन्द्रीः नान्ते श्रीः यान्ति श्रीः वित्रायायाः क्ष्रियाः याद्रीः केन्द्रायाः के स्वायाः के स्वायाः के स्वायाः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वय

ह्वाश्राणदाद्वात्यादे स्वराधे नात्याद्वी श्रामाणे द्वाद्वी साम्याद्वी साम्या

ये दुःचवे संग्वव दें दाये द्य

त्रु अःभिरः न अग्राश्रासः के अग्राश्या अग्राश्या अग्राहें दा न जित्रा न जि

ने निम्हेश्यक्तिं सेन् मण्डित्। क्रिंत्या

ने संगुन हे सन्निन्न विद्वा

क्रन्सदे द्वरादम्याम् में क्रिया ये दुर्ग्न रायदे द्वरायन् न्यराययायायाय ये न्य

सूर्यायहें न्यायित हैं विश्वसूर्यायि हैं न्या सूर्या में न्या है सा वर्षे स्वाप्त हैं साम है साम हैं साम है साम है साम है साम है साम है साम हैं साम है सा

नेरने पर्देन या महिन हो न प्येन।

ह्मश्रान्य हैं रहें के श्राप्त के त्ये के त्ये में हिंग श्राप्त के त्ये त्ये के त्ये के त्ये के त्ये

ने सेव व ५ उट मय न दी

ग्याने ग्राम्या हें प्राप्त । ।
श्रुप्ता श्रुप्त श्रु

यायाने। यन् अपिताययायाया के साउत् किंत् के अपिताययायाया के स्वाय के स्वय के स्वाय क

श्चात्र्य प्रमुक्ष भेत्र प्रमुक्ष ।

ले'यर्देन'यथ'गलन्द्रमुश्रिशक्षिय'र्यक्षुय'र्य विन्देन'र्य म्यूच्य प्रमानिन्द्रम्'र्य स्थानिन्द्रम्'र्य स्थानिन्द्रम् स्थानिन्द्रम्य स्थानिन्द्रम् स्यानिन्द्रम् स्थानिन्द्रम् स्थानिन्य

र्नेन ख़न रु से पर्ने र र्ने ॥

ची ने त्युन खेन के ने त्या के ने न्यून प्राप्त के ने स्थान के स्थान के स्थान के ने स्थान के ने स्थान के ने स्थान के ने स्थान के स्थ

নাইশ্বা

इस्रानडर्गी:न्वेंसामानाविश्

येतु निवे भगवित में तायेतु

न्द्रमी ब्रिक्ष मिन्न क्षेत्र क्षेत्र

क्तरम्बर्ग्धे र्याः भूरः भूरः तृ त्र श्रुवः या र्याः सर्वे रशाः श्रुवः

55:39

र्वे॥

कुर यत् ग्रे क्रें र न क्रर सूर र न सुन पति

यदेशके प्रतिश्वाचित्र । प्रतिश्वचित्र । प्रतिश्वच

त्र्युर्रात्रभा श्रुरात्रभा श्रूरभा श्रुरात्रभा श्रूरभा श्रूर्यात्रभा श्रूरभा श्रूरभा श्रुरात्रभा श्रूर्यात्रभा श्रूरभा श्रूरभा श्रूर्यात्रभा श्रूर्यात्रभा श्रूरभा श्रूर्यात्रभा श्रूरभा श्रूरभा

नशुनायम् जुःनःश्चे मायर्गि ।

नुस्रान्दे खुर्स्य सेस्रस्य स्था विवा प्रदे खुर्स्य पादि प्राप्त प्रस्त प्रस्त

ये दुःचने संग्नन्तर्भे ताये दु।

चात्राहे। श्वाकाश्चिका वित्र दिन्त हो स्वाकाश्चिका क्षेत्र हो स्वाकाश्चिका क्षेत्र हो स्वाकाश्चिक्त क्षेत्र हो स्वाकाश्चिक्त क्षेत्र हो स्वाकाश्चिक्त हो स्वाक्त हो स्वाकाश्चिक्त हो स्वाकाश्चिक

नर्हेन् ग्रुशःश्रृंदायान्हेन् ह्रस्यशःश्री।

वि'यर्देर्'ग्रे'नर्हेर्'ग्रुशः हेर्र्र्यः क्षेत्रां क्षेत्र क्षेत्रां क्षेत

रटासर्द्धरश्रामाञ्चरामानी

क्र्यान्त्रत्व्यायत्त्रः सक्रुत्रः भेत्। । क्रियान्यत्वेयात्यत्तः सक्रुत्रः भेत्। ।

ष्ट्रनाम्यन्त्रम्यत्वर्षः स्ट्रन्यः स्ट्रेन्यः स्ट्रन्यः स्ट्रेन्यः स्ट्रिन्यः स्ट्रेन्यः स्ट्रिन्यः स्ट्रेन्यः स्ट्रेन्

त्रुः अ'धेत्'रम् शः श्रुः यहे ग्रायायरः नश्चुन त्रुः अ'धेत्'रमरः अर्द्धर अ'र्शे 'हे 'त्र

अ'थेव'वहेग्।य'श्चर'र्येय'र्थश।

त्रुम्यार्क्षम्य व्या श्रुम्यायदेष्य वित्यम्य श्रुम्य वित्यम्य श्रुम्य वित्यम्य श्रुम्य वित्यम्य श्रुम्य वित्य वित्यम्य श्रुम्य वित्य वित

नुस्रम्बर्देन'यान्वर'र्धेन'शुर्द्रा।

ने निले त द द ते प्राप्त के स्वार्थ के स्वर

शेःह्याञ्चाधोः शितः समः उत्। । हेशः दर्शे से त्व

भ्रेष्ट्रम्यायिःश्चेष्ट्रेष्ट्रम्य स्वर्ष्यात्रम्य स्वर्षः स्वरं स्

नर्ज्ञेयान्धेर ।

श्चार्यात्र स्वाप्त स

गावन ध्रव इस गाउँ न इस स गाउँ न ।

कुंवा इसामा माहेश व्याप्त माने स

शे.र्ज्यत्म् क्र्यं स्थान्य स्थान्य । । इयात्र्याः स्थान्य स्थान्य स्थान्य ।

देशः व शेःह्याः पः क्रेंशः ठव श्वः यशः याव्यः द्राः हेशः पर्योः शेदः प्रमः प्रमः व्याः स्याः याद्यः स्याः याद्यः स्याः स्याः श्वे स्याः याद्यः स्याः स्याः श्वे स्याः स्याः श्वे स्याः स्यः स्याः स्य

त्रेश्ची प्रश्ची प्रमास्त्र व्याप्ते व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व

हैशायमें सेनामन स्वास्त्री ।

ये दु निव भगवित में व से दु

देशन्त केंश्रान्त केंश्रान केंश्रान्त केंश्रान्त केंश्रान्त केंश्रान्त केंश्रान्त केंश्रान केंश्रान केंश्रान्त केंश्रान केंश

यहिरान्। भेरदेर्न्यते स्वान्धः भेर्षे देवानाव्य नग्नान्य स्वर्त्त्यते नश्चुनः श्वः स्वर्ति स्वरः स्वर्ति स्वरः विम्यान्यः वि

> यदी श्राची रहें स्था उत्राचित्र प्राची श्रा । के स्था प्राची के स्था उत्राचित्र प्राची श्रा । वर्षी या प्राची के स्था प्राची स्था ।

यर्न्न्याश्चें स्वायत्वे स्वावे स्वायत्वे स्वयत्वे स्वयत्वे स्वयत्वे स्वयत्वे स्वयत्वे स्वयत्वयत्वे स्वयत

क्रॅश उत्र ने भूर शे न शुन ही र।

क्रिंश उदायायादी क्रिंग्यायाद्या ।

त्रुम्य के मान्य के

स्ति हो हो हो नियाना स्था है स्वाप्ति हो स्वाप्ति हो

ये दुःचने संग्नन्द में दु

र्रे विश्वाशुर्श्वर्शे ।

ररःहेरःकुशानन्दायाम्युम

न्देशंन्दा वरः ग्रुटः क्षेषाः अत् ग्रीः नेवित्रं नित्रं नित्तं नित्रं नित्तं नित्तं नित्तं नित्तं नित्तं नित्तं नित्तं न

<u> इर्</u>देश यः ग्राशुस्रा

न्वें यात्रायर्दे । क्यायराय विष्याया सें व्याया सें व्याया सें व्याया सें व्याया सें व्याया सें व्याया सें व्य

८८:स्र्

न्वें अप्यासर्हेर् नश्रूवादी

गुदायमान्त्रामु अस्तु मुजामा ग्री सक्द हे दायक दाना वा

र्हेश उद या हे या या या सूत्र यह शाय शा । र्हेश इस शार्त प्राप्त स्थाय विया ग्राप्ता । यह या छेट पर्दे हा साम सूत्र शा । यह या छेट ग्री हो सु सु शा श्री ।

यद्मान्नेद्र-श्रेश्च श्चेश्च श्वर्या वर्षे या स्वर्या वर्षे श्वर्या वर्षे या स्वर्या वर्षे या स्वर्था स्वर्या वर्षे या स्वर्या वर्षे या स्वर्या स्वर्था स्वर्ये स्वर्था स्वर्ये स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्

বাইশ্বা

मुश्यर्यस्य भित्रायायात्रेश

न्दःस्

रटः मुद्रे द्वे अ.स.यम् र.सद्रे मुंग्र अत्वा साया गहेश

मालवरशेरखर-र्नेवरमञ्जून-ग्रुम-रादेन्-प्रान्मामार्थ-र्मा स्टरशेरखर

र्देन् नश्चुन ज्ञून पर्देन् यान्याया सर्दे । न्दः से । यान्य भेर खुट र्देन् यश्चुन ज्ञून पर्देन् यान्यायायाया यान्य स्थाय

सर्देर प्रश्नुव पर प्राप्त क्रिया प्राप्त प्राप्त । क्रिया प्राप्त प्राप्त । क्रिया प्राप्त प्राप्त । क्रिया प्राप्त विष्ठ । क्रिय प्राप्त विष्ठ । क्र

देशक्षायानि नश्चन्तर्थश्चर्यस्य स्थान्य स्थान

मान्त्रक्षमारारम्भूगःरात्। । इ.रादेःखेन्।राद्यक्षमारादेःधेम। । मान्त्रक्षमाराद्यक्षमाराद्यक्षमा।

नेवे के हो ज्ञापिये खुर नेव पाठे गानगापापये हो मा

भागकास्त्रेत्र स्रोत्त

दे:भ्रम्भार्थः निया प्रदेश्चेश्वा स्वाया स्वाया स्वया स्वया

"""ने ने नावन ययर सकुरमा।

स्वानिः स्वान्य स्त्रुन्य स्विन्य स्विन्य स्वानिकः स्वान

डे से के राष्ट्र पर्दे र स्निम्य राष्ट्री।

डे.क्रे.पर्टर.क्र्य.वर.श्रेष्ट्र.क्र्य.वा.क्र्रेट.ता.श्रेपया.श्र.प्या.ता.ता.ता.

क्रन्सित्रम्सायम्या मी क्रिया ये दुर्गम्सित्र म्सायन्त्रम् स्यायन्त्रम् यो द्वर्गम्

त्रश्चर्म् वे त्र्। श्चीरम्भूत्रा श्चीर्या मोर्ते द्राया प्रश्चरम्यो द्वीया भ्वाया स्थाये स्थाय भ्वीत्र स्थाय स्याय स्थाय स्थाय

यश्चित्रःश्चि

ने यः नमून नर्डे अन्ति गार्वे न हेन।

दे'गहेश'य'गर्वेद्'व्। नश्रुव'नर्वेश'ग्री'देव'य'गर्वेद'दे' अद्धुदश'रावे'ग्री

क्रॅंश उद क्रेंश श्रेंग श श्रुन हो द छेश।

ठे श्रे में य वर्दे द धेव व हिंद वा

यात्रशःभ्रम्भाग्यायःधिशःयर्देन्ययुरःविनः।। ने हेंग्रश्यायःधिश्यःयोग्या

श्वःश्वःस्वाःययःश्वः । क्ष्यः विद्यः विद्यः विद्यः । श्वः विः क्षेः देन् । श्वः विद्यः विद्यः । क्ष्यः विद्यः विद्यः । क्ष्यः विद्यः विद्यः । क्ष्यः विद्यः विद्यः । श्वः विदः ।

ववःश्रीशःशिनःयने यम् । व्यानिक्षाः विष्यानिक्षाः व्यानिक्षाः व्यानिक्षाः विष्यानिक्षाः विष्यानिक्षाः विष्यानिक्षाः विष्यानिक्य

श्रुव ने ने प्रति प्रति कि वा ने रहेश वा या निहेत त्र या नश्रुव निष्ण न्यवा वर्षेत्र वे व्याप प्रति के वा विष्ण निष्ण न

वश्यान्य स्वाक्ष स्वाक

योर्द्र-यान्य विष्यः स्टे विषाः वर्द्र

ये दु 'निन' भागवित 'में तु ।

ञ्चात्यात्र स्वात्य स

मु अप्रय-प्रभि प्रायाम् अुमा

> ख्र-त्यक्ष्यान्य सेन्यम्य विष्या । स्यायक्ष्यान्य सेन्यम्य

खुर-खुष्य-गृत्व-व्यार्वेत-श्रुत-हुन्य-य-ख्याः न्देश-श्रृत्य-हेश-द्या-र्य-वि-श्रुत्व-प्रत्युत्व-य-व्याः सः त्य-खुर-वी-श्रुत्व-छेत्-व्य-वर्ह्य-य-सेत्-प्रत्य-वि-श्रुत्व-प्रत्ये-छेत्

नेशःगुनःने ने ने ने माश्रास्य गुना।

ने के नमून नर्डे अ दें अ अ भीता।

न्द्रभःश्रृंनभःणुयःयःन्ध्रुंन्। नश्रृतःन्ध्रेंभःणुःश्रुनःन्धेनः यःनश्रृंभःमःभःणेतःमरःषय। न्द्रभःश्रृंनभःळन्। स्यानेभःनुवःन्देःन्देः वे। ळन्। स्यानेभःयेग्। स्रान्ध्रिः। स्रुनःगीभः इस्रायःग्। त्वनःनुः नुःनरः स्रेन्भःमदेःश्रुन्।

दे त्यः श्चे र दर्दे अः श्चें न अः ग्री : अन्यः श्चें र द्या श्चें र

ने भ्रम् न्यान्य न्यान्य ने स्वान्य स्

नेश्वात्तात्वरात्त्रेत्रात्रश्चरात्त्र्यात्रात्त्रेत्राच्यात्रात्त्रेत्राच्यात्त्र्यात्रात्त्रेत्राच्यात्त्र्य

अयर्बेट्-निवेत्न्। रट्नी र्क्षेत्र प्रश्नाश्चर्याम् कुः यळ्त्न नुः नुस्य स्थाने । क्षेत्र निक्षुत्र नुरुष्ठेत्र प्रशेष्ट्र प्रश्नेत्र क्षेत्र ।

ने कें हैं न नें न पश्चर ले ला।

> दे-के-पिशः त्यद्याया भेता। दि-के-पिशः त्यदः प्यदः प्यवाः भेता। दे-के-पिनः ग्यदः प्यवाः भेता।

क्रन्सदे द्वार वोषा की क्रिया ये दुर वुषा पदे द्वार पत्र प्राप्त वाषा यो प्राप्त वि

म्ये में म्ये प्राया विष्या स्था स्थान स्य

বাইপ্রমা

स्रम्मेशमर्देन्यवे स्रायम्बर्मा स्राय

र्देन्द्र-इ-अयाद्यो के सुद्यारे न् हेन्द्र-वित्र वित्र

ने भूर पुष्य गड़िश्व स्थान्य । ने ने न्यून पर्वे शार्थ द्या स्था प्रति । पर्ने न स्था प्रति । पर्ने न स्था प्रति । स्या प्रति । स्था प्रति । स्य । स्था प्रति । स्य । स्था प्रति । स्था प्

ने स्वरंभी व र सुन्न स्वरंभा स्वरंभा में स्वरंभा स्वर

नेशःश्वनःर्नेनःयःनेःन्रःने।।

वगयानरासेससासी:रुटाधेरा।

ने त्यत्ते नश्रू नर्डे शने शन्तु न पति देन त्या ने नित्त त्या वा नित्त स्थाने नित्त त्या व्या नित्त स्थाने नित्त त्या व्या नित्त स्थाने नित्त त्या व्या वित्त स्थाने नित्त त्या व्या वित्त स्थाने स्थाने

यावश्याशुद्धाः सम् दे विश्वा विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व

मान्यः च्रितः पान्यः पान्यः पान्यः पान्यः प्राप्तः प्रापतः प्राप्तः प्राप्तः प्राप्तः प्राप्तः प्राप्तः प्रापत

देरः धरः वश्चुरः खः वर्षे क्षः प्रदः दे। । अरः वः अः वश्चुरः वः वर्षे प्रतः वितः । श्वरः वरः शः वश्चिरः वः वर्षे ।

श्वायायाय स्वयाधितः स्वा

> नश्चित्रः ग्राव्यायः त्रम्भवः नश्चित्रः न्या । नश्चित्रः त्रोयायः त्रमे यादः यो यः श्चया ।

रेग्यास्याज्यामः धेवावा

त्रेन्त्रेन्त्राची मुन्यस्य स्ट्रिस्य स्ट्रिस

थ्रट्रट्रिं तें हिन् ग्री शायत्रेया नित्र मुं अळंत् ग्री शाय दिवा हेत रटा नवाय न इससा वात्र सान्द्र रें विदेश या खेटा वार्ते न ग्री न होना हेता स्था धेत सम्बर्धा

श्चे से से स्वार श्चे अ शुर विदा।

वहिषा हेत्र प्रवे श्ले वे इस्मान्य स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

व्यवन्त्रवन्त्रेयायायायाव्यविदाया।

सुर-र्नेत्र-र्क्षन् स्थाः युन-प्रवे-प्र्येत्-न्नत्न-न्नः र्क्षन् स्थाः युर्नित्-प्रवे-स्थिः स्थाः युन-प्रवे-प्रवे-स्थाः युन-प्रवे-स्थाः युन-प

गुनःसमयः भेरानम्बनः यदिनः यदि । गुःसः शुःधेरुः नक्षितः ।

देश्वत्या युवास्त्रव्ये प्रविष्ट्र प्रति यो स्वर्धः या विष्ट्र प्रति यो स्वर्धः या विष्ट्र प्रति यो स्वर्धः या स्वर्यः या स्वर्धः य

नेदे त्यत्र न्याया साराया सुस्रा

न्द्रशङ्गित्रशास्त्रप्ति। भ्रुतः होतः त्वावाः या देवः तसुः वा र्हेतः यः भ्रूतः वर्षे।

ये दुःचने सःगन्त दें तःये दु।

८८:३०

र्ट्रशः क्रूंनश्रः वासुरः वीः क्षुनः हो दः द्यायाः यः वासुस

ह्यायाख्रायायाय्वे । ख्रान्त्री । ख्रान्त्री । ख्रान्त्री । ख्रान्त्री । ख्रान्त्री ।

विच.स.सीट.स.चक्रूंश.स.रेचीची.स.झी

यात्राने निर्मायात्र स्वाप्त स्वाप्त विष्णा । स्वाप्त स्वाप्त

ग्याने सम्बन्धिया स्टानी साम्या स्ट्रिंग स्वाप्त सम्बन्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य

वर्ने वे वहिषा हेत वर्षा शुषाका धीवा।

स्ताकाः श्रीत्रावकाः श्रीत्रावकाः श्रीत्रावकाः श्रीत्रावकाः स्वाकाः स

यर्ग्ययास्त्रेन्द्रिं स्ट्रिन्द्रिं स्ट्रिन्द्रिं ।

यत्रेयाः संयुत्ताः स्वयाः श्रीत्याः स्वयाः स्वयः स्ययः स्वयः स्ययः स्वयः स्य

ने'ग्रुन'भेन'ने भुन'ने हिं।। याह्रन'केंग्रम'र्भेन'भून'हे'सून'भेना।

त्रमानि क्ष्मानि क्षमानि क्ष्मानि क्ष्मानि क्ष्मानि क्ष्मानि क्ष्मानि क्षमानि क्षमान

कें अष्ट्रव्यक्षे अप्ते । वित्र । वित

नायाने नान्न क्षेन्य अप्तान्त ना अपता क्षेत्र न्या क्षेत्र न्या ना न्या क्षेत्र न्या ना न्या क्षेत्र क्षेत्र न्या क्षेत्र न्या क्षेत्र क्षेत्र न्या क्षेत्र क

धे प्रवृष्य प्रश्राम्य म्याम्य विष्य म्या

कु'न्ग'क्षुन'यर'ग्रेन्'यते'र्न्न। । द्याद'थे'क्षु'न'य'यार्वेन्'यय।। र्टेन्ने'हेन्'यय'र्थेना'य'थेन्।।

त्रभाराकेंभाउव। श्रुपार्याणेव्हान्यायात्रीं स्वाप्य श्रुवायायात्रीं स्वाप्य श्रुवायात्रीं स्वाप्य श्रुवायायात्रीं स्वाप्य श्रुवायायायात्र स्वाप्य स्य

यायाने खुरासे भी शासदे र्हेराह्माश्राधित सामि खुराहे । खुराहे व्यापात हमाश्राहे व्यापात हमा खुराहे । खुराहे व्यापात हमाश्राहे व्यापात हमाश्राहे । खुराहे व्यापात हमाश्राहे । खुराहे व्यापात हमाश्राहे । खुराहे व्यापात हमाश्राहे । खुराहे । खुराहे । खुराहे व्यापात हमाश्राहे । खुराहे ।

ठे भूर हैंग्रय पर प्रमुर संधित्।

स्राञ्चात्रायदे प्रत्नित्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्र स्

गुर्अःम। शुरःर्देवःचगानाःमःर्केलःचवेःर्श्केवःरुःवर्देरःमःर्वानाःमःवे।

यान्व कें या श्रायहें प्राया श्रायहें प्राया । व्याया व कें या श्रायहें प्राया ।

हेर्गीशयायाविरारेग्यामार्वेर्यये हिम

नेश्निन्द्वेन्द्रिश्चायश्च न्यात्रेत्राया। यार्वेन्द्वेन्द्र्वेन्द्रेश्चेश्चेश्वा।

ने अव ते विष्य न ने अवा हत के वा अव हिंदा से दे है अव अव विषय ने अव विषय है अव विषय है

गर्नेन् छेन् नाहिन् छेन् क्रिन् लेन।

यायाने। यान्व कें या भारते पार्वे प्र हो पार्वे प्र हो पार्वे प्र हो यात्व हो भारते प्र हो पार्वे प्र हो पार्वे प्र हो पार्वे हो यात्व हो भारते प्र हो पार्वे प्र हो पार्वे हो स्व पार्वे प्र हो पार्वे हो स्व हो स

यायाने सामह्नित्ता है। । यार्वेन सामे ब्राम्य से मार्था होना। से वार्ने

···········ःकेशवःश्चेत्रः उतः धेता।

कुं अळं देश्या केंग्या केंग्य केंग्या केंग्य केंग्या केंग्य कें

याह्रव क्षेत्राश्चर श्वर यात्वव र याः या । र र पर्दे र छे र वे श्वर यो है र ये श्वर श्वर यो । र व से र पर्वे र पर्वे र यथ श्वर यो । रे श्वर श्वर यह र यर ये या ।

गहत्रक्षेग्राक्षरक्षरक्षरक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षक्षाक्ष भ्रुव्यक्षर्

> चायाने प्रसूत्र पर्वे वायाय प्रस्ताया । देवाया से त्राया प्रस्ताया । वाल्य प्रस्त्र प्रस्ताया । चाल्य प्रस्त्र प्रस्त्र प्रस्त्र प्रस्ताया । चाल्य प्रस्त्र प्रस्त्र प्रस्त्र प्रस्त्र प्रस्त्र प्रस्त्र प्रस्

न्यानि न्यून्यान्य स्थान्य स्

বাইপ্রমা

र्नेत्रन्धुः नःदी

र्त्वगाव सर्ह्य स्थान स्थान स्थान । स्थान स्थान

स्त्राम्याभेत्रापते त्याप्ते त्याप्ते

यदी द्रवा की स्टा वी श्रावश क्षुत्र श्राव की प्रावश की

শৃপ্তম:শ

क्रिंट्र-च-श्रद्धान्य-वादिश्र

ववायानायाक्षे विवितासाक्षेत्रिक्षेत्रक्षेत्रम् म्राम्यानाक्ष्याना यार्वे र : सः ह्वा य : श्रे व : दु : दर्रे र : य : द्वा वा : य दे । दम्यायायायायायास्त्रीत् स्रोत्यम् म्यायास्त्रीत्

विषयायायायायी विषयायये सुर्वा होतायो त्रामा सुर्वे वास्त्र स्वायायायी वास्त्र स्वायायायायायायायायायायायायायाया वया अप्यान्यायाविः धेन् प्रमाना ग्राम्या मन्त्र केना या ने वे भेर्ने न प्रमान वर्गुर-वरि:ध्रेम् विवाधरात्रया देर-प्यादाद्रिशःववायःश्ववः वेदाविशः ग्रीमानसूनाममार्भेतिन् स्तिमान्या वर्तनायान्या वर्तनायास्य मश्यानाया वयास्राविरधेव न्वरस्रात्यसम्मानायि स्री मर्भिन्ता

নর্গীর'ম'য়ৣ৾য়'য়য়'৻য়য়

> क्रिंश उद्गारीया त्यात्य त्यात्य प्राप्त भे-रुट-धेरव

दे द्यामी शक्ति अञ्चर यायदायी श्रीमिष्ठे या द्याया यायदायी प्रस्थ नः सेन् प्रदेश्वरः द्वार्षेन् प्रान्दा सेन् प्रदेशन्त्रे साम्री विष्

ये दुःचवे संग्वव देव से दु

यवित्रः स्थान्त्रः स्था क्ष्यः स्थान्त्रः स्थान्त

श्चार्थः स्वार्धः त्र स्वार्धः स्वरः स्वार्धः स्वार्धः स्वार्धः स्वार्धः स्वार्धः स्वार्धः स्वार्धः स्वरः स्वरं स्वरः स्वरं स्वरं स्वरः स्वरं स्वरं स्वरः स्वरं स्वरं

याहेशःया खुटार्देवावायाहिंदायाह्माश्राभी श्रुवाद्वायाद्वायायाची

> ने'न्या'यार्वेन्'ग्रा'यार्वेन्'ग्री । श्रेत्र'यार्यस्त्र्त्र'यहेन्यस्त्रिम्।

वर्त्रेयाम्भेरागुराम्बेर् रहेन्।

ষমমাত্র রমমাত্র গ্রীমাবার্বি বিশুমা

नश्चन्य स्त्राह्म स्त्राहम स्त्राह्म स्त्राह्म स्त्राह्म स्त्राह्म स्त्राहम स्त्र

यशेषाधित्रात्रेश्वा । यर्वितायश्चरावेषा

यायाने। व्यायानियाम् मृत्याने क्षित्र क्ष्या क्षायाने क्ष्या व्यायाने क्ष्या क

वशुरायायाधितर्दे विवा

स्वार्थः गुवः स्टः वीः वश्चुवः श्चः था। हेवार्थः गुवः स्टः वीः वश्चुवः श्चः था। श्चेवः प्रदः थेवः प्रवः प्रश्चः स्थाः

त्रभास्य श्रुप्य त्राय त्राय व्याप्त विश्व प्रत्य श्रुप्य त्र स्वाप्त श्रुप्य त्र स्वाप्त श्रुप्य त्र स्वाप्त श्रुप्य त्र स्वाप्त स्व

स्रामी हेरायर ने हिनायर नित्रायन्य प्रामी मुर्या स्

ह्याः प्रस्ति सुन् । श्वाः यह स्वाः यह स्वाः प्रस्ति । श्वाः यह स्वाः यह स्वः

"""रे'गविव र् गुरु त्यदर सर्द्ध र या ।

स्प्राचित्रं त्या पार्वे न्या ने देते। ह्या स्या पावव श्री स्या पार्वे न्या पावव श्री स्या पावव स्था पार्वे न्या पावव स्था प्य स्था पावव स्था प्य स्था पावव स्था पावव स्था पावव स्था पावव

यायाने निश्चन वर्षे शास्त्र स्वर्ग स्वरंग स्वर्ग स्वर्य स्वर्य स

स्वायायदे है। वियास्त्र या प्रेस्त्र स्वाया है । वियास्त्र स्वाया विया स्वाया है । विराधित स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय

द्राची शामशास्त्र स्थापि निष्ठ निष्

न्यं न्द्रः वाह्य क्षेत्रं वाद्यः वाह्य ।

न्यान्य । न्यानकर न्यान्य । त्यानकर न्यानकर न्यानकर न्यानकर । त्यानकर न्यानकर । त्यानकर न्यानकर । त्यानकर न्यानकर न्यानकर न्यानकर । त्यानकर न्यानकर न्यानकर न्यानकर । त्यानकर न्यानकर न्यानकर न्यानकर न्यानकर । त्यानकर न्यानकर न्य

यात्यः हे : श्रुवः श्रेवः हे दः या । यात्यः हे : श्रुवः श्रेवः श्रेवः श्रेवः श्रेवः या ।

यायाने श्रुवा हो ने निश्चुवा हा धोदा प्राप्त देश हो से स्वी श्राप्त साम्या वर्ष प्राप्त साम्या साम्य साम्या साम्य

तश्चन गुर रेग्याय यथ विताय वि । क्षेत्रा यथ वेंग्याय यथ वितारी

वर्देन् प्रवे क्विंग वश्च ने नश्चुन गुःषेत्र प्रवेंग प्राथ षेत्र प्रमः वया

ने नश्चन ग्रम्भे नामा सम्मान्य नि स्त्रिम्

বা

भ्रे पर्दे द्र न भू न मु में भ्रे न ने न ।

ने 'वर् क्रियानमानमुन' ग्रुम से 'वर्ने न् 'पवे से मानमुन ग्रुसे क्रिके

में यात्राधी पर्दे दार्के भागावद प्यदा। । नश्चन भेदादे के नश्चन श्वापा। भेदाया में दिन स्था के विमायमाया।

विंत्र में विषय अप्त्र अप्तर्थ विषय व्या निर्देश के के प्राप्त के के प्राप्त के के प्राप्त के प्रा

र्मेयायायक्ष्याम्य । स्ट १९८ श्राप्य १५८ देवाये स्ट १९८ श्री स्ट १९८ स्था १

क्रन्यदे द्रमादम्या में क्रिया ये दुर्ग्य स्था देश द्रमात्र त्रमात्र व्याप्त स्था ये द्रमात्र स्था प्रमाय स्था ये द्रमात्र स्था स्था ये द्रमात्र स्था ये द्रमात्र स्था ये द्रमात्र स्था ये द्रमा

५८:स्र्री वश्रुवःवर्डेशःयःवर्देदःयशःवहुषाःश्रृेवाःग्रेदःयरःभेशःयवेःदेवःचवःधेवःयःदवावाःयःदे।

नश्रुव नर्डे अ नर्दे द न इ न देव ने व ।

प्रशास्त्र प्रस्ति प्रमुद्द पर्दे साम्य प्रस्ति । दे दे दे र द्रमा प्रमुद्द पर्दे सामा विदाय पर्दे दास्य प्रमुद्द पा स्तर स्वे साम दे दे दे द र र र र हे द पर्दे द र हे सा भ्रें सा वे द्वा

र्देन्द्रम्यायायदीःयादाययाधीत्।।

ते त्यू ने त्

र्ह्गाथ्वरश्चीर्भग्ना भारति। त्र्रार्थ्या प्रते कित्र त्र्राश्चित्र श्चित्र स्था हिंगा स्था कित्र स्था हिंगा स्था है। स्था हिंगा स्था हिंगा स्था हिंगा स्था हिंगा स्था है। स्था हिंगा स्था हिंगा स्था हिंगा स्था है। स्था हिंगा स्था है। स्था हिंगा स्था हिंगा स्था है। स्था हिंगा स्था है। स्था हिंगा स्था है। स्था

देश्वःस्यानःग्रीशःवर्द्ध्याःस्यःत्या । यद्भवःसःयानःग्रीशःवर्द्ध्याःस्यःत्या । ययःहेः क्वनःस्यशः चगायाःवः प्यनः।। क्विंगः त्यश्यः यापायाःवः प्यनः।।

देवे खुर देवे देव कंद सम्माना माना सम्माना विकास देव सम्माना विकास सम्माना सम

ब्रुव-र्रिवि-र्रिवाश्वराने वर्त्र-र्थेवा यदे के न न ज्या स्त्रा क्रेश्वराम में व

सेट्रम्

ने'न्यास्य प्यान्य व्यान्य व्याप्य व्

र्मेलाना सुन् में ने न्या स्र प्या सुना समय प्रा हिन स्य से निय से सिन स्य से निय से सिन स्य से निय से सिन से से सिन सिन से सिन सिन से सिन से सिन सिन से सिन सिन से सिन सिन सिन सिन से सिन सिन सिन सिन सिन स

नेरःश्रया

महिशास्त्र व्याचा विष्ठ विषठ विष्ठ व

माल्द्र-श्रम्भःग्रेस-अन्यः म्यान्यः प्रदे।।
क्ष्यः अः श्रम्भः व्यान्यः प्रदे।।
क्ष्यः अः स्वः न्याः वेः मान्यः न्याः वेः मान्यः प्रदे।।
माल्वः वेः स्टः १९८ः श्रुः स्वः न्याः वेः स्वः न्याः वे

त्र्योताः ग्रीतः त्रावितः त्र

गदिःसम्बद्धाः नुत्रुनः सन्ति सःसम्भे सःसदे के न् नुःसम्भू भू सः सित्रः से न् स्यम् स्था

न्धन्याक्षन्त्रेत्रः श्री । व्याप्ताक्ष्यः हित्रः विष्णा

र्ट्या व्या व्या विष्ट्र विष्

यदान्तराषी खुदार्थेदायाधी द्वाप्तराष्ट्री द्वाप्तराष्ट्री स्वाप्तराष्ट्री स्वापतराष्ट्री स्वापत्र स्

येतुः निनं भणावन में नियेतु।

न्युस्य म्या केंग्राच्या स्वर्ग्यक्षुत्र मुक्तुत्र म्या स्वर्ग्य स्वरंग्य स्वर्ग्य स्वर्ग स्वर्ग्य स्वर्ण स्वर्ग स्वर्ग्य स्वर्ग स्वर्ग्य स्वर्ग्य स्वर्ण स्वर्ग स्वर्ण स्वर्य स्वर्ण स्वर्ण स्वर्य स्वर्ण स्वर्ण स्वर्य स्वर्ण स्वर्ण स्वर्य स्वर्य स्वर्ण स्वर्ण स्वर

के से ज्ञान पर न स्वाप्त प्राप्त के स्वाप्त के स्वाप्त

ठे भ्रे के शास्त्र गुना ने ता प्रत्य के प्रत्

श्री स्ट्रिंग प्रति स्ट्रा श्री श्री श्री स्ट्रिंग स्ट्र

न्द्रमी दिन्दि हिन् यस्त्रम् । विश्व श्व प्य दिन्दि हिन् श्रीक्ष प्रेम्

ने र्ना में में में कि त्रिन्न सून प्रमान के प्राचान के प्राचान के प्रमान क

शुनःत्रभूनःमदेःहें में म्हेन्यः भूनः । नक्षुनः सः नृषाने । विष्ठाः विष्ठाः । नक्षुनः शुनः नृष्ठेनः निष्ठाः । शुनः विष्ठे । वश्रुनः विष्ठाः । शुनः विष्ठे । वश्रुनः वश्रुनः ।

धिरः र्क्विषः श्रीश्राश्चितः वित्रः प्रदेशः वित्रः वित्रः

ह्रेशःशुः द्रम्याः शःश्चे धिः वी । धुत्यः उदः हेदः दुः चन्दः सः धेदा ।

हेशासु द्यम्या या से सिर्धा देशायते हु । धी धुवा उत्र हित्तु न न न न स्था ने भी न धी का प्रति हु न

र्श्वन्य स्था ने त्य देश के अप्यान विष्य के अप्यान स्था ने त्य देश के अप्यान स्था ने त्य देश के अप्यान स्था के प्राप्त के

नेश्व हेशन्यमा श्वेत श्वेत प्राया श्वेत श्व

नायाने कें या उदान सुना गुरा गुरा है । या या के रावश्व र

के भ्री मान्याका हे का पर्वे के निष्ठी ।

दर्ने ने न्यामी क्षेत्र सेव स्वा। ध्यव व्यया ही स्वाय क्षेत्र स्वा। हिंगा राक्षेत्र वर्ने न सेव ""।

न्यः हे 'दे 'द्रना' मे अ' श्रुं ना अ' श्र

याह्न क्षेत्र व्यायाः स्वायाः स्वायाः स्वयः प्रायाः स्वयः स्वयः

ने भुःधेव वदर गृह्व क्षेत्र या य दर दि ये व्या या ये वि ये या या य

हिन्याले त्यापर्योत् रहं या स्वराधिता या हिन्य या हिन्य

दे न बिद्दा हुं न श्रा है न श्री न श

ये दुः निनं भागान्त में निष्ये दु।

क्षेत्रायायायाः वियाप्तराष्ट्रमाञ्चरायाव्यत्त्रायायायायाः वियाप्तराज्ञेत्।

तर्ने स्त्यान्य व्याश्वास्त्र । प्रे स्वाश्वास्त्र । वित्र प्राप्त । श्रु त्र प्रे त्या प्राप्त । श्रु त्र प्रे त्या प्राप्त । श्रु त्र प्रे त्या प्राप्त । श्रु त्या प्राप्त । श्रु त्या प्राप्त । त्या प्राप्त । श्रु त्या । श्रु त्या प्राप्त । श्रु त्या । श्रु त्या प्राप्त । श्रु त्या । श

ने भ्रिमने खंद्राम्य विष्या

र्धेग्रथा ग्रे क्रिंव पर्दे द मानव सेव हो। सर्देव शुस्राया सेवासायायाया नविद्या

देशक्षान्यानवसायादे। उद्यान्दात्रवेषानवे क्रिन्यानाधे वायादे। र्से न्याया भी भी त्राप्त के स्वाया भी विश्व का स्वाया की निर्माय की निर्मा क्रिवास्त्रीयायाक्रीवासेवास्या ने सूरायन्तर विवास ने वे स्वरास सर्वि-शुस्राद्या हे साशुः द्यापायायाया स्वासायायाया सुः सन्वाद्यायाया सुः सन्वाद्यायाया याधिता तुयायाह्यामि वियायायविदार्ते।।

ব্যুষ্যমা

मुँगायाःग्रीःसळ्यःहेर्म्म्यानरामन्दान्ते प्रति। नसूयाः वर्गःनश्रृवःमर्दे।।

न्दःस्

र्द्धिम्बरम्भः मुःबर्द्धवर् देन् मुबर्धः यसः वन् द्राये द्रमें बर्धः यदे।

कुःर्शेग्रम्भः सळ्दः हेट् न्यस्यः ग्रुःय।। र्देश्यायासेन्यम्याष्ट्रमान्या। र्वेगायप्राचे श्रम्यविश्वेम्।

मुँग्राराग्री सक्दा हेट्र नन्दर राधिद्या

हुँ न्यान्त्री अत्वन्त्रेन् हुन् हुन् स्थान्त्रेन् स्थान्त्र हुन् स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य

र्ट्स्ट्रिन्किंग्। श्रून्ट्स्स्ट्रिन्स्स्या । श्रून्याः स्थलान्यन्द्रम् स्थलान्यन्त्रम् । श्रून्याः स्थलान्यन्त्रम् । श्रून्याः स्थलान्यन्त्रम् स्थलान्यन्त्रम् ।

स्ट हिन क्षेत्र अन्य स्ट दे क्षेत्र स्ट क

वर्रेन श्रुषायाष्ट्रमासेयानमः होन्।।

वर्तेत्रप्रेश्चित्रश्चित्राच्छ्या प्रम्थान्त्र वित्रप्राचित्र हित्या हित्र हित्या हित्र हित्या हित्र हित्या हित्र हित्या हित्य हित्

श्चान्द्रश्चान्त्रविद्धान्त्रभाष्ट्रम् विद्धान्त्रभाष्ट्रम् विद्धान्त्रभाष्ट्यम् विद्धान्त्रभाष्ट्रम् विद्धान्त्रभाष्ट्यम् विद्धान्त्रभाष्ट्रम् विद्धान्त्रभाष्ट्रम् विद्धान्ति विद्यान्ति विद्धान्ति विद्धानि विद्धान्ति विद्धान्ति विद्धानि विद्धान्ति विद्धानि विद्यानि विद्धानि विद्धान

ये दुःचनिः भागन्त देन से दु।

र्येत्रः भ्रेत्रः भ्

यर्देर्न्यश्रम् । श्रूर्याः ह्याश्रादेशः श्रीरः मियाशः स्वाद्याः स्वतः स्वाद्याः स्वतः स्वाद्याः स्वतः स्वाद्याः स्वाद्याः स्वाद्याः स्वाद्याः स्वाद्याः स्वाद्याः स्

বাইশ্বা

नसुराद्यानसूदायदी

मुन्न नुर्वा संक्रें अपने स्वाया । वित्र स्वर्वा स्वया वित्र स्वया । वित्र स्वर्वा स्वया वित्र स्वया । वित्र स्वर्वा स्वया वित्र स्वया । वित्र स्वर्वा स्वया । वित्र स्वर्वा स्वया । वित्र स्वया । वि

नश्चनः ग्रुम्। विया सुम्यः श्विष्यया सर्वेदः हेन्।

मञ्जून गुर देश पान श्रुव गुर विश्व श्रुव श्री विश्व श्री श्री विश्व श्री विश

रैषाश्चार्यः श्चित्रः प्रमुवः प्रमः ग्वः वः श्वेतः द्वार्यः प्रमुवः प्रमुवः विश्वः वि

देन्यः श्चितः देन्देन्तः त्यावाद्यात्रः व्याप्तः व्यापतः व्यापतः

कंत्रःस्रसः मर्हेत्रसः प्रम्यत्य सः श्रिम्सः स्रुः त्रसः प्रक्रवः सः सर्हेतः स्रा देसः तः प्रदेश्यः श्रिम्सः प्रमानितः स्रितः द्राधितः सः स्रोतः स्राधितः तसः विः त्रा

ने म्ह्रम्य स्था त्र स्थित् । स्था त्र स्था त्य स्था त्र स्था त्य

येतु निन्मणान्त में निष्येतु

र्मेयानेते रेने र्मेन्या ने ने र्योग्या स्थान स

यद्देरः त्रश्याः वार्वेदः द्दः। वेशः श्वांशः श्वांशः शुः तडदः यदि। वेश्यः स्वांशः विष्यः स्वांशः विषयः स्वांशः स्वांश

बर गुर केंग बर ग्रे रेंब न भर पंत्री

गुव्यान्य प्राप्त क्षेत्र क्ष

ररःहेर्यदेर्यः निह्नायः विया। देयः न बुरः देवः वे हेन्यायः व स्परः।।

मुँग्रामा में अळव हे न क्रेंव प्रति स्ट हे न प्रते न प्रते न प्रते स्ट हे न प्रते न प्रते स्ट हे न प्रते स्ट हे न प्रते स्ट हे न प्रते स्ट है न प्रते स्ट है

त्राम्बद्धम्य विष्या विषयः विषयः

ते त्या नहें दाव या देश निवा निवा है ते हिंग या देश निवा या निवा है ते ते या निवा है ते या न

णुद्रायश्चात्रहराणे भूवशाचे राक्षेत्राच्या स्वर्धे श्वाप्त्र स्वर्धे श्वाप्त्र स्वर्धे स्वर्ये स्वर्ये स्वर्धे स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्धे स्वर्ये स्वर्य

द्रित्र-देग्रमः क्ष्र्रित्रः अद्युक्तः द्वीयः वर्षे यः प्रत्युक्तः देवे व

वर्रे र मे व वरे र वे प्यव व्यवा भेवा।

देन् स्वेयानवे श्रेम्।

विन्न्त्रेयानवे स्वेम्।

विन्न्त्रेयानवे स्वेम।

विन्न्त्रेयानवे स्वेप।

विन्न्त्रेयानवे स्वेम।

विन्न्त्रेयानवे स्वेप।

विन्न्त्रेयानवे स्वेम।

विन्न्त्रेयानवे स्वेभ।

विन्न्त्रेयानवे स्वेम।

विन्न्त्रेयानवे स्वेस।

विन्न्त्रेयानवे स्वेम।

विन्न्त्रेयानवे स्वेप।

विन्न्त्रेयानवे स्वेम।

विन्न्त्रेयानवे स्वेप।

यहिन्द्रस्य स्थान्त्र स्थित्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त

देनाशः श्रीतः स्टाः हेट् । यहेट् । यहार । य

यर्दिन क्रेन यदि मही प्यवायमा धिना बेश यदिन मासूम ना गुन यश न हुश या श्रेम महित्र क्षे यदिन क्षेमा प्यन यमा मासा स्याय धिन बेश श्रुम या नेमाश श्रेम महित्र श्रेम अर्थिन श्राम प्रमाण हैन श्रेम श्रीम स्वाय प्रमाणिन बेश शुरःर्रे।

दें त्रिन्देग्रयाये स्ट्रें स्ट्रम्सुंग्रया श्री स्ट्रिक्स स्ट्रें स्ट्रिक्स स्ट्रें स्ट्रिक्स स्ट्रें स्ट्रिक्स स्ट्रें स्ट्रिक्स स्ट्रें स्

दे त्यः श्र्रें नः दर्शें दर्शें के श्रें श्रें के त्या है त्या स्था के त्या के त्या

বাপ্তম:মা

रम्बेर्धीर्वेश्यान्यूश्याने नसूत्राची

ह्निन्द्रेन् सेन्द्रिन्या ।

> नेश्व नर्षेत्र न्या केत्र वर्षेत्र । नश्च नर्षेत्र नर्षेत्र म्या वर्षेत्र स्था । ने प्यो न्या केत्र म्या ।

र्मियानास्तित्रेत्र्यानियाने सार्मियानासित्रः मियानासित्रः स्तित्रः सत्तिः स्तित्रः स्तित्रः स्तित्रः स्तित्रः स्तित्रः स्तित्रः स्तित्रः सतित्रः स्तित्रः सतित्रः सति

नेश्व शेष्ट्रिं प्रत्येष्य प्रति।

है 'क्षेर 'श्रुव'य' पार्वेद 'ये पार्श ही न। । र्से पार्थ 'द्राचा प्रव'के पार्थ 'श्रुव'ये द 'हे द।।

नेश्वाचे विवास्त्र नेश्वाचे विवास्त्र नेश्वाचे विवास के त्र के त

गुरुष्ठाःसःसःमध्याः न कुष्ठाःचन्द्राः याशुस्रा

सेया हो द्राप्ता से साम स्थान स्थान

श्रेषाचेत्राम्योशस्य स्थानस्य माशुस्र

यर्रेरः नश्रुवा कु यः नश्रुर्।

८८:स्र्

यर्देर:नश्रृत:वे।

प्रशासिकाः स्वापाः स्वाप्तः स

र्मेल्यः नश्चन्त्रम् न्याः स्वान्त्रम् स्वान्त्रम्यान्त्रम्यस्वान्त्रम्यस्वान्त्रम्यस्वान्त्रम्यस्वान्त्रम्यस्वान

यान्त्रः क्षेयाश्वः क्षेयाश्वः मह्दः श्वेया । यश्यः यान्त्रः क्षेयाशः हेत्रः संस्थित्।

क्रम् स्वराधिता स्वराधित स्वराधिता स्वराधित स्वराधिता स्वराधिता स्वराधिता स्वराधिता स्वराधिता स्वराधिता स

क्रन्यदे द्रयादम्याम् भी क्रिया ये दुर्ग्युया परि द्रयान निर्म्य प्रयाप्य या य

म्याने क्रिन्स्य न्यान्य निर्देश्य मिल्यान्य न्यान्य न्याप्य न्याप्य

म्बर्भान्यम्यत्रित्त्वे न्याधिय।।

र्ट्य स्थापित्र चुःष्य पार्वे द्राया दे दे हैं हैं से स्थाप्य पार्वे द्राया पार्वे द्

ने त्याप्रशास्त्र स्वाया स्वाया है।

ळ्ट्रस्यत्रे नस्या निक्ष्य नि

ये दुःचनिः सःग्नन्दः देनः ये दु।

म्बिन्। रटमी नक्ष्र श्रुदे र्स्य माश्रुस स्वर्ण त्र्य स्वर्ण स्वर

नेरः वया श्रुवः प्रश्नां व्याप्तिः श्रुवः विष्ययः श्रीयः विष्यः प्रदेः ख्रितः श्रुवः विष्यः प्रदेः विष्यः विषयः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विषयः

ते ते हिंदी त्रात्में त्र के श्रायके वा वी शाने प्रतान प्रता हिंदा कुषा वी हे शासी त्रात्में वि हिंदी वि श्राय प्रता हिंदी हिंदी हैं शासी प्रता हिंदी हिंदी हैं शासी प्रता हिंदी हैं शासी प्रता हैं ते हिंदी हैं शासी प्रता हैं ते हिंदी हैं शासी प्रता हैं ते हिंदी हैं शासी प्रता हैं शासी प्रता हैं शासी प्रता हैं ते हैं शासी प्रता हैं शासी हैं

क्रन्सदे द्वारमे वा में क्रिया के दुर मुक्ष प्रदे द्वारम वित्र वा स्वर माने वा में वा स्वर माने वा से वा से वा

ख्रानी श्राण्या भी मित्रा नहिता निर्मा श्रास्त्र भी श्रास्ते प्यान । तु प्यान हित्र । विवान मित्र । यह विवा

मुश्रामन्द्रायासुस्र

धेन् के अप्तर्भ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वय्य स्वय्य स्वय्य स्वय स

श्चितिः र्देवः प्रमा धवः ययाः वीः र्देवः रेता।

८८:स्र्

श्चेविन्द्र्य यानि

न्दःस्र्

ख्र-पार्वे न् ग्रेन्, ख्रेन् न्यान् न्यान् न्यान् न्यान् व्यान्य न्यान्य न्या

खुर नोनाश हो द्रार्ट् द्रार्ट् द्रार्ट् ना द्रार्ट् ना ना श्रुं श्रार्ट् ना ना श्रुं श

वन्नद्राये सुँग्राय रूपा सुद्राय स्

বাধ্যম'না

नमयानु सेवा द्वायानी

श्चेत्रःश्वायःनगरःभिष्टेश्केयाते निर्नात्त्रीत्राचेत्रःयाधिताते । विया न्यानरुयायार्ययाधीतात्रा वियान्नम्यास्यास्य स्थान्यानम्यस्य स्थान्य र्रिदे के अरु, न्या नर्या परि के। नरे ना दर्रित पर निया सुर्या त्या हीया षरःयरे.य.स्र.यग्रेयःसर्वियान्तरस्यान्त्री ।षाग्रियायारःस्टरायांच्यायाः क्त्यानहेत्रळन्यायेन्त्र वियास्यास्यास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य वश्रूरश्चे मर्वेदश्च मर्वेदश्चेदश्च स्थाप्य स्य स्थाप स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य अश्रास्त्रीं निर्मे के ही सामानित्र मार्थित हैं। । निर्मे नित्री निर्मे के निर्मे निर्मे निर्मे निर्मे निर्मे वयायानायानयानुदेर्देवाच्वानु। हिन्यान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्याया ॻॖऀॺॱॾॣॺॱॺऻ ॸॺॱॸढ़ढ़ॱॸऻॕॺॱॶॖॻऻॺॱॺढ़ॱख़ॕढ़ॱॻॊॻऻॺॱॻॖ॓ॸॱॸॖॱढ़ॻॗॸॱ नःधेवःहे। ग्रविःर्केशःउवःक्षंदःसःग्रेचाःर्वःदेवःस्ट्रेटःतःग्रव्यः ग्रुव्ह्यः होत्रत्भेत्रपर्द्रस्थासुर्वायस्थात्। श्वायायाववयाहायह्याहोत् र् सेर्प्रेर् भेर् केर् कर् सम्यान्य नर् र्यं न सम्यान्य स्र त्रुट्र रायानिहें अपने प्रें अपने प्रायायायायाया स्थापी स्यापी स्थापी स् नः अधितः है। ग्रिकें अष्ठतः ह्या अदिः स्ट्रेट्या ग्रुव्यम् प्या स्ट्रिया अः<u>व</u>्यतःसदेः भ्रेनः र्ने । देः पदः पेदः के अः नर्ययः नदेः भ्रेन्य अर्के दः ग्रेः द्वेः रमाधिवासी। मार्थायाये प्रमेषाधिवाते। क्ष्यामावया साम्यासी प्राप्त बेर्'य'य'र्देशक्रिय्य'ग्रें कर्'य्यायार्वेर्'यदे भ्रिर्देश । रे'वे'यरेव वेव'

म्रीशन्यायकतः निवान्यायकतः सूरः सूरः निवान्यायकतः सूरः निवान्यायकतः सूरः निवान्यायकतः सूरः निवान्यायकतः सूरः न

ने त्यश्चर्यामायकन्मा शुन्न न्यून नि

यद्द्रम् स्वर्त्त्र स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स

द्यालेगामेशस्त्र स्वास्त्र स्वस्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र

ने भ्रमेन ने ने ने प्रमें ना सुर से में ने से ने से से सा सा से मार

ये तु निव नियानिव निव ये तु।

प्रश्नित्र श्री । स्वाक्ष श्री स्वाक्ष स्व

বাইপ্রমা

यदःयमानी देवःय महिशा

खराम्बेर्म्स्य प्रत्याप्त निष्या स्थान स्

८८:स्र्

सिट.चोर्च् ट.झैंच.धे.चवींच.चतु.क्षेताता.चांधेश

गुरु त्यर्थ निर्ध्य स्था स्था स्था स्था से त्या से त्य सूर्य प्रति स्था स्था स्था स्था से त्या से त्य त्या त्या से त्

> धरःन्याःनेश्वःश्वःयाह्नेनःया । यन्याःयाववःधेनःकेशःसक्षंन्रशःयःधी । धेरःवःस्रःयोःक्षेयाःन्रःवे। ।

नश्रुव नर्डे अःगडिमा हु न ११ न ११ में व

रटा के वा श्रुप्त के विषय निष्य निष्य निष्य निष्य निष्य के स्वार्थ के स्वार्

गुद्दायश्चात्र त्र श्चात्र विषय प्रत्य स्व विषय स्य स्व विषय स्व विष

हे 'क्षुर'न्न्या'ने 'कंट्-'भेन्ना ।
केंगा'ने 'यह्या'न्य संभे 'य्युर'ना ।
टे 'यंनेन 'यक्ष्म'न केंश'भे 'यहेन 'ना ।
टे र य्याया श'र्ट्नेन 'य' 'र्ट्युर'ना ।
सर्द्ध्य स्थार स्थार स्थार स्थार ।।
सर्द्ध्य स्थार स्थार स्थार स्थार ।।

ये दु 'निन' भागवित 'में तु ।

हे ख्रिम् क्रियान निर्मा क्षेत्र यो क्षेत्र

ने 'क्ष्रम' ख्रम' प्रमे 'म्या किया 'म्या क्ष्रम' क्ष्रम 'क्ष्य 'म्या क्ष्य 'म्या 'म्या क्ष्य 'म्या 'म्या क्ष्य 'म्या 'म्या क्ष्य 'म्या 'म

भूगर्थाः हेन हिन त्याम् वित्र वित्र वित्र । भूगर्थाः हेन हिन त्याम् वित्र वित्र वित्र । वित्र त्यते न सून प्रति केन प्रति ।

नश्रव नर्डे श्राह्म प्राप्त निया में देश मार्चे प्रश्रव मार्चे मा

याविया चित्या यहूँ दे चित्या श्री त्या स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त

हो। गल्र-प्येत-प्या क्षेत्रान्य हिन्द्व-स्यान्य हेन्। हो।

रद्यो क्षेत्रा प्रदेश क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र । विश्व क्षेत्र क्षेत्र

र्ट छेन। न्ट ख्ट छेन। त्यायायायाय दि या मान्य हिर हैं न उन ही। क्र मान्य क्

ळॅट्र'स'क्सस्य से 'पॅट्र'से व्या । नसूत्र'न हें राक्षेत्र'से प्राची ।

ळंट्रांस्स्स्र प्रेंट्रांस्य स्था न्यून्य के स्थान के स्

ये दुःचने संग्नन्द में दु

त्रभा गाल्यः चृतेः र्देतः उत् ः च्रीः र्व्यः प्राप्तवाः सेट्रां वे शः श्रू श्रायः विश्वः स्त्राः विश्वः स्त्राः विश्वः स्त्राः स्त्रा

देवे :कंद : अ: अदे : निवेद : देवे : निवेद : न

नेश्वन्त्रेन्ते। क्ष्न्यःक्ष्यः उत्ता याव्यः श्वः स्याने स्रित्रं हो विश्वः स्रित्रं विश्वः स्रित्रं विश्वः स्रित्रं स्

स्ट स्वाययययययय म्यून प्रस्ति ।

यद्रःश्चिम् शुदःद्दःद्यायःयःयःयाश्रयःयदेःद्रयेःश्रःथेवःहे। देःद्रयेःद्र्रशः श्रःथेवःववेतःद्रश्चिम्

देन:ब्रया देव:द्रे:द्रेश:स्याधेम:पर्मः स्टःक्षंचा:यायाय:वःक्रिंशः ठव:प्रमः सुद्रमः ग्रीमः यवायः परं सः ग्रीमः प्रदेशः श्रीमः यवायः परं सः ग्रीमः परं सः ग्रीमः यवायः परं सः ग्रीमः यवायः परं सः ग्रीमः ग्

ने'य'अ'र्द्रश्र'य'द'र्हेश्।

ये दुःचवैः संग्ववदः र्देवः ये दु।

र्देशः भ्वायायायायार द्रा वाववार्याप्यात्र सुर्यायायाय स्राय्यूर नर्भाषीत्रकेशाउँ अप्रीक्षान्वनामितः न्यान्यत्रसूरः सूरानी न्योगित्रेशा र्थेन्यर में नदे केन्ये व मी। स्याने येन् के यान्ययानर निम्याया उंयाओं।

यदिशास्त्र व्याप्त वित्र स्वतः स्वया स्या स्वया स्वया

क्रॅंश उद ८६ शर्में यश ग्रीश ग्रुव १६८ भ्रवश शुः खुर ग्रेग्श ग्रेट् र् नश्रुवा निव हिंभूग शुर श्रेया श्रुर श्रेया श्रुर परि भूवया श्रुर श्रद परि हिंद नश्रुवा नेवे यव नगण भवें।।

द्र-र्सि कॅश-इत्-द्रिशःश्रृंवशःग्रीशःग्रुवः-पदेःश्लवशःशुःख्र-जोगशःग्रेन्-तुः-वश्रृत्-पःन्ते।

यायाने के अराउदास्या याया स्तर्भ स्तर्भात्र स्तर्भात्र स्तर्भात्र स्तर्भात्र स्तर्भात्र स्तर्भात्र स्तर्भात्र स मर्वेद्राचेद्राद्राच्या केंशाउदाद्रिंशा क्रेंत्रशाची शामुनाया देरायदा खुरा विश्वायेत्रमा अर्बेट विश्वेर सुर विदेश हो द द स्कूर रे ले त्य

> ने या नहेत सेत नर्देश में या। नश्रुव नर्डे अ द्रायम्य न हे द्राव प्या

क्रॅंश उत् खुर में श युत यरे छे या तहेत या क्रेंत यदे क्रॅंश उत् खे र द्रेंश में श्रु क्ष या कर्ष या कर्ष या या वित्र प्र क्षेत्र यहे क्ष या या वित्र क्षेत्र यहे या यह या या वित्र खेत्र यो या वित्र खेत्र खेत्र खेत्र खेत्र यो या वित्र खेत्र ख

न्धेरवःरर्भेः क्षेमः निव्हि।

द्यस्त्र निर्वाचित्रः श्री शार्वि स्वित्रः स्वत्रः स्वति स्वतित्रः स्वित्र

ने प्यर ने के रूर के मानन्य।

> ने न्यायां र त्या क्षेत्र स्था क्षेत्र । ने के या विकाय या के त्र हो त्र स्था मा

न्यानरुवाने प्राप्त श्रिष्ठ स्वाप्त स

ने 'क्षु' क्षेत्र'त्र' स्वार्थ्य स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः

हेशन्यमायाने हे सुरम्मिन्।।

क्रुनःहेत्रः छेन्। स्वान्त्रः स्

तर्ने द्वा क्ष्यां स्वा निष्ण विष्ण क्ष्यां क

ख्र-दिस्य अः क्ष्य-यः विष्ठा । स्र-दिन्दिस्य स्य-यः विष्ठा ।

ये दु नवे न मान्त में त ये दु

বাষ্ট্র শ'মা পির দুর্শ্লিবা শ্রুম শ্রীর মার শ্লীন শর্ম শ্রুম শার্ম শ্রেম বার্মির শ্রীর শ্রীর শ্রীর শ্রীর শ্রীর শ্রীর শ্রীর শ

न्द्रभान्ता प्रशास्त्रमा स्थान्त्रमा स्थान्त्रमा स्थान्त्रमा स्थान्त्रम् स्थान्त्रम्यान्त्रम् स्थान्त्रम् स्यान्त्रम् स्थान्त्रम् स्यान्त्रम् स्थान्त्रम् स्यान्त्रम् स्थान्त्रम् स्थान्त्रम् स्थान्त्रम् स्थान्त्रम् स्थान्यम् स्थान्त्रम् स्यान्त्रम्यस्यान्त्रम्यस्यान्त्रम् स्यान्त्रम् स्यान्त्रम् स्यान्त्य

८८:स्र्

न्देशकी

नेश्वीन्त्राव्याः श्चित्रः व्याप्यः श्चित्यः व्याप्यः व्

ख्र-श्रुव हो ८ - द्वाया स्वाय स्वय स्वाय स्वय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वय स्वय स्वय स्वय स्वय

याद्वेशास्य

पियात्वरयाहे यान्यवात्ययात्रयात्रम् मुर्वेत्रायते कुः यळ्वते वी

नेशक्षाविष्ट्रिस्ट्रेश्चर्यायश्रा

विश्वास्यासी द्वार्या स्थान

ख्राक्ष्याय्याय्याय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्य

ध्रयःग्रे:वित्यम्यम्यः ध्रयःग्रे:वित्यम्यःग्रेवःयःधी।

ने भुभेवन

भ्रम्य भ्रम्य । व्याप्त । या व्यापत । या व

ये दुःचवे संग्ववद देव से दु

मी वित्रस्य सम्बद्धारा यादा सुदा या है या यो । के दा तु सामा यादा लेया । ध्युया मी । हिन्यर नश्रव यदे केन्न् नुश्व रापे क्षेत्र से के से वर्षे न

.....मयः केशः पदस्य

अन्याने रावन्या रहायी ह्वायाया नहेत्र सदे हे या द्यापी वायया नदे-न्त्रे-न-षद-नश्रूद-न्त्रीं अन्य-५-उद-न्वयः के अन्यर-वश्रुर-नर-नया शेयाचेदाइप्तरेप्त्चेपायळद्पाये भ्रम्यश्चेराहेशप्त्रयापी याश्यापरे <u> २व्रे</u>.न.नश्रूव.सदे.केन्।वि.वन्।केन्।केन्।हेन्न.नम्बा.क्रम्या. ८८.२.२४.५५.३५। त्याञ्चयास्यायास्यायान्त्रेयायान्तेत्रायते हेयाद्यायाः हे अप्तयमार्थ्यामी वर्त्त्रप्त्राचे वर्षिय वेंग्रायासु गुराया देंतर से दारे दिले दा

वेजारान्वेजा गुरापार्टेन से दायगुरा।

दें.य.लुट.कुराईश्राट्यया.ईश्राट्यया.त्रश्च्याश्रान्थ्या.धिया.धिया. मर्ने व से द मार विष्य र मार श्रिया दे । यह हे या द मा मी वह द द या मिर हैन|
ने'न्य| अर्देन'शुअ'र्देन'न्ट'हेश'न्यम्'न्ट्य ।धीट'केश'म्यम्'न्य

क्रम् अत्र मुक्ष प्रमेष मुक्ष प्रमेष स्थान क्षेत्र मुक्ष प्रमेश मुक्ष प्रमेष मुक्ष प्रमेष मुक्ष प्रमेष मुक्ष प्रमेष मुक्ष प्रमेश मुक्ष प्रमेष मुक्ष मुक्ष प्रमेष मुक्ष मुक्स मुक्ष मुक्र मुक्ष मुक

स्टाहेब्रायर्थे । विश्वान्त्रन्याये नविस्त्रे नविस्ते नविस्त्रे नविस्त्रे नविस्त्रे नविस्त्रे नविस्त्रे नविस्त्रे नविस्त्रे नविस्त्रे न

বার্রম'ম। ২০১৯ বানধ্র নেই ম'অম'র্যবাম'র্যু'নপ্র'র্বর্বিম'ম'রী

न्यानि सेना अर्थेन है न्ध्रम् श्चान्य स्थ्या स्या स्थ्या स्थ्या

रदःमीःक्षेमाःग्रदः शद्दः या

क्षेत्रार्डस्य मेहिन त्या मेत्रा मेहिन धिता।

रेग्रअः र्रेन्द्रअः भ्रायायः नवेः स्टामेः क्षेत्राः ग्रहः सुहः हरः वयायानायमात्रान्त्र्न्त्र्वमायान्त्रीमायाधिन्ते। क्वान्तेमार्यन्यमा यदे क्षेत्र रुष रूट वी वित्र मुर्ग राष्ट्र प्राय वी वाष हो द प्येत स्मर विष यदे के द भी व स्वरे ही स्

বাধ্যম:মা

देवे व्यव द्याया य दी।

ने धिरानमून नर्डे राक्ष्य सम्ब्रा निश्चा सुरश्ची राव दिशागुवाया। गर्वे प्रचे प्रचे प्रचारा ।

यायाने खुरावरा सुरसामसामार्वे र हो र र त्यूरावा में याया दे·धेशःगवयःतुःग्रदःयःतस्वःवर्देशःळ्दःसरः।वशःत्वःस्यःधदेःधेरा यावयः इति दिस्यार्थे ग्राम की विया क्षेत्रा या या विदान के दा

> 'गय'हे'दे।। भे पर्देन मर्वेन होन धेव वस है।।

क्र्यास्त्रे म्रायमेयामे क्रियाये द्वराम्याये म्रायस्य स्यस्य म्यस्य स्यस्य स्यस्य स्यस्य स्यस्य स्यस्य स्यस्य स्यस्यस्य स्यस्यस्

णयाने नश्रवा वर्षे प्रति । वर

र्रक्षियाः त्यायः त्रा

र्देरव्रर्रमी कैंगान्दियायायान्य रम्यूरर्रे वे वा

नश्रुव नर्डेश द्याय श्रुप्त से प्रस्तुम्।

र्ट्स वायान्य वायान्य विष्ट्र विष्ट्र

ळन् अर शुर नवे खुर रें अवा बुर न ने।

नेशन स्वायायाया में त्राप्ताया । वश्रुव वर्षे अपे स्वायाया ।

न्द्रभःश्रूनशःश्रीःळन्। स्वाप्तः स्वापतः स्वपतः स्वापतः स्वापतः स्व

भ्रेन्याः स्वाप्यः नश्रुवः नर्डेश्वः वि। । भ्रेन्याः स्वाप्यः नश्रुवः नर्डेश्वः वि। ।

क्ट्रसंदे द्रसंदर्शेया श्री क्षेत्रा से द्रम् श्री संदे द्रसं मन्द्रा वर्ष स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व

त्र्वाप्त्रीयाः श्रुप्ताः वित्राप्त्री व्यक्ष्यः वर्ष्ट्र व्यक्षित्र वित्र व्यक्षित्र वित्र व

वया शुरःग्रारः धरः तुर्ने वुरः तुर्ने विश्वः व्या

त्रने त्याय हमा प्रायय के मही । त्याय प्रायहिन प्रीय

स्रायि में त्राया महत्ता मा श्रुष्ठा मा स्था के मा स्वाया के मा स्वया के

ह्यायाः स्थायाः स्थाय

ये दु 'चले 'स' मान्त 'में दु।

दे वे विश्वास्य विषय वर्षे स्थूर वशुर वे वा वार विषा वार मी कु त्या भी मिर्दे प्राप्ते देवे। देवे कु नगागा प्रदे भ्रें त्र या वह समा तुरा प सप्पेत्रिं। सुस्रायदे ह्या ग्रीसायद्गाना वर्गे गासी तुसाय विदाह्य ग्रीय क्याय स्वाय सर्वे स्वाय स्व र्भेग्रया ग्रीया भेगा पान भ्रीता प्रते त्या पायरित सुया ग्रीया से प्रत्युवा केता है। वाविशाग्रीश्राभीर्पेरासालरासर्विश्वामीश्राभीरामीयान। विशानिश नशक्रवाश्वास्त्रस्त्र शुरुक्तर्त् से प्रवेति न स्टर्स्या सर्देत् सुस्र शुर्स्य शुर्मा नयावयान्नरमञ्जूनी त्यायानरानेयार्थे । देख्य परानेतरानेतरान्निया गुर मी देव त्या अदेव शुअ पार्वे द श्रुवा पुरवह्र पा पा अ धिव है। कपा अ श्रीपा अ ग्रीश्राक्षेत्रायात्रक्षेत्रायदे तुश्रायदे वितायस्ति। तुश्रायदे वितायस्ते व्या ह्यअःग्रेअःसे मर्देर्पायर्देव्यस्य स्थानी असी प्रयुवायदे सिर्मा दें व खुर हे क्षु तु । प्रश्न ज्ञूर न र जु । वे व

नित्रः भूनि शुर्त्र श्रुत्र श्रुत्य श्रुत्य श्रुत्य श्रुत्र श्रुत्य श्रुत्र श्रुत्र श्रुत्य श

श्चेतिः र्ने व प्रदा प्रवास्य । भी र्ने व रेने । प्रदार स्था प्रवास्य । भी रेने व रेने । प्रदार स्था प्रवास्य । भी रेने व रेने

यार हैंग खुया नुया पाय विना दे में राउन खार हैंग खुया ने स्वार्थ निया स्वार्थ निया

ये दुःचने संग्नन्द में दु

विश्वास्ति विश्वास्ति विश्वास्त्र स्वास्ति स्वासि स

মৃষ্ট্ৰ শ্বা

म्याकार्यते हे कार्यमायी यात्वा सुदे सुर् स्र से

বাধ্যম'না

শ্ৰদাশ দেই দেই দেই

यान्यस्यस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्य स्थान्त्रस्य स्थान्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्य

गहेशःग

प्पद्गःयनाःनीः देवःत्यःनाशुस्रा

म्यायाययाययायदे द्वाया म्यायायदे प्रमायायया हेया

येतु निवे भगवित में विश्वेतु।

> यर्देरः नश्रुवा क्रुशः धरः नश्रुवः वि । इटः चे । यर्देरः नश्रुवः वि

> > श्चेश्वात्रेय्यद्ग्नित्रः हेश्वात्रः या । वर्त्तः श्चेश्वात्रः या । वर्त्तः श्चेतः या श्चेतः या व्यापाः स्रोतः या वर्षः या वर्षः स्रोतः या । श्चेतः स्रोतः स्रोतः

বাইশ্বা

क्रिश्राचन्त्राचाशुमा

य्याश्चार्यः श्चेरः त्रेन्द्रा य्याश्चार्यः यात्राश्चार्यः यात्र्वः या त्रिः स्ट्रान्तः श्चेरः त्रे प्रत्रि । त्रः स्रो

च्याम्यासदे सेट देव दी

न्हें न् रुट्योशयार्वे न् व्यापाश्चर्यार्वे न् रहेश्यः है यह न् रहे व

इ.क्रेट्र.जयायायायपुरक्षीला क्रुयाट्र.जयायायायपुरक्षीला

देश्चीमा स्थि प्राया के स्थान के स्थान

सर्व-शुस-र्श्वनायीः मावयः ग्रःमार्वे दः ग्रे दः सळ्वः हे दः सः दे त्यः स्वान्यः ग्रे दः स्वान्यः स्वायः स्वान्यः स्वायः स्व

বাইপ্রমা

च्यायायाया मुत्राच्यायाया स्वाप्त्राच्याया स्वाप्त्राच्या

५८:स्र

ह्याश्वर्योत्रः संदी

ने'त्य'महेन'न्याप्ति द्वा हिन्द्वा हिन

क्रम् अत्र मुक्ष प्रमेल मी क्षेत्र में स्वर मुक्ष प्रमेल मुक्ष प्रमान क्षेत्र में स्वर में स्वर में स्वर में स

> श्रुःर्केषायान्यः निवास्त्र । श्रुःर्केषायान्यः निवास्त्र ।

रे विद्यम् अप्यान्य विद्यम् स्थान्य स

येषु निने मणान्तर में तर्थेषु

ने खुर दर श्रुर हे न भन सं या महिश

ख्र-इन्यावयानवीं न्यान्ना नेति नेत्रान्त्रा । प्र-इन्यावयानवीं न्यान्यां नेति नेत्रान्त्रा । ख्र-इन्यावयानवीं न्याने

श्चित्र में अप्याप्त स्वाप्त स्वाप्त

क्रन्सित्रम्सायम्याची क्रिया ये दुर्ग्युमार्यते मुसायन्त्रम् या स्वाया स्वया मेन्या मेन्या

म्वास्त्राची ने व्यवस्था उत्ता म्वास्त्राची स्वास्त्राची स्वास्त्राची

বাইস্থা

नेवेर्नेव नन्न नाया महिया

ख्रार्ट्स् न्यल्य प्राप्त्रे श्राप्ता ख्रार्ट्स् प्राप्त स्वर्त्ते । व्यवः विष्

८८:स्र्

सुर-र्देव-च-१५-च-५देश-व्य-वाशुस्रा

स्ट-द्र-रेवि-र्नेव-याग्रायायायायाविद्र-योद-योद-याद्र्या स्ट-योद्ध्या यवव-य-वद-यवि। यवव-य-वद-यवि।

55.31

सुद्र-द्रदः सेंदे देव स्वाम्य याया महिंद हो द्राये दा सही

गान्व केंग्र श्व भोर्व मंत्र भार्य ।

ये दु 'निन' मान्त 'में तु

य्यास्तर्भया श्राम्यस्य विदास्यस्य विदास्य विदास विदा

ने त्र्वीयाः हे अप्तयाः यश्यः त्रश्चरः हे। । श्चार्तेवाः यश्याः यहायः स्रोत्।

देश्वर्ष्ट्रम् विवार्श्वम्य श्रुव्याय हेर्न्य स्वार्ष्ट्रम्य स्वार्ष्ट्रम्य स्वार्ष्ट्रम्य स्वार्ष्ट्रम्य स्वार्ष्ट्रम्य स्वर्ष्ट्रम्य स्वर्ये स्वर्ष्ट्रम्य स्वर्ये स्वर्ये

ने न पार्वे न पार्थ में पार्य में पार्य में पार्थ में पार्थ में पार्थ में प

ग्रान्यः भेरः हे अप्तर्शे से दारे।

ह्याशः इस्याः श्रुवः स्थाः स्थितः स्थाः । ने व्युक्षः स्थान्य स्थान्य

ने भूर प्रायव्यवस्त्र स्थ्र मि प्रायव्यवस्त्र स्थ्र स्य स्थ्र स्थ्य स्थ्र स्थ्र स्थ्य स्थ्य स्थ्य स्थ्र स्थ

यिद्धान्त्रभारतिः द्वान्त्रभारतात्रः स्त्रुचः स्

श्चांते निर्माण नहेत्र माउत्। । दे प्यट पर्दे द उसा नहेत्र माधिता। श्चाधिका सुनाम से प्रसुन सेता।

ने सूर शु वुर म्यायाय राजा शुर्या।

सुर-वी-र्नेद-वाबद-वन्द-ध-ध-वादेश

द्रार्सि । द्रार्थित्रम्हेन्यः ह्रेयः प्राप्तानीयः ग्रुवः प्रित्तायः विष्णः श्रुवः ग्रुवः स्रोदः स्रवः प्राप्तानीयः ग्रुवः प्राप्तानियः ग्रुवः ग्रु

द्यात्य प्रतिवास्य प्रस्ति । व्यात्य प्रतिवास्य प्रस्ति ।

येन्यरःश्रृंदःधेदःदेन्यःधेदःदेन्। यम्यरायदेःह्रेयःधेदःदेन्।

ख्र-द्राधिः क्षेत्र क्ष्या क्षित् क्षेत्र क्ष्या क

श्चित्रत्वेत् स्थान्त्र स्थान्य स्थान

श्चितः द्वार्थं त्रिक्षं त्राय्यं त्रित्ता व्याप्ता व्यापता व्याप्ता व्यापत्य व्याप्ता व्याप्ता व्याप

ये दुःचनिः सःग्नन्दः देनः ये दु।

क्षेत्र निर्मेत् क्कित् स्वापत् से स्थान्य स्

ন্ত্রিম'না ই'র্ন্তব্দুইম'ন্ন্ত্র'ম্ব্রম'ন্ত্র্রম'নইন্'র্দ'ন্ত্র্রম'নবি'ইম'ন্মন্'ম্রম্ন'ম'রি।

> णर्यं त्रह्म्याः हेत्र्यह्म्यः या । हेश्यः द्रयाः सेद्यः याः प्रयाः प्रयाः । देशः दः हेश्यः शुः द्रयाः यः यथा । य्याश्रः प्रशः द्रप्याः यः यथा ।

खुटाने न्वाको नें त्र्या स्वाका स्वा

नेश्वन्दिशः इस्रश्यित्येत्रः सदि। इस्रश्याद्वना उदः ह्रेशः त्यना यश्या। इत्तर्ते प्तर्या अस्ति। ने वर्ते त्य्यश्चे अप्येद विश्वास्त्रम् ।

कुः सळं तः ते स्वः त्रें सः सं द्वा स्वः त्रें त्रा द्वा स्वः हे सः स्वः त्रा हे सः हे सः त्रा हे सः त्रा हो स्वः त्रा हे सः त्रा हो सः त्र हो सः हो सः त्र हो सः हो सः हो सः त्र हो सः हो सः हो सः त्र हो सः हो सः हो सः त्र हो सः त्र हो सः त्र हो सः हो सः त्र हो सः हो सः हो सः त्र हो सः हो सः हो सः हो सः त्र हो सः हो सः हो सः त्र हो सः हो सः हो सः हो सः त्र हो सः हो

खुरम्थायते देवा से निर्मा के प्राप्त में के प्राप्त के

षेतुःचिन्धःचान्दर्भेद्वाःषेतु।

ग्रम्सेनम्बिन्या गर्नेनम्बन्सन्ते। सुनिनम्बन्सन्तेनम्बन्तेनम्बन्सन्तेनम्बन्तेनम्बन्सन्तेनम्बन्सन्तेनम्बन्सन्तेनम्बन्सन्तेनम्बन्सन्तेनम्बन्सन्तेनम्बन्तेनम्बन्सन्तेनम्बन्सन्तेनम्बन्तेनम्बन्सन्तेनम्बन्तेनम्बन्सन्तेनम्बन्सन्तेनम्बन्सन्तेनम्बन्तेनम्बन्सन्तेनम्बन्सन्तेनम्बन्सन्तेनम्बन्सन्तेनम्बन्सन्तेनम्बन्तिनम्बन्तिनम्बन्तिनम्बन्तिन्तिनम्बन्तिन्यम्बन्तिन्यम्बन्तिन्यम्बन्तिनम्बन्तिन्यम्बन्तिनम्बन्तिनम्बन्तिन्य नन्दर्दे।। ব্যষ্ট্র শ'শা

सुरावी प्रोरावर्हें प्रायम्यावित्यवाया विश्व

रे वेंदरहत तुर्वासाधित है। धेंदरमें से हे रा हे रामदे द्वे ता हेंदर यदे यत्र त् क्रें र न न न व्यापित है। वेश यदे न में या कें न यदे यह स्व र्श्वेर:नर्दे।

न्दःसी दे चेंद्र उद्यात्तुः नः संभित्ते विद्या स्था के सामने द्वी त्या के क्षा माने प्या के का माने प्राप्त के सामने प

रे र्वेट उत्र हु न अधित है। धेंट परे हिन डेशमायने सत्रुव र्श्चिम्रायायाया विष्यापादि । द्याया ह्यायाया या पीता द्या ठे सूर वुत र्सेट स धेव मः धेव वे वा

> रे'र्नेर'ठम ह्रूर'शे'वर्रेर'या। ने म्यायायायादा विया पर्दे दायस प्रमा ने श्री र रे प्यान्ये अंत उद्या ने वे शुव सेंदासाधीव वर्देन।

ह्नेन् स्थायन्य स्थान्य स्थान

यहेगा हेत त् ज्ञाना विषा यश्य से दाश ह्या शहे । श्रुत से दि स्थान स्थान

न्में प्यने हिन्द्य प्याप्त स्था व्याप्त स्था । ने अत्राप्त प्रमाने देश क्षेत्र हिन्दी । ने स्वित प्रमाने देश क्षेत्र हो स्था । में क्षेत्र प्रमाने क्षेत्र हो स्था ।

ये दुःचने संग्नन्द में दु

देश्तर्वित्वत्त्र्र्त् कृषायि विश्वायाय विद्वा क्षेत्र विद्वा क्ष

मित्रेशमा त्रुपाणेवाही विशासकात्रीयाः हिन्सकायवात् हेर्

देश्वर्ष्ण व्याप्त विष्ण विष्

रे'र्स्यार्थायाद्वीया'यर्देन'या। रे'र्स्यार्थ्याद्वीया'यर्देन'यर'यसुर्या।

ने श्वेरने त्यान्ये से ना उन्हा । ने ते शुक्र सें ना स्थित त्यें ना ।

सदसम्ब्रामार्के साउव। ये द्राप्ता दे दे दे द्राप्ता के स्वर्ण के

न्ये प्यने किन्न्य प्याप्य प्याप्य प्याप्य प्याप्य प्याप्य प्याप्य प्याप्य प्राप्य प

रे.चूर.वर्यायायार्यर्यायायार्यः वीयाः श्रीयाः विस्थायाः विस्थायाः

ये दु 'चले 'स'मान्द 'र्ने दा हो

यवाकासकायार्वे न्यादे श्री दे अळ्व छेन् न अव स्यो केन प्ये स्यो श्री मा विका या का का वा का स्था के स्यान स्था के स्था के स्यान स्था के स्था

> यदेराधरायाः तुराद्वाः श्रेषाशाः था। यदेवाः हेवावादेरायदेः श्रेरा। यद्वाः हेवावादेरायदः श्रेरा। यदः यशाः यह्याः यरः यशुरावाया। यदः यशाः यह्याः यरः यशुरावाया।

दे.चॅट उठ ज्ञानि श्रे भारते ही मा स्वाप्त स्व

यायाने यायम् ने यायम् ने यायम् यायम्यम् यायम् य

साधित्रप्राययम्य ह्रिम्।

ये दुःचने संग्नान्त में ताये द्य

ন্যবাশ-মন্ত-প্রি-ব-অ-বার্গ্ণ

क्रु अळ्त उत्रक्षे क्रु खु खु यारे यार या सूत्र या दी

> न्देशः संज्ञान्यः ने।। रे केंद्रः उत्राययदः नर्ज्जेषाः यासेन।।

क्र्यास्त्र म्रायम् याम् क्रिया ये दुर्ग्य स्थानि म्रायस्य स्यस्य स्यस्य स्यस्य स्यस्य स्यस्य स्यस्य स्यस्य स्यस्य स्यस्यस्य स्यस्यस्य स्यस्यस्य स्

न्त्रान्त्र्याक्ष्म्याधित्र्द्द्र्याचे त्या क्ष्म्याद्व्या स्वित्र्या क्ष्म्याद्व्या स्वित्र स्वत्य क्ष्म्याद्व स्वत्य क्ष्म्याद्व स्वत्य क्ष्म्य स्वत्य स्व

न्हें राने से न्व

नर्ज्ञ्जारक्ष्याप्य प्रस्थित्।

र्भः विद्याः स्थाः क्ष्यः विद्याः स्थाः क्ष्यः विद्याः स्थाः क्ष्यः स्थाः स्थाः

येषु निवे मणावन में व येषु

यहिरामा कुःसळ्व उव साधिव मंदे श्चा धुवास मे सम्मान स्वृत माया मह्या

नश्रुवःमः ५८। ईन् श्रुष्टः ५८। र्नेवः नश्रुः नर्दे। ५८: वे । १८: वे । १८:

नेतिः श्चेनः निर्देशः नेत्राः स्वर्धाः स्वर्धाः स्वर्धाः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर

म्वास्त्र क्रिस्ति क

বাইশ্বনা

र्हेन्:श्रॅनःवे।

नायाने यायम्ने मुनाना ।

नायाने ना नुरार्श्वनायाय स्त्रात्ते स्त्रात

ने ने निर्देश क्रेंनश यश गुन धीता।

नम्रेंद्विन्यतेः र्देन् त्रान्ते स्त्राने त्री मान्त्र स्त्री मान्त्र स्त्री मान्त्र स्त्री मान्त्र स्त्री स्त्र स्त्र

ন্বাম্প্রমান্ত্র্যান্ত্রমান্ত্রমান্ত্র

नायाहे दे द्वाया हा नवे हु। नावा का माया नुनाय राष्ट्र विकास के वि

रे वेंद उद यद न केंग से द हिया

ये दु निव भगवित में व से दु

रे वित्र उद त्यवर वह श्वेत्र प्रेर दे र श्वेत्र श्वेत्र वित्र श्वेत्र श्वेत्र श्वेत्र वित्र श्वेत्र श्व

उट्टान्छिट्टाने प्रमीयान्याया । ययायायान्ये प्राचित्राच्या । ययायायान्ये याच्याच्या । उट्टान्यायायाच्याच्या । उट्टान्यायायाच्याच्या ।

र्देवः व्यवस्थ उद्दार्शः व्यविश्वस्थ वर्षे द्वः प्रवस्थ व्यव्य व्यवस्थ विश्वस्थ व्यवस्थ विश्वस्थ विश्वस्य विश्वस्थ विश्वस्य विश्वस्थ विश्वस्य विश्वस्थ विश्वस्थ विश्वस्थ विश्वस्य विश्यस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्

र्नेत्र नशुः नः यः नाशुः आ

इस्थान्या ने न्यायीय स्यानायि देने ने नि

८८:स्र्

न्ट्रशकी

यदेशके यद्देशयह्यायाणे।।
श्राम्मश्राम्भग्राम्भश्राम्भग्राम्भश्राम्भग्राम्भश्राम्भग्राम्भश्राम्भग्राम्भश्राम्भग्रम्भग्रामभग्राम्भग्रामभग्रा

ध्राचनित्रवित्रियाश्वाति श्रित्रे श्रित्र हित्र हित्य

বাইশ্বা

ने'न्या'योश्रायुव'सदी'र्नेव'दी

देशक्षः भुः इस्रश्यः शेक्षः भी।

र्नेत्रप्रायः केत्रप्रमें मार्यः या । यार्नेत्रप्रायेत्रप्रम्य स्वर्धिता

श्चार्यम् स्वार्थन्य स्वार्य स्वार्थन्य स्वार्थन्य स्वार्थन्य स्वार्थन्य स्वार्थन्य स्वार्थन्य स्वार्यस्व स्वार्यस्व स्वार्यस्व स्वार्यस्व स्वार्यस्व स्वार्यस्य स्व

य्या म्हा स्ट्रा स्ट्र

বাঝুম'মা

म्यायायाः हे यान्यमाययात्राचन्त्रः नुस्याययात्रः वित्रायाः हे यान्याययात्रः वित्रायाः वित्रायाः वित्रायाः वित्र

क्रेशन्द्रपाष्ट्रेश्वाच्यत्त्रप्त्याच्यत्रः द्वीश्वाच्याः । प्रमाश्रेश्वाच्याः यथाः च्याव्याः च्यायः च्याव्याः च्यायः च

य्याश्वास्त्रः हेश्वाद्या हेश्वाद्या स्था स्था हेश्वाद्या हेश्वाद

ये दुःचनि सःगन्त देन से द्य

याद्गेरान्या धिन्रकेर्यान्याद्गेर्याम्यान्यन्त्रम् स्वा

> शुन्द्राच्या । द्वीयायानसूत्रिक्ष्याची । सुन्द्राच्यायानसूत्राची । सुन्द्राच्यायानस्त्राची ।

हेशन्यवाविष्ठश्चे हेशन्यवाकुष्ठश्चे हेशन्यवाकुष्ठश्चे विश्वाच्ये हेशन्य विश्वाच्ये हिन्द्य हेशन्य विश्वाच्ये हेशन्य विश्वाच्ये हिन्द्य हेशन्य विश्वाच्ये हिन्द्य हेशन्य विश्वाच्ये हिन्द्य हेशन्य हेशन्य हेशन्य हेशन्य हेशन्य हेशन्य विश्वाच्ये हिन्द्य हेशन्य हे

क्रम् अत्र मुक्ष प्रमेल मी क्षेत्र में स्वर मुक्ष प्रमेल मुक्ष प्रमान क्षेत्र में स्वर में स्वर में स्वर में स

नडश्रासाउँ श्राची त्यायायायायी तथा विश्वान्य स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्य स्वर्ये स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्था स्वर्य

सर्विःशुसःहेशः द्रमगःगर्वेदःयः सेव।।

भ्रवसाने स्थार्द्व सुयान्द्र स्थार्थ्व साहे सान्या क्रिन्य स्थान्य स्थार्य स्

নাপ্যুম্ম'শা

सर्देव-शुस्रान्तीयायान्यते सुंवावानाशुस्र

सर्देव शुंश श्री शामित दिन स्वार्थ । प्रमान स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ । स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ ।

८८:स्र्

सर्विःशुसःश्रीशःगर्वेदःसदेः स्वादी

सर्देव-शुस्राश्चीशामविद्गायदे।।

यर्देव् शुया ग्री या न्या नहता श्रूम श्रूम गी 'र्ने वा या गार्वे न या यदि 'या यदि 'या यदि 'या यदि 'या यदि 'या यहि न या यहि न यह स्था यहि न यह स्था यह न यह स्था यह स्थ

श्चित्रं न्या स्थान्त्रं स्थान्य

য়ु'ते' ग्रुक्ष' श्रे' हिन्। श्रें ना श' श्रें ना श' श' श्रें दें ने श' शें हिन् ना श्रें ना श' श' शें ते ' श्रें दें ' श्रें ' श्रें दें

বাইপ্রমা

र्ने तः श्लेष प्रायः प्रायः वि

हत्रःयाहेशसे न सूर शुराया । ने ने ने ने ने न न

यर्देन:शुय्रः र्नेत्र-दिन्न विश्वायन्त्र-सायाः दर्गे श्वायः स्वितः शुय्रः विश्वायः यात्र स्वायः स्वयः स्

क्रिंट्र व अर्द्र शुअ शु रामार्वे द तशुरा।

र्रेन्द्रिन्देन्।

ञ्चनाः अर्थेनाः भवेः अळवः हेनः उत्। । श्चे वे निर्मे अतः सेन्दे में धिव। । ने श्चे मने निमम्

देन्त्रं ने हिन्द् श्री व्या विष्ण विष्ण

বাধ্যম'না

सहत्र गुःश्चेर्भायदे न्वेर्म्भायायायहिश्

न्देशकी

यहॅं र शुया शुं नयया निर्देश निया श्रुवे स्था श्रुवे श्रु

ल्या हुँ वा स्वराधी निर्देश ह्वा स्वराधी स्वराधी हैं निर्वराधी स्वराधी निर्वर हैं निर्व

বাইশ্বনা

र्हेन्श्वरःवे।

इयःगुव्दार्ह्ण नहेवः श्री वा विकास विकास

स्टायळवाले याचे श्रुयाण्या है याचा याचा है या

ने पी क्रेंनश ग्रीश मार्ने न भवे ही मा

सक्र गुरान्तर सेंदे हुँ न खुरान नि ।

रटाहेब्यार्टि वेश श्रूष्यायि द्वीयाया क्ष्याया क्ष्याया स्वाप्ताया विद्या विष्ठ विद्या विद्य

र्धित्रायार्डेन्'ग्री'न्वेरिंग्या इस्यायरुन्'ग्री'न्वेरिंग्या नेत्र'यर्थु पर्वे । न्नःचे । र्वेर्याण्डेन्'ग्री'न्वेरिंग्यी'न्वेरिंग्यी

सर्देन्'श्रुस'य'र्सेन्य्रास्य'स्य स्याप्त स्याप्त विशः श्रूर्स्य स्याप्त स्यापत स्

याविव:रु:केंग्रां उव:याविव:यावी ।

दर्शयः सेन्यम्य वित्रः प्रस्ते स्थाः स्था

वज्ञेषासेन्यावदायाम्द्रिंपस्याभूनयाग्रीम्भूनाज्यासीम्

यम्भेर्यायदे के न न मन्द्रित या ने या के या के या के या निर्मा या विषा र्रेन्द्रिन्दर्न्यावेश्यदेक्षियायश्राहेष्यश्चेत्रपदेख्चिर्छेर

ने शूर

र्नेन'यरे' अळंन'हेन'ग्रेम'र्हेग्य'ग्रूर'।। रटानी कें या उदार्श्वेया राया दी। कैं अ'ठद'य'दे 'मार्दे द'मश'गुद्र।। गर्वेद्र त्यूर वेश वेश्यून देव है।।

हे अन् नित्र परे दें व परे हिंग्य श्री अळव छे न य न हे व व य हैंग्र नेत्र ग्रम् रम्मे हेत्र हैं राउत् वेर हैं राय हैं राय हैं राय हैं थॅर्ने रेशस्यमे हेर्के रहेर के शास्त्रमार्थे राम्यमे राम्यम् स्थानिक स व्यानार्वे न प्यत्र प्रमुत्र । ब्रेश सुत्र प्रवे में व उत्र प्ये न प्रवे सुत्र

> हेत्वे त्याय नर शुराय थेया। ने महेव मं वे प्याय मदे ही मा

रद्यो हेत्यावि केंश उत्यापित्र मित्र भूत्र भूत्र भीत्र मुत्र मुत्र मित्र धर वया हेत्र वावि केंश उत् ग्रुव धर द्याय विर विवाश धर ग्रुर ध

ये दुः निनं भागान्त में नियो दु।

यहिकाम निकारम्य प्रमान प्रमान

क्यानडर्ग्ये र्वेशयायाम्स्या

न्त्रीं क्ष्यान्त्री।
प्राचीं क्ष्यान्त्री।
प्राचीं

न्वें अन्यन्दें अन्ते।

गालवर्त्राते स्थित् स्था उव् के शा । नश्चन ज्ञा भवि ले श्वा न हित्र प्रिये श्चित्र । ने यार्वे न रहे न भीवर प्रत्य से स्था । ने श्वा न स्टर्गी के शाउवर श्चे शा ।

रद्याः हेत्रः क्रें भारत्या विश्वः श्री भारत्या प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र प्राप्त प

र्वे सूर्यापित देवायापा भ्री निराद्या राष्ट्री के या उत्तर है। भ्राप्त के या प्राप्त के या प्राप्त

देश्यः यदि सः स्टाः हेत् विश्वः श्र्र्यां स्विः द्वीं श्राः यदी व्यक्ष्यः यदि रहेत् विश्वः श्र्र्या विश्वेतः यदि विश्वः यदि रहेतः यद्वा या यदि रहेत् या यदि रहेत् या यदि रहेत् यदि रहेत् यदि यदि रहेत् यदि यदि रहेत् यदि रहेत् यदि रहेत् यदि यदि रहेत् यदि

दे प्यः के अं उद्याद्यवः विवा पः हे प्युः तुः दे प्यावा प्रश्रः हे अं प्रमः श्रेः वशुमः विवे देवः के प्येदः वे द्या

त्र्यान्यत्त्र्यः स्वर्त्त्राय्यात्र्व्यायात्रः व्यान्यत्त्रं स्वर्णः स्वर्णः

गायाने न्यासावता उसार्ते या दी मार्ते या गानि सागा या सहता सूटा नु

येषु निने मणान्तर में तर्थेषु

मुनःसरः मुश्रः दशः ह्याः हशः धेदः प्रायाः सरः रेयाशः स्ट्रा यहेवः सेटः र्केशः उदः नुः पञ्चरः प्रशः देवाः मुः वेः द्या

भ्रे अर्द्धन्याने ने स्वे श्विन्यस्त्रे स्वायः क्ष्यः विश्वा व्यायः विश्वा विश

ळ्ट्रसंदे द्वरायमेया में १ केवा ये दिन्दिरा में १ देश निवास स्थान स्थान में १ वि

नेश्वन्द्र्स्यार्थस्य स्थान्य विषय स्थान्य स्

त्रायान्य के विवार्षित्।

বাইশ্বন্

हें न श्रदायाया है या

र्वेनाःहेनाःश्वान्यदेःकेन्धित्यःन्ता वेनाःहेनाःनेःश्वेनःन्येनः निह्नेन्द्रभानेःनगनाःग्रमःश्चेत्रःन्येनःनिह्ने। न्यःस्

ब्र्याः ह्र्याः व्यान्त्रः केन् ध्येवः यः वी

वर्ने प्यर रें व श्री श श्रुव से व व व ।

ये दुःचनिः संग्नान्तः र्ने तः ये दु।

> यदेवन्दे त्यादः विवाः क्रेंशः उवः विवा । द्यदः विवा यगायाः पः पः पः पः विवा । क्रेंब द्रा द्रा प्रकः प्रवः विवा क्रेंब क्षेत्रः विवा ।

यर्दे दः प्याया यद्रः स्त्रे त्राया विद्या व्याया विद्या विद्या

यहिरामा विवाहिवाची श्वेरित्र प्रतिस्वाहित्वर प्रतिस्वाहित्य विवाहित्य स्वाहित्य विवाहित्य स्वाहित्य स्वाहित्य स्वाहित्य

र्मेर्न्स्यायदःश्वाश्यावन्द्रम्याः वीश्वा

ठेगारुम्'श्रुग्राग्रामु'श्रेव्'ध्रेम्।

निम्म्यान्त्रीः व्यान्त्रम्भः स्वान्त्रम्भः स्वान्त्रम्यान्त्रम्भः स्वान्त्रम्भः स्वान्त्रम्यः स्वान्त्यः स्वान्त्रम्यः स्वान्त्रम्यः स्वान्त्रम्यः स्वान्त्रम्यः स्वान्

विश्वानविद्यायःश्वानविद्याः दे निविद्यानवःश्वानशः स्त्रेशः स्वतः स्त्री। दे निवदः दिश्वानवः श्वान्यः स्त्रेशः स्त्रेशः स्त्रेशः स्त्रेशः स्त्रेशः स्त्रेशः स्त्रेशः स्त्रेशः स्त्रेशः स

वेश्यत्वित्त्यः वेश्वत्व त्रात्वे त्रत्वे त्रात्वे त्रत्ये त्रत्वे त्रत्वे त्रत्वे त्रत्वे त्रत्वे त्रत्वे त्रत्वे त्रत

येतु निन्मणान्त निन्येतु

हैंगा-सेन्-सासाधित्रि। सरसामुसाससाग्ची-त्रमानिदेन्द्रिस् केंसान्त्रित्वास्य क्षेत्राच्यान्य क्षेत्राच्यान्य क्षेत्राच्यान्य क्षेत्राच्यान्य क्षेत्राच्यान्य क्षेत्राच्यान्य क्षेत्राच्यान्य क्षेत्राच्यान्य क्षेत्राच्यान्य क्षेत्राच्या कष्या क्षेत्राच्या क्षेत्रच्या क्रित्रच्या क्षेत्रच्या क्षेत्रच्या क्षेत्रच्या क्षेत्रच्या क्षेत्य क्षेत्रच्या क्षेत्रच्या क्षेत्रच्या क्षेत्रच्या क्षेत्रच्या क्य

ने स्ट्रिम् पर्देन प्रते न स्ट्रिम हिम्स पर्देन परदेन परदेन पर्देन पर्देन परदेन पर्देन परदेन परदेन पर्देन पर्देन पर्देन परदेन परदे

दे 'क्षेत्र'दर्स अर्थेत् 'श्रुत्र' स्था हे स्था है स्था हे स्था है स्

ने भुन गुरे ने भुन स्वाय विवा भेता।

देवे के अंडव नगागा समान मुन ज्ञान गागा समान है न के भा के देवे के अंडव नगागा समान मुन ज्ञान गागा समान के प्राचित के भा के देव के समान है न के समान है न के समान है न के समान है न समान है

न्द्रं अ. सॅन् म् श्रुन् प्रति त्र अ. स्वायः अद्देव स्त्र अ. श्रुव स्त्र स्वायः श्रुव स्त्र स्वायः स्वयः स्वयः

व्यास्तियः निर्देशः भी त्यान्यः स्ति । स्ति

यायाने ने स्वायन्त्र स्वार्त्त । डेवा उर्द्राश्चर्याय्य स्तुर्ध्य । यदे श्वर्यायाय्य स्तुर्ध्य । यदे श्वर्यायाय्य स्तुर्ध्य । यदे श्वर्यायाय्य स्तुर्ध्य । यदे श्वर्यायाय्य स्तुर्ध्य ।

न्यानि हें क्ष्यां क्ष्यां व्यान्य व्याप्य व्

र्ने।

र्टाहेद्रायावेश्वर्श्वराविष्ठाविष्ठाविष्ठाहिष्णिट्टी श्रद्धा क्रिया स्वाप्त्रा क्ष्या क्ष्या

यायाने प्रदी यायाने वाक्षेया श्राची । देशाव विवादी दार्ग प्रस्था हिना । देशाव विवादी दार्ग प्रदेश हिना । प्रमाया विवादी द्रमाया ।

न्यान्त्र क्षेत्र स्वान्त्र स्त्र स्वान्त्र स

येतु निन्धणान्त में तायेतु

येन्'सर'ष्या र्नेत'रेस'स'नवित्नुन्चेन्'स'न्नरक्षेत्र'उत्से ह्या'स'हेन्'ग्रे' यन्'र्सेयात्र'त्यात्र'न्योत्'रित्

ल्ने ने स्वाध्य स्वाध

स्राची प्रस्ता वर्षे प्रस्ता वर्षे प्रस्ता वर्षे प्रस्ता क्षेत्र क्षे

र्नेव नशुः नही

यादा से स्वास्त्र स्वास्त

> र्ट्स्ट्रिट्स् धिश्च क्रिंश्च विद्या । यार्दे ट्रिंस्य यार्दे ट्रिंसे द विश्व श्रू द या । यार्दे ट्रिंस्य यार्दे ट्रिंसे द विश्व श्रू द या । दे या विद्य या विद्य या या प्राप्त विश्व या स्ट्रिट्स । क्रिंस उद या विद्य या या प्राप्त विश्व या स्ट्रिट्स ।

न्धेर्न्त्र श्रुं वाश्राण्णेर्ट्र हेर् हेश्य प्रति श्रुं धिश्राय श्रेष्ठ श्रे

यःगर्वेन्। यद्येषः सेन्। यद्य

ये दुः निनं भागान्त में नियो दु।

স্ট্রসমা ড্রেস্বালি মান্সুসমার্মিশ মন্ত্রিদামার্মুর স্থাইর মান ক্রুমের্চর বি

याया है। श्वित् स्वत् स्वत् स्वाच्या स्वत् स्वत

 यायाधराश्चर्मे । ने न्याश्चित्रयाश्चित्रया श्चित्रया श्चित्रया । विष्या या विष्या विष्या विषया । विषया विषया विषया । विषया विषया । विषया विषया विषया । विषया । विषया विषया । विष

> यदःयवाः श्रेष्ट्रा । यदः यवाः श्रेष्ट्रा । इसः यद्येयः विस्तर्भन्तः देः योः श्रेष्ट्रा ।

वयानः श्रूर्याया विनाना स्त्रिताना स्त्राचा स्त्राच स नर्गेद्रायायार्थेशायवार्थेद्रायादाधेदायादे दे धेदादाधदाया है। सादे हिदा <u> ५८ हे अ शुःदर्शेय ५ में अ शें ले अ न १५ ५ में भी भी मा हे दे हैं अ उत्र</u> र्भेग्रायायायायार्म्यायायायायार्वे याउत्। श्रुर्नायार्भेरायाठेवारेदिः र्धेग्रमः र्भेत्रः भेतः भरः त्रया नेतेः ह्यायः र्भेतः पेतः पेतः र्धेरा

ক্রমান্তর শ্রী শ্রিদানমানার্বিদানার্মানার শ্রামান্ত্রী দ্বিদান করে শ্রা

यर्ने सहर प्रमान्ते कु मान्य से क्षेत्र परि कु सर्व न्दा क्या वर्षेयासहर्म्यस्स्र सर्वेद होर्ग्ये प्रमेष्य भर्गा प्रमाणविद पर ह्रेग्रथःसरः ग्रुःनर्दे।

प्रदेश सर्देशस्त्रम्थान्ये कुषायम् से सूँद्रायये कुष्यक्त्वी

श्चायक्रव ग्रायाधेवा ग्रयाय ह्या हे या शुप्तया पाळ दायायाधेवा रे-वॅर-उद-क्रु-व-सप्पेद-दें। विश्वायन्दे-द्यायी-भ्रवश्राकेंश उदाग्री: ই র্বান্বর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বা क्षरः ब्रूटः वी 'द्रे 'द्रदा दे 'त्यः वर्षे द्रुवः श्रेवाशः कुशः यरः शे श्रेवः यः हे ।

क्रन्यदे द्वयायम् यामे क्रिया ये दुरम् मुर्यायदे द्वयाय विनाय याम्यया मेया मेन

यदेशःनश्चनःणवःयमाश्चरःशःणे।।
केशः उवःकेशःशेः।।
केशः उवः रूरःमेः देःने व्या।
मोर्ने प्राप्ताः वे प्रश्नवः संभी वा।

त्यानडद्र भूर सूर वित्व क्षेत्र में दिर दे त्या वित् क्षेत्र वित्व क्षेत्र क्

ये दुःचनि सःगन्त देन से द्य

বার্ট্র শ:মা ক্ষারেল্রীঅ'মর্ল্স্সম'মর্ক্টক'ল্রীস্'শ্রী'স্মা'নপ্স্'মা'

न्दःस्र्री ॐसःग्रे:इिन्धरःयःवार्वेन्श्रेन्ग्रे:न्सःन्डवे:न्से:र्स्सःवात्रुटःनःदे।

> ने'य'र्नेव'वे'नश्रव'य'थे।। नेव'नु'न्ये'वे'र्सेण्य'र्यंय'न्हेन।।

दे त्यायदे मान्ने न्यायविष्ठ के भाग्ने निष्ठ प्यायन्ते निष्ठ प्यायन्ते निष्ठ प्यायन्ते निष्ठ प्यायन्ते विष्ठ प्यायन्ते विष्ठ प्रायन्ते प्रा

हिन्द्रन्यः प्रस्थान्यः प्रस्थान्ते । यात्रे स्वर्धः प्रस्थान्यः प्रस्थान्यः प्रस्थान्यः प्रस्थान्यः प्रस्थान्य याद्रे स्वर्धः प्रस्थान्यः प्रस्यान्यः प्रस्थान्यः प्रस्यानः प्रस्यस्यः प्रस्यस्यः प्रस्यस्यः प्रस्यस्यः प्रस्यस्यः प्रस्

> स्वःर्न्वः ह्यः श्रीः यळ्वः कृतः उव्या । सर्वेदः न्यः यहेवः याववः प्यतः प्यवा । सः सर्वेदः श्रितः स्वः स्वः स्वेदः या । दसः यख्यः यः यः प्यति सः सः स्वेद् ।

हुयः देनाश्वाश्यम् इतः इतः श्वेदः स्थाः प्रश्नेतः प्रश्नेतः श्वेदः श्वे

মার্ম্রমান্তর শ্রুমান্র্রা।

सर्वि-शुस्राश्ची सामास्य निवास्य निवा

ह्यन्य स्टब्स्येव यावव स्पूर्ति । श्रुत्र व शुत्र संस्थान संस्थित स्थित स्थित स्थान

हिन्दें स्वान्ते स्व

क्रन्सित्रम्सायम्याची क्रिया ये दुर्ग्युसायि मुसायन्त्रम् स्थायन्त्रम् यो स्थायन्त्रम्

বাধ্যম'না

ने अपने प्याहे स्ट्रम्यार्के न स्वी स्वी व्यायाया है आ

श्चेत्रशेष्म् त्रम् त्रिंत्रमानम् न्यान्य क्षेत्रश्चेत्रण्यम् न्यान्य क्षेत्रण्यम् न्यान्य क्षेत्रण्यम् न्यान्य क्षेत्रण्यम् व्यान्य क्षेत्रण्य क्षेत्रण्

रेग्रायः प्राचित्र हेन्या । प्राचित्र । प्राच्या । प्र

यात्र.धे.पर्च.कुं.प्र्या.पर्च्य.पर्चीरा

यायाने प्यत्या यह स्था यह प्राप्त प्रवा प्रवा वित प्रवे प्राप्त प्रवा प्रवे प्राप्त प्रवा प्रवे प्रवे

श्रद्धे द्रस्य न्या कुरस्यू मा

येतु निन्धणान्त में तायेतु

नेशवर्षेवर्त्रवा ग्रुसेन्या।

श्चित्रः ते अः इत्यान्यः विष्णः त्रिः विष्णः विषणः विष्णः विषणः विष्णः विष्णः

ने भिरावन्य अस्ति में प्राप्त । सर्वेदाय से दासे स्टीस में स्वीता ।

ळ्ट्रास्त्रे इसावम्याम् क्रियाये दुर्म् मुसायि इसायन् प्रायम्यायास्य मु

यत्रायम् उत्हर्भाग्वित् ने र्ह्या अर्थे स्वाप्त स्वाप्त श्रीत्र या स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व या स्वाप्त प्रद्य स्वाप्त प्रद्य स्वाप्त स्वाप

नेश्वास्यावन्यः योर्वेत् छेत्रः धेत्। । इत्रायम्यावन्यः योर्वेत् छेत्रः धेत्। ।

देशन्। हिन्देश्या शुर्था हिन्दा स्था हिन्देश स्था । हिन्देश स्था प्रदेश स्था प्रदेश स्था प्रदेश स्था प्रदेश स्था प्रदेश स्था प्रदेश स्था । हिन्देश स्था । हिन्देश स्था प्रदेश स्था । हिन्देश स्था प्रदेश स्था । हिन्देश स्था प्रदेश स्था । हिन्देश स्था । हिन्देश स्था प्रदेश स्था । हिन्देश स्था । हिन्देश स्था प्रदेश स्था । हिन्देश स्था प्रदेश स्था । हिन्देश स्था प्रदेश स्था । हिन्देश स्था । ह

प्यार त्रे ने न्वा निर्माणित । प्रमाणित । प

বাইশ্বস্থা

नेवे व्यव न्याया य दी

स्क्रिंत्रान्ड्ययाह्यायसेटान्न।

याउयाक्षेत् स्थान्याव्यक्ष्मा । श्चे क्षेत्र से म्हिंग्या स्यान्य स्था । यत्र प्रत्य त्विष्ण याव्य त्या ।

ने भी किया कर स्था मारुवा नि स्था के स्था के

यहेस्रान्तेषाःश्चेत्रायह्यस्य प्रहास्त्रमाहेसाः प्रहास्त्रमाहेषाः वहास्त्रमाहेषाः वहास्त्रमाह

रेन् अर्थे। विकास स्थानिया स्वाप्त स्

य्यन्यःश्रीयाश्वास्यःस्यःसःधिद्याः।

ये दु निवे भगवित में तु

यायाने प्युत्सामात्राची क्षित्र र्यं स्वसान इससाने क्षिया सार्के द्रार्थ स्वराधि स्वसान इससाने क्षित्र स्वासान क्ष्य स्वराधि स्वसान क्ष्य स्वराधि स्वसान स्वसान क्ष्य स्वराधि स्वसान स्वसान स्वराधि स्वसान स्वसान स्वराधि स्वसान स्वसान स्वराधि स्व

ख्राम्य प्रमान्य प्र

क्रन्सदे द्वरादम्या मी क्रिया ये दुर मुरापदे द्वराय निरावर त्यराय राष्ट्र म

> र्नेत्रं ने अर्थेन् अर्यः स्वायः प्रवित्। । ने प्रीयः स्वयः सुवदः हिंग्यः प्रायेन्। ।

यत्रः यत्र । स्थान्य । स्थाय । स्थान्य । स्थान्य । स्थान्य । स्थान्य । स्थान्य । स्थाय्य । स्था

इ.ज.श्र्याश्रामश्राम्यत्रः त्यां व स्वापार्यः वी

धुन् ग्रे क्रें त्राया हिंग्या ग्राम्यया ग्राव्य ग्रे के क्रिंग्या के लि

বা

श्चिनः हेन स्वायाः सेनः निवा । धेनः हनः म्ययाः सन् मेना स्वायाः सेनः सेना ।

भ्रेत्रसंभित्रसंदे व्यवसंगित्वत् भ्रीः भ्रेत्रसंदे प्रवास्त्रम् विवासः दे स्वासः स्वत

क्रम् अत्र मुरायम् वा क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र मुरायक्ष मुरायक्य मुरायक्ष मुर

क्रॅन्न्सॅन्सॅन्सॅन्स्न्स्न्याः निकास्त्राच्याः निवास्त्रेन्स्यः स्वास्त्रेन्स्यः स्वास्त्रेन्द्रः स्वास्त्रेन्द्रः स्वास्त्रः स्वस्त्रः स्वास्त्रः स्वस्त्रः स्वास्त्रः स्वस्त्रः स्वस्त्रः स्वस्त्रः स्वास्त्रः स्वस्त्रः स्वस

বাধ্যম:বা

देशमाब्दाधराहेंग्रास्यराद्यानही

प्रशास्त्र स्टर्ग क्षेत्र स्टर्ग स्ट

नश्रव नर्डे अप्येत्र म् ज्ञे । ज्ञवा निर्देश के अप्येत । ज्ञेत नर्डे अप्येत । ज्ञेत नर्जे अप्येत । ज्ञेत । ज्

यद्भार्यात्वयः द्वाराद्वार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थाः स्थाः

चै:च्यायाची च्याचाद्द्र्याची प्रवाद्याचाद्व्याचाद्व्याच्याची च्यायाची च्यायाची च्यायाची प्रवाद्याच्याच्याची च्यायाची च्यायाचीची च्यायाची च्यायाचीची च्यायाचीची च्याय

र्हें मः भिन्ती।
क्रिंग्यमः भिन्नि ।

क्रॅट.तर.विश्व.धेरश्व.तर.बजा रेयर.वेश.विश्व.धेरश्व.तवु.ब्रेरी श्रे.य. वस्र रुट्र ह्रव धिव हैं। विश्व पदि द्रा पठव दे के शद्र के श्व रही रें ने निर्वाहित्र या विश्वामा व्यावित्र या विन्या विश्व स्थान विष्य स्थान विष्य विश्व स्थान विष्य विश्व विष्य न्भे प्येत है। ने पा के या बस्य उन ह्न त के या प्येत वा के या या न प्यया ग्राम र्देव में निवे तुरुप्य से देन स्यूर विद्या क्षुन वस्य र उत्ह्व त् निवे वेव ग्री अन्य य उर्भ व किंवा ग्राम त्य अग्राम में व दे व स्था अग्री प्रवे व स्था स येन्यरःभुग्रायाप्रयात्वरयानेना क्षेत्राचययाउन्ह्रवर्ते वेयापदे क्षेत्राने हेन त्याने इत्यास में निर्दे तुरु मा पेन् निर्दे प्रायम प्रायस त्रूट्यायया क्षेत्राच्यया उट्राक्केंया उद्या की दि विंद्रा दित प्रदेश की विंद्रा विंद्रा विंद्रा विंद्रा विंद्र व्यायासेन्यास्य स्वाती देश्या स्वात्या स्वात्या स्वात्या स्वात्या स्वात्या स्वात्या स्वात्या स्वात्या स्वात्या यः क्षेत्रः संभूवार्यः वार्यः स्त्रः स्रयः यत्रेत्रः क्षेत्राः यगावाः या ते स्वगवाः सः <u> दः ह्रदः क्षेत्राः ग्रदः नग्रागः प्रश्रः क्षेत्रः उदः ग्रीः देः निदः प्रदः प्रश्रदः द्राः </u> নশ্বান্থ্য

গ্ৰন্থ।

यन यमा उन देन मानन से न मिने देन से में मुसा मुना है न न्यान्यस्य प्रति न्त्रा हे सान्यमा मी सामर्वे न के मार्के न में निया यासर्दिन सुसाग्री सार्वेदाया सर्दिन हे साग्री साग्रुवा सदि विवासिया स শ্ৰন্থ সম্প্ৰত্য নাৰ্কি দ্বাৰ্ণ প্ৰাৰ্ণ বি

ন্বিষ্ঠান্ম নহর মক্তর দ্বিদ্দ্দ্দ্র

सळ्त्र हेन्। ह्य चे सामित्र मार्ने नामित्र मार्ने नामित्र देवे अव द्याया था नह्रम्थायाः न्यामाः धर्ते । र्ट्स् सळंद्र'हेट्'डिय'केश'सदे'मोर्देट्'स'दी

र्श्वेन प्रमेन मुन्न न्यून गुः द्वेन पाने या न्युन पाने प्रमान विकास में प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के र्देव ग्रुम हेन । ने स्वाव के ह्याम न्दरन्थे। । सागुन नहें न सामा नर वश्या विश्वासाने हिन्दकन् नविन्दश्य नेवाश्वास्य वश्वास्य वश्वास्य वश्वास्य वश्वास्य वश्वास्य वश्वास्य वश्वास्य नसूत्रपर गुन्दर प्राचर्दि । विशः र्श्विषा श्री अळव हे दृश्विषा पाया

ग्रु.च.र्नुश्रामाश्रुद्याध्यायः उत्राधिम्।

ने ख्रिते निष्णि से मान्य निष्णि । ने ख्रित्र निष्णि ने ने प्ले के । से प्योत्ति मान्य ।

येत्र निर्मा विकास निर्मा विकास निर्मा निर्म निर्मा निर्म निर्मा निर्मा

नेवे त्यव न्याया याया यावे या

त्रःनतेःश्चरःनः वित्रः यः यह वार्यते यव द्वावा ययः यः त्रेत्रः य र्यते क्रेवः वित्रः ययः वश्चरः व त्रुतः यत् वित्रः यव द्वावा ययः यः त्रेत्रः य

न्दःस्। जुःनदेःश्चःदःक्ष्रःनःसिंकःतःवह्नाःसदेःत्वदःद्यायाःसःहे।

नश्चन ग्रित श्वराम ग्रित् । विषाम श्वरा शे में न श्वर सार्द्र या

यः वः नश्चु वः यरः ग्रुः नर्गे श्रायः नः श्वरः श्चु वः ग्रेनः न्यो नः विवः यः प्यरः वश्चु वः ग्रुरः श्रेः व्ये वः विदः। नः श्वरः वश्चु वः ग्रुरः वश्च दः वः विवः विवः वः प्यरः वश्च वः व

नेश्चित्रः श्चित्रः श्चित्यः श्चित्रः श्चित्रः

नश्चनः न्नेत्रः त्र्रम् त्रान्यः व्यान्यः व्यान्यः विष्णः व्यान्यः व्याव्यः व्याव्य

देशवाद्ये प्रत्याप्त्रवा विषया व

ने अन्तर्श्वेत्र ने वित्र श्वेत्र श्व

ह्माश्रःश्वरित् श्चरः र्स्। माल्वर् पुर्ने से सितः पुराश्चिमा। स्यायः गुर्वे ग्यातः सञ्जूनः स्यायः स्याय

देश्यश्याव्यत्त्र्याच्याः व्याव्याः व्यावः व्याव्याः व्

यहें राष्ट्र होत् । स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त क्ष्य न स्वाप्त क्ष्य क्ष्य

क्रन्यदे द्रमादम्या में क्रिया ये दुर्ग्य स्था देश द्रमात्र त्रमात्र व्याप्त स्था ये द्रमात्र स्था ये स्था ये

श्रुवःदगः प्रवः विश्वः द्रशः वर्षः प्रवः यवः यवः यवः यवः श्रुवः यवः यवः विश्वः विश्वः

वस्रश्चित्रः इस्यायवात्रः स्था । देश्यत्रः के प्रत्यात्रः स्याप्ति । इत्यत्रः के प्रत्यात्रः स्था । यत् श्चेत्रः इस्यायवीत्रः स्था ।

म्वीत्रास्त्रिः त्यस्य स्वात्वेत्रः स्वात्रः स्

सूर्या गुरायदे प्रता के सार्द्र से वा । सूर्या गुरि प्यवा के सार्द्र से वा ।

> न्याराची अर्गिया श्रुत्या अळ्वा हेत्या । ने प्याराच श्रुत्र शुर्त्र श्रुत्य श्रुत्र ।

दमेन्द्रग्रथास्य स्वाप्ताने । स्वाप्तान्त्र स्वाप्तान्त्र । स

বাঝুঝ'বা

नह्रम्थः द्यायाः सः सः महिशा

नश्चन जुदे र्देन या नहमा प्राप्त है साम बुद मी श्चु र साय नहमा

८८:स्र्

नशुनः चुदेः देवः यः नह्नाः सः दे।

र्श्विन द्वा मान्न निष्ण क्षेत्र निष्ण क्षे

यिष्ठेशस्य स्वास्त्र स्वास

यी । विश्वास्त्र स्त्र न्त्र स्वास्त्र स्वास्

नश्चनः ग्रुनः कें मान्द कें माश्य मा

नेते के निया निया के निया के

यायाने के साउदायाय म्यायाने स्था ।

वायाने निया स्वाया शेष्ट्री स्वाया शेष्ट्री स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्व

वर्देन् प्रश्राकेश परने निया सेन दें ले ता

नश्रुव नर्डे अर्डे ग्रुडे सेवा अर्थम्। स्ट हे द त्यह्या प्रस्त्यु स्व प्रेवा

नश्रुव नर्डे शर्श न्यो ह्या श्राण्य स्वार्थ हिन्द्र स्वार्थ स

देशम्बुदमी श्रुर्श्याय नह्ना यही

हिंद्र-सरस्य क्रुस्य स्थान्त्र स्वित्ते स्वाध्य स्वाध

युन्य नश्चन नश्चन

नशुनः ग्रु: श्रेवः परः हैं ग्रायः प्रेवः दें वः उवः धेवा

श्रुनः ग्रेनः नश्रुनः प्रतेः श्रुनायः हिनः यथा। देनः ने नश्रुनः ग्रुनः हिनाय।।

यान्त्रः क्षेत्राश्चार्यात्रः श्राह्मः श्रीत्र । श्रुतः स्ट्रः स्ट्रेन् स्थः नेत्राश्चारः स्ट्रेन् ।

धुः अः स्ट्रूप्तः अः त्व्यन् ने । अतः चुनः चुनः चुनः च्याः ने अः यात्र व्यानः व्यानः

> য়्र-देशम्ब्र-दिन्धेशः इयान्यक्षेय्यक्ष्यक्षित्रः विक्रिन्।

> वित्रः श्वाकः श्रेकः देनः वर्हेनः प्रका । वित्रः पवे व्यवकः श्रेकः प्रेकः प्रमः हेनाका ।

ये दुःचनि सःगन्त्र देन से द्य

বাৰ্ব শ্ৰী:ব্যানতবংশ্বন শ্বী:ব্যানান্য আন্ত্ৰী

न्दःस्त्री ह्वाश्रायानञ्जूनानुःश्चुनापदेःनुश्रायाश्चेदायान्यान्वयान्द्रवाषान्वदेःश्चेत्राधेन्यान्वावापान्दे।

र्मार्थायस्य स्वायः प्रमायः प्रमायः प्रमायः स्वायः प्रमायः स्वायः प्रमायः स्वायः प्रमायः स्वायः प्रमायः स्वायः प्रमायः प्रमायः स्वायः स्वयः स्

यम्यायायाय्त्रेत्रात्राय्येयाय्येत्रात्री ।

ह्माश्चान्यव्यान्द्राच्यायाचायाची । त्यायाची । त्यायाच

क्रन्सदे द्वरादम्याम् में क्रिया ये दुरम् मुर्यादे द्वरायन् न्यराययायायाय ये न

ने भुनने

यत्रयासेन्यने कृर्दे ले त्

साधीत्र विकाशास्त्र भी निष्ण साधीत्र विकाशास्त्र स्वाका स

ह्वाश्राण्डिः श्चित्राच्यात्र व्याप्त स्वाप्त स्वाप्त

बेदुःनवेःमःग्वनःर्नेनःबेदु

गहिशःम। ह्वाशः के शः हेन् वाबि वा खूद हेवा से वाद्याय प्रवाद वाद्याय प्रवि क्षेत्र वाद्याय वादि श्री

यानुनामदे ह्वाया ग्री हुँ व र नश्रव माने।

तर्निन्यः सेन्द्रः स्वायात्रः धिवा । से 'ह्या'यात्रवः क्षेयास्य न्दः श्ववः प्रस्रा । से 'व्याने 'क्षेत्रः हेन् चेन्द्रा । ने 'क्ष्रनः ने 'वे 'व ह्या प्रतः व्याना ।

ळ्ट्रास्त्रे इसावम्याम् भ्रियाये दुर्म् मुसायि इसायन् प्रायम्याम् स्याम्

यायसम्यानिक स्थानिक स

বাইশ্বা

नेदे कुंवा क्रुमायम्य विन्याया विवेश

म्राया क्षात्र व्याप्त्र व्याप्त्र

৴েন্ট্র ঘমমাত্তন্যাত্মবান্যান্ত্র্যান্যন্ত্র্যান্ত্র ক্রিমান্ত্রী মান্ত্র ক্রিমান্ত্র মান্ত্র মান্ত্

यदी या प्रवेश मा स्वेत या से दिन या विवास से प्रवेश विवास से दिन विवा

छन्। प्रमायाने प्रावित प्रहें न्या । श्चे 'ते 'हे अ' शुप्तह्या' प्रश्ना । ने 'छन' अ' धेत 'श्चे 'हे अ' शु। ।

शुं र न ने शश्चा था श्वा प्र श्व प्र श्वा प्र श्वा प्र श्वा प्र श्व प्र श्

वह्यायावज्ञास्य स्वराक्ति ।

श्चान्त्रात्मः प्रस्ति । स्वान्त्र । स्वा

रे-धेर-श्च-यावयःयःथी। भ्रे-ह्या-केर-ग्रीयःयोग्य-वियायाग्रु-या।

ळ्ट्रास्त्रे इसावम्याम् क्रियाये दुर्म् मुसायि इसायक्ष्म प्रमायाम्याम् स्त्राम्

देश'व'दे'ह्याश'द्रश'वठव'द्रद्र'वयाथ'ववे'द्रश'वठवे'श्चें व'श'वेद' धर'वया श्चें व'देर्घ ची'श्च'य'वाद्रश'द्रा'थ'शे'ह्या'घ'हेद'ग्चेश'श्चु'ह्या'घ' शेय'बेश'याशुद्रश'द्रा'वाद'वेवा'श्चु'शे'ह्या'घर'श'वयद्रश'द्रा'देवे'श्चेरा वाहेश'द्रा

दे.लट.ध्यात्र.श्र.श्र.मुग्य.त्य.याधेशा

वस्रश्चर्याचेत्राचंद्रश्चान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम्यान्त्रम्यम्यान्त्रम् स्वान्त्रम्यान्त्रम् स्वान्त्रम्यम्यान्त्यम्यस्वान्त्रम्यस्यान्त्रम्यस्यान्त्रम्यस्वान्त्रम्यस्वान्त्रम्यस

ख्यान्वरायात्रे प्रमायाञ्चानमा । श्रुत्रीमाव्यत्रात्रे प्रमायाञ्चानमा ।

श्चे वि । श्वर प्रमास से श्वर श्वर । । दे । यह प्रमास से स्वर से ।

यस्त्र व्या श्रु वस्त्र वित्य स्त्र श्रु त्या स्त्र स्वा श्रु त्या स्त्र त्या श्रु त्या स्त्र त्या श्रु त्या स्

द्येरःवः भ्रम्यश्यारः भिरःभःय।। विदःवेश्मिरः श्रेवः विश्वःयः प्रविदा।

ह्याश्रासम्बद्धा नियम्ब श्रीयात्र श्रीय स्थान स्थित स्थान स्थित स्थान स्थित स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

वस्रश्चर्यात्रम् व्याप्त व्याप वस्त्र व्याप्त व्यापत व्याप्त व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व्यापत

श्वार्मि'त्र'श्रम्भारुट्'र्थायोत्तर्भि'त्रेश'ते

क्रम् अत्र मुक्ष प्रमेष मुक्ष प्रमेष स्थान क्षेत्र मुक्ष प्रमेश मुक्ष प्रमेष मुक्ष प्रमेष मुक्ष प्रमेष मुक्ष प्रमेष मुक्ष प्रमेश मुक्ष प्रमेष मुक्ष मुक्ष प्रमेष मुक्ष मुक्स मुक्ष मुक्र मुक्ष मुक

न्मान्या अन्यायमान्त्रिः भिन्निः विश्वान्त्रे विश्वान्त्ये विश्वान्ते विश्वान्ते विश्वान्ते विश्वान्ते विश्वान्त्ये विश्व

ये दु 'निन' भागवन में न'ये दु।

लेश ग्रुं लेश ग्रें न्य न्य ग्रुं न

क्रिंग्ड्या क्रिंग्ड्या व्याप्त्राची क्रिंग्ड्या स्वाप्त्राची स्वाप्त्रची स्वाप्त्रची स्वाप्त्रची स्वाप्त्रची स्वाप्त्रची स्वाप्त्रची

क्रन्सदे द्रमादम्या में क्रिया ये दुर मुर्भापदे द्रमाय भून वर्षा या भया मेना

नेया ग्राप्तर केया ग्रेत्र ग्री हिनाया श्री र रिवाया श्री या प्राप्त प्राप्त विकास के स्थाय के स्था के स्थाय क

বাইশ্বা

ने तः हेन्य श्वर न व व विश्व

र्रायित्यी पात्र के पार्थ ही 'व्या हें न्यू मार्थ ही 'व्या हिं न्यू मार्थ हिं मार्थ हिं न्यू मार्य हिं मार्य हिं न्यू मार्य हिं मार्य हिं न्यू मार्य हिं मा

८८:स्र्

रदःचविवःग्रीःगानवःक्षेग्राश्चीःयःहिनःश्वदःयःगिन्रश

सर्ने र न स्व र त । क्र स न कि र न क

यर्देर:नश्रूव:वे।

न्द्रभःसं'गुद्दायःक्षेत्रःन्दःहि।। क्षेत्रः उदः इसः नृष्ठेः सेन्दः सेन्।। गुद्दायः हेत्रः सक्ष्यः स्वः द्वाः।।

श्च-त्रुयाधीःहणापदेः दर्देयाधीं गुदायाळे याद्दाळे या उदातीः हया

देशे.श्.श्र्यां भ्राप्ता हो स्वाया प्राप्त स्वाया हो स्वाया स्वाया हो स्वया हो स

क्ष्मामान्य सम्बद्धा

त्रश्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्राह्म्यास्त्राह्म्

र्नेन्द्रस्य स्थान् स्यान् स्थान् स्यान् स्थान् स्थान्य स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान्य स्थान् स्थान्य

ळ्ट्रास्त्रे इसावम्याम् क्रियाये दुर्म् मुसायदे इसायन् प्रायम्याम् स्याम्

प्रस्थान्त्रविष्ठित्। वित्रित्त्वायाः प्रविष्णाः प्रस्थाः स्वायः स्वायः प्रस्थाः स्वायः स्वयः स्वय

र्दे त्र देव द्राप्त स्वर्ध स्वर्य स

ক্রুশ্বপদ্রী

ग्रविःह्रश्राग्रिग्।याद्यम्। ग्रुःद्रदःद्रम्गःयरः ग्रेद्रायः धेः केंश्रः केंश्रः

ये दु 'निन' भागवन 'में न'ये दु।

यद्याः भेदः छे । अवसः श्रुपः भेदः श्रुदे । श्रु

> वर्तः वे 'श्रम्भूतः श्री श्राप्तविषाः श्री । श्राप्ति क्षां यह क्षां श्री क्षां क्षां क्षां क्षां श्री क्षां क्षा क्षां क्षा

चुर्यायाने यात्रायाना महत्।

ब्रे.चग्नात्यःह्रेन् श्वरःदी

र्दः त्रः श्रुतः न्द्रस्यः र्द्रः र्ह्यस्यः र्ह्यस्यः र्ह्यस्यः र्ह्यस्यः र्ह्यस्यः र्ह्यस्यः र्ह्यस्यः रह्यस्य रह्यस्य रह्यस्य स्वतः स्वायः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः रह्यस्य रह्यस्य

ये दुःचने संग्नान्त में ताये द्य

स्वाशाने त्याह्माशान्ताहमाशान्त हो । विश्वाह श्री । विश्वाह श्योह । विश्वाह श्री । विश्वाह श्री

र्श्वा न्यान्य वित्र प्रमानित्र के स्थानित्र स्थानित्य स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य

यहात्रः ते हिंगायात्रया श्रिता । नश्चना श्वीता राष्ट्रिया श्वीता ।

निम्निः स्थानिक्ष्याचे स्थानिक्ष्याचे स्थानिक्ष्याचे निम्निक्ष्याचे स्थानिक्ष्याचे स्थानिक्षये स्थानिक्ष्याचे स्थानिक्षये स्थानिक्ष्याचे स्थानिक्याचे स्थानिक्ष्याचे स्थानिक्ष्याचे स्थानिक्ष्याचे स्थानिक्ष्याचे स्थानिक्ष्याचे स्थानिक्ष्याचे स्थानिक्ष्याचे स्थानिक्ष्याचे स्थानिक्षये स्थानिक्ये स्थानिक्षये स्थानिक्षये स्थानिक्यये स्थानिक्षये स्थानिक्यये स्थानिक्षये स्थानिक्य

र्श्वितः र्वेद्वः र्क्वेद्वाः वित्रः वित्रः

ये दुःचनिः सःग्नन्दः देनः ये दु।

श्चेशःतुःहेन् पर्देन् प्रानित्र हिष्णः प्राण्यशः श्वान्त्र हिष्णः प्राण्यशः हिष्णः स्राणः श्वान्त्र हिष्णः स्राणः श्वान्त्र हिष्णः स्राणः स्राणः

र्स्य वर्षः देव द्वा प्रवास्य प्राप्त । विकास वर्षः देव द्वा प्रवास वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः व

मल्यात्या श्रुत्ते पुष्पः श्री स्थान्य श्री याः स्थान्य स्थान

মান্ত্ৰ শ্ৰা

न्र्भानक्ष्र्वाम्वाद्वाक्ष्याकाः श्रीःस्वाद्वीःवाम्बिक्षा

नश्रुव:म:५८१ न:१८१ । ५८:मी

नश्रूव:मःद्री

महत्रक्षम्भःस्यः हुः द्वेः यदेः देव। । यदेः यदः यव्यः य्यायः यदः ये या। यव्यः व्यः यवः य्यायः यवः ये या। यद्यः यक्ष्यः यवः यवः यव्यः यव्यः ॥ यद्यः यक्ष्यः यवः यवः यव्यः यव्यः ॥

र्श्वन्यः क्षेत्रं यह स्वाद्यः स्वादः स्वत

यद्यान्य स्थान स्

येतु निन्मणान्त निन्येतु

বাইশ্বা

नन्द्रायायाद्वेश

र्सुम् अः क्रें अः मी बुद्दा ने 'देव' यथित' या दिता अः क्रें अः उवः द्या र देवे प्रति देवे अः पर्दि ।

८८:स्र

मुँग्रम् कें माग्री देशमा बुद मी देव न नद माया महिया

नेश्वा बुदःदर्देशःशुःश्वरःनवेः इसः नठदःग्रेंदिः छुवःददः। देशः नबुदःदर्देशःशुःसञ्चरः पठदःग्रेःदेवः हेन्। देशः **५५**:स्र्

देशःग्राबुदःद्रिंशःशुःश्चुरःचवेःह्रयःचवदःग्रेंद्रःद्धंयःद्री

ला विराधरातुं अपव्यावीया के अपवे स्थाय स्वाधार से प्राध्या स्वाधार स्वधार स्वधार स्वाधार स्वध

क्रिंग्स्याः क्षेत्रः व्याप्तः व्यापतः व्याप्तः व्यापतः व्य

त्रभः सञ्ज्ञभः विद्रान्तरः दुः त्रभः विद्रान्तरः विद्

येतु निन्मणान्त निन्येतु

व विश्वार्श्व श्रिक्ष श्रिक्य श्रिक्ष श्रिक्ष श्रिक्ष श्रिक्ष श्रिक्य श्रिक्ष श्रिक्ष श्रिक्य श्रिक्य श्रिक्य श्रिक्य श्रिक्य श्रिक्य श्रिक्य श्रिक्य श्रिक्य

ने श्विम् अन्यान्य स्वान्य स्वान्य विद्या । ने भित्र के न वि में स्वान्य स्वान्य स्वान्य । या न श्विम् प्रत्य स्वान्य स्व

देशःग्राह्म द्रिः द्रिः

र्वर्गः व्यक्ताः व्यक्तः क्षेत्रः विकायव्या । श्रेनः श्रुवः विकायव्या । श्रेवः वे व्यक्तः श्रुवः विकायव्या ।

निम्यान्यान्यात्र्यम् भ्रीत्वेषायत्या श्रीन् भ्रीतात्र्यम् भ्रीत्वेषा

क्रन्सदे द्वरादम्याम् में क्रिया ये दुरम् मुर्यादे द्वरायन् न्यराययायायाय ये न

यवसःश्रृंत्रः संस्थान्य स्थान्य स्थान

देशःग्राञ्चरःदर्देशःशुःशःश्चरः स्वरःग्राञ्चरःग्रीःदेतःहेग्रशःशःश्वरः दे। व्याःगःवर्षदःश्चेतःवेशःग्रेह्दःग्रशःग्राह्दः। श्चाःगर्वेदःवर्द्दःग्रशःग्रश्यशः यवःव्यावःश्चः स्वरःगरःग्रेह्दःगवेःश्चेत्र। देःग्रवेदःदुःग्रव्यव्यःश्चेशःव्यव्यः श्चरःदे। दिशेःदेःहेदःगश्चुतःगःवे।

ने र प्यतः त्वार्थः ते स्वार्था वित्र प्या ।

देव स्वय्याय वित्र स्वय्या वित्र प्रा ।

देव स्वय्याय वित्र स्वयं प्रा ।

वित्र स्वयं या वित्र स्वयं प्रा ।

वित्र स्वयं या वित्र स्वयं ।

ये दु 'चले 'स' मान्त 'में दु।

श्चरक्ष्वावर्धरक्षेत्रवेश्वर्धन्त्रेत्वा स्वावन्त्राचित्रः स्वावन्त्रः स्वावन्तः स्वावन्तः स्वावन्तः स्वावन्त्रः स्वावन्तः स्वावन्त्रः स्वावन्तः स्ववन्तः स्वावन्तः स्वावन्तः स्वावन्तः स्वावन्तः स्ववन्तः स्वावन्तः स्ववन्तः स्वावन्तः स्ववन्तः स्ववन्त

र्श्वार्यः सर्ळे स्रुक्षायः स्वार्यः देव स्वार्यः स्वरः स्वार्यः स्वरः स्व

नेशक्षेश्वनम्बरम्बर्गार्डेन्यश्रा क्रॅंश उत्र क्रेंश ग्री हिन् पर पीता। ने भी विन्यम् उत्र की के मा हेश वर्गे से दारि क्रें व हेव सेवा।

देशकेंश उत्रसुदे ह्वाश ग्री केंश ग्रीश के श्वर या इस यर वार्डेर मयाष्ट्रन्यरः त्रुयायाधेवाते। देश्वरावे दिः त्रुविश्वरादेशविश्वरा श्चादे थि या विदायर द्वा वियाया उदा की किया वियाया श्चायया विदाया हे या वर्ते से द रावे क्रिन राये होता राये हिंदा होता है ता विद्या है ता विद ष्ठित्रप्रस्तु गुरुष्यये भे यहिष्याया हैं म्या के व्याप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्

नश्रुव पः ५८। नश्रु । ८८:स्री

নশ্বুর'ন'অ'নাইশা

समयः न्युनः मः न्या केंगः नेतः ने।।

८८:स्र्

सबद:र्धर:संदी

स्वाश्व राज्य न्त्र न्त्य न्त्र न्त्य न्त्र न्त्य न्त्र न्त

यर्न्न्यः इंश क्री अः क्र्र्माव्या ह्या अः प्यान्त्या है अः व्यायाः ह्या अः य्यान्त्या विश्वाः विश्वः

त्र्वाः व्याः व्य

क्रम् अत्र मुक्ष प्रमेषा मी क्षेत्र प्रमेश मुक्ष मुक्ष प्रमेश मुक्ष प्रमेश मुक्ष मुक्ष प्रमेश मुक्ष प्रमेश मुक्ष मुक्ष प्रमेश मुक्ष मु

स्व मित्र म

है अप्तर्शे गुन्न उस्तर्मा हे अप्तर्शे गार्ड में नियान निया है अप्तर्शे गार्ड में गुन्न में नियान निया है अप्तर्शे गार्ड में गार्ड में

বাইশ্বা

ळेंगार्ने व दी।

याह्न क्षियाश्राण्य प्राप्त क्षियाश्राण प्राप्त क्षिय क्ष्य क्षिय क्षेय क्षिय क्षेय क्षिय क्षेय क्ष

यदेः धुरा

र्हेन्' धेर । धर पर ही 'नग है।

ख्याः अर्थेगाः मदेः श्रुवः हो दः धेव।।

श्रुवा सार्वे द्वी ना वाह्य क्षेत्र वाह्य क्षेत्य वाह्य क्षेत्र वाह्य क्षेत्र वाह्य वाह्य क्षेत्र वाह्य क्षेत्र व

বাইশ্বা

নপ্দ'ন'অ'নাধ্যুমা

मुँग्रायः क्रियः उत्राचि क्रियः या वित्यमः मुद्रासेतः स

क्रम् अत्र म्र अत्योषा क्री क्रिया ये दुर गुरुष्य दे म्र अत्र म्र अत्र या श्राया श्राया क्रिया हो न

त्त्रश्चार्या श्वार्या स्वार्या स्वर्या स्वार्या स्वार्य

स्टानिवि छिट्टायश्याविव श्रीश्वा । वि श्वा व्या श्वा व्या श्वी । कु वे व्यव्या श्वा श्वी स्ट्री । दे श्वी स्टानिव श्वा स्ट्रा वि श्वा व्यव्य श्वी । स्ट्रा व्यव्य श्वी श्वा श्वी ।

येतु निन्यम्बन में निष्येतु

रामिश्रम् इयास्त्रम् ने नियाद्वापायाम् विमाध्याचे निर्धास्य स्वाप्त स

इयायावमा जुरारे या ये वा ने । । श्री मा जे ना ने ना स्था मा जुरारे श्री मा ये वा ने ना स्था मा जुरारे या ये वा ने ना स्था मा या वा निवास के मा श्री मा ये वा ने मा ये वा ने मा ये वा ने मा या वा निवास के मा ये वा ने मा या वा निवास के मा ये वा ने मा या वा निवास के मा ये वा ने मा या वा निवास के मा ये वा ने मा या वा निवास के मा ये वा ने मा या वा निवास के म

देवा छेट छे श्लु र्च राये १६८ राये १६८

क्र्यास्त्रे म्रायमेयामे क्रियाये द्वराम्रायदे म्रायन् न्यरायसायास्य मेरा

यादेशःय। रदःचवेदःह्याशःयःग्रुशःयःश्रूशःयदेःद्वेशःयःवी

ग्रुश्रास्त्रित्रः श्रूष्ठ्रास्त्र स्वाधाः द्वेत्रः श्रूष्ठ्र स्वाधाः स्वधाः स्वधाः स्वधाः स्वधाः स्वधाः स्वधाः स्व

यदे छेट् ग्रेश्व स्त्र प्रेश प्रमानित छेट्।।

यव्य स्त्र प्रमान्य स्त्र प्रमान स्त्र स्त्र प्रमान स्त्र स्त्र प्रमान स्त्र स्त

क्षेत्रण्याः कष्णाः क

येतु निन्धमान्तर में तायेतु।

त्रुअः यात्रेत्रः श्रूब्यः याळ्यः व्यात्रः यात्रेत्रः यात्रः यात्यः यात्रः यात

गहिरागाः श्रें रायदे द्वें रायदे।

श्रुम्य स्ट्रिन् स्ट्रिन्स्य

क्षेत्राश्चा स्वादित्त स्वादित्त स्वादित्त स्वादित्त स्वादित स्वादित

यळव के प्राया वे माप्त भेता

नेश्वास्त्रभाग्यस्ति

येषु निने मणान्तर में तर्येषु

भ्रम्यायदेन्यस्त्र स्वान्त स्वान्य स्वान्त स्वान स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वा

भ्रम्भारत्ते स्वाहत् क्रियास्य विष्य स्वर्थात् स्वर्यात् स्वर्थात् स्वर्थात् स्वर्यात् स्वर्यात् स्वर्यात् स्वर्थात् स्वर्यात् स्वर्यत् स्वर्यत् स्वर्यात् स्वर्यत्यात् स्वर्यत् स्वर्यत् स्वर्यत् स्वर्यत् स्वर्यत्यत् स्वर्

क्रम् अत्र मुक्ष प्रमेष मी क्षेत्र मे स्वर मुक्ष प्रमेष मुक्ष मिल क्षेत्र मे स्वर मिल क्षेत्र में स्वर में स्वर

विरा कु'गर र्श्वेर पु: र्शेर प्रासेर प्रासेर

स्वः राः उवः श्वाशः यादः द्वाः या । देः यद्वे यः यः श्वे दः श्वे दः या । देः प्रवाः यञ्ज्ञयः यः श्वे दः यदेः श्वे द्या । याद्ववः श्वे याश्यः श्वे दः यदे श्वे द्या ।

वर्त्रेयम्पर्पित्याधित्रत्याधाना ।

दे 'द्या'त्य'णद्र'न्य्या'याडेया'द्रद्र'हे द्युद्र'यो 'त्रनेत्य'न'र्षेद्र'य'पेत्र'र्वे

बे दयर।

ने किन् हें ज्ञास्य स्थित स्थान स्था स्थान स्था

नश्चुनः ग्रुंनि नः यः यद्देयः नः सुरः नश्चुमः ग्रुं सः यः प्रिंने ग्रुंने । यद्देयः नः प्रेंने । यद्देयः । यद

श्र्वाश्र्वाश्राद्ध्याद्यात्र । देश्वाश्र्वाश्राद्ध्यात्र । देश्वाश्राद्ध्यात्र । देश्वाश्राद्ध्य । देश्वाश्य । देश्वाश्राद्ध्य । देश्वाश्राद्ध्य । देश्वाश्राद्ध्य । देश्वाश्य । देश

55:39

ब्रॅग् स्यायार्थ्या वियः ठवः नुः से व्यवनः वार्यः यहिया

द्यायाः सः द्रिशः स्ट्रा देवेः त्यवः द्यायाः सर्वे । द्रायाः सः द्रिशः स्वायाः सर्वे । द्र्यायाः सः द्रिशः स्वायाः सर्वे ।

> र्थेन'म'हेन'में रेम'म'हेन। सेन'म'से'पश्चर'धेम'मर्स्नि।

ने 'अन्य हो या स्थान स्

ह्यायम् वर्षे व्याहियाम् याप्त्रेयायया वर्षेयाचित्र हियाययायया वर्षेया हियाययाय्ये वर्षेया हियाययाय्ये वर्षेया हियाययाय्ये वर्षेया हियाययाय्ये वर्षेया हियाययाय्ये वर्षेया हियाययाय्ये वर्षेयाययाय्ये वर्षेयाययाय्ये वर्षेयाययाय्ये वर्षेयाययाय्ये वर्षेयाययाय्ये वर्षेयायय्ये वर्षेये वर्ये वर्षेये वर्षेये वर्षेये वर्षेये वर्ये वर्ये वर्षेये वर्ये वर्षेये वर्षेये वर्षेये वर्ये वर्षेये वर्ये वर्ये

बेन्द्र के त्युम् नदे त्ये व्यान सुन मने हेन् से मु

ण्डान्यमःश्र्वाश्रवाश्रव्याश्रव्याश्रव्याश्रव्याश्रव्याश्रव्याश्रव्याश्रव्याश्रव्याश्रव्याश्रव्याश्रव्याश्रव्याश्रव्याश्रव्याः वित्रायमः विश्वायः वित्रायमः विश्वायः वित्रायमः विश्वायः वित्रव्यायः वित्रायमः विश्वायः वित्रायमः विश्वायः वित्रव्यायः वित्रवित्ययः वित्रव्यायः वित्रव्यायः वित्रव्यायः वित्रव्यायः वित्रव्यायः वित्रव्यायः वित्रव्यायः वित्रव्यायः वित्रव्यायः वित्रवित्ययः वित्रव्यायः वित्रवित्ययः वित्रवित्ययः वित्रवित्ययः वित्रवित्ययः वित्रवित्ययः वित्रवित्ययः वित्रवित्ययः वित्रवित्ययः वित्ययः वित्रवित्ययः वित्रवित्ययः वित्रवित्ययः वित्ययः वित्यय

र्दे त्र श्रें न दर्भ त्र श्रें म्या श्राम मे श्राम्य श्रें त्र श्रें मा श्राम स्वर हैं । न १ वर्ष न

র্মুন'দ্র্যুর'ক্রীশ'র্মুবা'ড্রিন'র্মুন'মশ'র্মুবা'ম'ডর'র্', নপ্দ'ম'ম'র্ম্মর' মম'রমা

स्याध्यायक्ष्यायः विवाध्यायः विवाधः विवाध

भेषा विवास स्वास्त्र स्वास स्

ने'धे'श्चेर'त्य'रेश'म्। म्बर'र्'में'नर'श्चेर'सर'दशुर्।।

বাইশ্বা

नेवे खन नगग मने

रेग्रामान्य उत्रम्य दारे।

यायाने नियान्य मिया स्था ।

यायाने प्रत्यार्थेया प्राध्या श्रीया श्रीय श्रीया श्रीया श्रीय श्रीया श्रीय श्रीया श्रीय श्रीय

श्रॅग'सेट'सश'नट्ग'सेट'ल'हिन'सेटे क्रुं सळंद'शेश'नट्ग'स्या हिन'सेटे स्वा'सेट'स'स'लेद' स्वा'सेट'स'स'लेद'स्व'सेट'सेट्रेम् वावद'सेट्रेम'स्य'लेद'सेट्रेम'स

ने निम्माने स्था हुम ले न।।

यश्चित्राश्चेत्रास्त्रीत्रास्त्री श्चित्राची स्त्रीत्राची स्त्राची स्त्राच

यात्यः हे 'यद्या' वे 'द्रियायः स्थात् । दे 'द्रियायः हें यायः संयो । यात्रः हे यायः दे 'युचः स्य 'य्युच् । यात्रः हे यायः दे 'युचः स्य 'य्युच् ।

यायाने विया स्वर्गात्रीयाया याया स्वर्गात्रीयाया स्वर्गात्रीयाया स्वर्गात्रीयाया स्वर्गात्रीयाया स्वर्गात्रीयाया स्वर्गात्रीयाया स्वर्गात्रीयाया स्वर्गात्रीयाया स्वर्गात्रीयाया स्वर्गात्रीया स्वर्गात्रीया स्वर्गात्रीया स्वर्गात्रीया स्वर्गात्रीया स्वर्णात्रीया स्वर्ण

निव हिः भूगि हिः शुरु र र र या । अर्वे दः दिदः संस्था ।

त्रवाद्याः ने वालि व्यवद्यत्वेषाः हुः अर्देतः शुं अर्थे श्री अर्थे स्वर्षः व्यवद्याः विष्याः हुः अर्थे न् व्यवद्याः विष्याः हुः अर्थे न् व्यवद्याः विष्याः हुः व्यवस्य विषयः श्री व्यवद्याः विषयः श्री व्यवद्याः विषयः विषयः

येषु निवे मणावन में व येषु

नन्ग्रार्थं नन्ग्राने निन्तु कुर्म्या कुर्यु र प्रदे श्री र

शुराद्यस्तर्भाग्नेत्रः याविष्ठः शुराद्यस्त्रः या हेस्राद्यवाग्यत् सेत्रः त्री । याविष्यः शुराद्यस्तर्भा शुराद्यस्त्रः शुराद्या देष्ये द्राय्यस्त्रः शुराद्यस्त्रः शुराद्यस्त

यद्याःश्रॅयाः इत्याः विवाद्याः प्राण्य स्थाः भित्रः विवाद्याः स्थाः स्याः स्थाः स्याः स्थाः स्य

श्रीसमुद्रम्बित्राश्रायम्बाश्रायान्वानाः सन्दी

श्र्वाश्रेद्रास्थान्त्रवास्थितः स्थितः स्थ्रित् स्थित् स्थ्रित् स्थित् स्थित् स्थ्रित् स्थ्रित् स्थ्रित् स्थ्रित् स्थ्रित् स्थ्रित् स्थ्रित् स्थ्रित् स्थ्रित् स्थित् स्थ्रित् स्थ्रित् स्थ्रित् स्थ्रित् स्थ्रित् स्थ्रित् स्थ्रित् स्थ्ये स्थ्रित् स्थित् स्थ्रित् स्थ्रित् स्थित् स्थित् स्थ्ये स्थित् स्थित् स्थित् स्थ्ये स्थ्ये स्थित् स्थित् स्थित् स्थ्ये स्थित् स्थित् स्थित् स्थिते स्थ्ये स्थित् स्थिते स्या स्थिते स्य

ग्वित्यासर्वेदासेन्दें के

तुअः श्रेम्यायायाये द्राचे सामादायया।

तुसः श्रें ग्रायायाय प्रायाय स्थित स्था या व्याप्त स्था या व्याप्त स्था या व्याप्त स्था या व्याप्त स्था या व्यापत स्यापत स्था या व्यापत स्था या या व्यापत स्था या या या या या या या या या

र्द्ध्याःसन्द्राध्यःसन्दरः हे स्ट्रसः धेव। ।

यर्दिन्त्र वन्यार्थेनायश्चित्रायश्चित्रायश्चित्रायश्चित्रयायः स्वायः व्यार्थेन्ययः स्वायः विवायः स्वायः स्वयः स्वय

र्श्वन्त्रेन्द्रेन्द्रम्यश्यम् ।

र्श्रेवान्दरः र्ह्वे व्यः श्रेवाश्वः यार्श्वेव् खुश्वः व्यः व्येवाशः

येतु निन्धमान्तर में तायेतु।

यास्त्रीयास्त्राय्यस्य व्याप्त्राय्य व्याप्त्री व्यास्त्रीयास्त्रायस्त्रीय

यायाने ने स्वरायन्या सर्वेदात्। ।

यात्यः हे : श्रॅयाः दे : श्रू रः यद्याः ग्रादः यात्रे व्याः हे स्वाः यात्रे व्याः स्वाः यात्रे यात्ये यात्रे यात्रे

रेग्रथान्दियान्ता हिन्सुतार्दे। न्दार्था स्व्यापान्देशकी

न्यश्रिमार्केषार्क्ष अविष्ठित्र विष्ठित्र विष्ठित्र विष्ठित्र विष्ठित्र विष्ठित्र विष्ठित्र विष्ठित्र विष्ठित्र

सुरायः वियाने से नः संभित्। सुरायः संभायः स्वायः से ने से नः से नः सा। सुरायः से नः से ने से नः सा। सुरायः से नः से माराः से सा।

त्रुयायायार्थेवायर्थेद्दायाये व्याचित्र क्षेत्र व्याच्यायाय्ये व्याच्यायाय्ये व्याच्याय्ये व्याच्याये व्याच्याये

বাইশ্বা

इट्राश्चर त्या महिशा

र्देशप्रा र्वेवप्रश्चित्र

८८:स्र्

५देशकी

यायाने दुराबदार्के यायबुदार्धे या।

नायाने नार्शेत् खुर्यान्तरम् स्वरामा खुरा बदा नद्या सेदा तुर्या स्वराम् स्वराम् स्वराम् स्वराम् स्वराम् स्वराम स्

यविषान् । विषयान् । विषयान् । विषयान् । विषयान् । विषयान् ।

तुअः श्रॅग्राश्च्यशः क्रॅशः उद्या न्याः न्यः न्यः स्रः छेशः शेः द्र्येगः श्रेः द्र्येगः स्रेग्राश्च्या न्याः न्याः न्यः शुः वर्षे न्यः यदे न्यः व्याः न्यः व्याः न्यः व्याः न्यः व्याः न्यः व्याः व्य

भे पर्दे द के ज

नुअः शॅन्याश्चन्याः नहस्यः शुः शेः वर्दे दः हे स्

पर्देन्यगुन्जीः कुः धेन्दि। । देशेन्यम् ने प्रदेशम् निष्णेन्द्रि। । देशेन्यम् ने प्रदेशम् निष्णेन्द्रि। । देशेन्यम् ने प्रदेशम् निष्णेन्द्रि। ।

तुसःसँग्रान्यन्यान्यस्यःसुन्देन्देन्देग्रायान्यस्यः। नेरःहन्यसः तुत्रःसदेःसुन् विनःसरःष्या ह्याःसदेःसुन् नेरःष्या ह्याःसदेन्दःस्याः तुत्रःसदेःसुन् विनःसरःषया ह्याःसदेःसुन् नेरःषया ह्याःस्याः स्वानःसदेः त्रीःन्यरः ने दिस्यःसः न्दःन्देश्यः सेन्यो ह्याः स्वान्याः स्वानः स्व

यायाने प्रत्या हैं त्या से या सारी हु । धीव त्या हैं । से या यी हु । धीव हैं । बी

श्र्वाप्त्रः भ्रेषाप्त्रोत्त्यः श्रेष्ठायः भ्रेष्ठा । इत्राप्त्रेत्रः स्वाप्त्राच्याः भ्रेष्ठायः भ्रेष्ठा ।

বা

न्त्रम्यायात्र वृत्तः हुनः ग्रीः स्टानिवः ग्रीः श्रीमाः न्त्रः श्रेमाः यहेनः यहं स्य

ये तु नित्रं मान्त में तु से तु

> दे:न्या:ख्यःन्तरःक्वःत्यश्चः व्यूटः।। दे:खरःस्वःद्ध्वःक्वेवःयःवे।। व्यूक्षःसःस्टःयोःस्याक्षःयकः व्यूटः।।

इत्रश्चाश्चार्त्वश्चा व्यवास्याच्याः स्त्राच्याः स्त्राचः स्त्राच्याः स्त्राचः स्त्

र्नेन्यसु नदी

सक्त नु न्दरस्य द्वरमा सम् न सुना सामा सुरा

मर्क्ट्रमामने स्कृतानी

यश्चित्यःसःहेर्-ग्रीश्वासह्त् ग्रीप्तःस्त्रीम्। र्ह्मित्यःसःहेर्-ग्रीश्वासह्त् ग्रीप्तःस्त्राम्।

यक्ष्व न्यूया श्रे सम्वाप्य प्रमुव प

यर्ने ने निष्यामान स्थान स्थान

यहंदशयायायायेत्वेत् श्रेंनाश्चितायायव्यायेत्वेत्रः स्वा यदी विश्वेत्तायायाव्यायेत्वे स्वा श्रेंनाश्चितायाः स्व स्थितायाः स्व स्थितायाः स्व स्थितायाः स्व स्थिताः स्व स

हें मा से व

ठे स्ट्रिय्ति स्ट्रिया स्ट्रि

नश्चनः चुरे हे अप्तह्मा शेव दे । । नश्चनः चुरे हे अप्तह्मा शेव दे श्वर । नहें न प्रचुर ने वे मावव प्यत्र अर्द्ध र अ। ।

स्थित्राच्या स्था विषयात्राचे स्था त्या क्षेत्राच्या कष्या क्षेत्राच्या कष्टाच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या कष्टाच्या क्षेत्राच्या कष्टाच्या कष्टाच्या

क्रम् अत्र मुक्ष प्रमेल मी क्षेत्र में स्वर मुक्ष प्रमेल मुक्ष प्रमान क्षेत्र में स्वर मुक्ष प्रमान क्षेत्र में स्वर मुक्ष प्रमान क्षेत्र में स्वर में स्वर

मुन्नायायम्बर्धियायम् भूवायायम् स्थित्। स्थ्या स्या स्थ्या स्या स्थ्या स्थ्या

श्र-अर्क्ट्र-श्र-स-द्याया-स-त्य-याशुमा

चत्यः न वे निर्मा द्वा क्षेत्र प्राप्त वि । प्रमाणि चत्यः न वे निर्मा क्षेत्र प्राप्त वि । चत्यः न प्राप्त वि ।

> नश्चनः श्चेतः श्वेतः त्यमः इसः नड्नः छेम। । नश्चनः श्चः यावसः न्यः नड्नः ।

र्श्वेगाश्चे सम्मान्ति त्या स्ट्रीय विष्ट्रीय विष्ट्रीय

हेन्यमधेन्यम्मम्यम्यम्य

ने हिन् ही र ज ने विश्वा नि क्षेत्र का नि किया की व्या की व्या

श्रूच न्या हिन श्रूच निका के अपी निका के निका

दे.हीरःह्रश्रायश्चित्राच्याच्यायायाया । वर्दे वर्द्धत्राद्धियाच्याच्यायायायाया

सन्नुत्रं व्याप्ता हे भावर्षे स्वाप्त स्वाप्त हे भाक्षा वर्षे व्याप्त स्वाप्त स्वाप्त

नम्बानायायम् विष्यः स्ट्रीत्रायः स्ट्रीत्रा । नम्बुनायायम् व्याविष्ठः स्टेश्यः विष्या ।

क्र्यः अप्रास्त्रेया क्री क्रिया ये द्वरा चुरा स्वरा म्या निष्या विष्या विषया विषया

र्श्वनाश्वनः र्क्ष भारत् । वार्श्वनः ख्रायान्य स्थान्य स्थान्

क्रिन्यःश्वरःचःवाशुम्रा

न्द्रभः सेन् त्यः ह्रम् सः व्यानः स्वानः से स्वानः स्वतः न्द्रः । न्द्रभः सेन् त्यः स्त्रुन् क्रुवः क्षन् स्वरः न्वतः न्द्रः। स्टः त्यः सक्ष्ट्रसः सः स्वरः न्वतः। नर्दे।।

प्रस्था प्रमाय क्ष्या स्थाय विषय स्थाय स्

नशुनः ग्रुनः सेन् १ विषयः सेन्।।

श्र्वाःश्र्वाशादेः तश्चुतः द्वितेः क्ष्यः श्राधेतः श्राध

येदःसदेःह्याःसः गुनःर्ने विः व

सेन्छिराधेन्यराधेन्याः प्रम्ति। हेर्स्ट्रस्येन्यराधेन्याः प्रम्ति।

र्श्वानि निवानि स्थाने स्थाने

क्ष्मिंगः सेन्यः स्त्रुनः संभित्। । नर्देशः भेन्यः सेन्यः भेन्यः भेन्यः। । नर्देशः सेन्यः सेन्यः भेन्यः सेन्यः । क्षुनः सें भेन्यः ने सेन्यः सेन्यः सेन्यः। ।

र्देन'नश्रूभ'न्न। दर्देभ'भेद'त्य'ह्नम्भ'र्थ्येन'र्य'द्रम्भ'र्थर' वया दर्देभ'सेद'द्रम्माश्रुव'याद'मी'य्यद'मिन्द्रस्थ'त्र्द्रद्रम्भ'र्यद्रस्थ'त्र्य'स्थ'त्र्यं वर्देभ' वे'रद'सळंद'द्रम्माश्रुव'याद'मी'य्यद'मिन्द्रस्थ'त्रद्रद्रस्थ'त्र'र्द्रस्थ यवायावरावश्वरहे। रहासळ्वराद्वावाश्च्रुवावार्षे प्राप्तराविराक्षेत्रहेरा वर्षात्रावरावश्वरहे। रहासळ्वराद्वावाश्च्रुवात्राक्षेत्रहेरा वर्षात्राक्षेत्रहेरा वर्षात्रहेरा वर्षात्

यात्राने ने स्था क्ष्या क्षेत्रा क्षेत्र क्ष्या क्षेत्र क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्य क

याया हे : श्रॅया प्यत्या हे : यश्र : श्र्या याया हे : श्र्या चे : यश्र : श्र्या याया हे : यश्र : यह या : यश्र : यश्य : यश्र : यश्

वर्ते हिन धेव वर्ते हे वर्गेया ।

येतु निन्मणान्त निन्येतु

श्र्वाःक्ष्यः उत् हे श्रेष्ट्रायायः यह वायः यविवा स्वार्थः विवास्य विवासः विवा

म्बुट्यिन्दिन्द्वाम्याम्यान्दिक्यः स्वेत्त्वाम्याः स्वेत्त्वाम्याः स्वेत्त्रः स्वेत्तः स्वेत्तः स्वेत्तः स्वेत्तः स्वेतः स्

ह्यातेश्वर्शं ह्वाश्वर्णत्त्र्वाश्वर्णत्त्र्वाश्वर्णत्त्र्व्यात्र्व्यः वित्रः श्वर्णत्त्र्व्यः वित्रः श्वर्णत्यः वित्रः श्वरं वित्रं वित्रः श्वरं वित्रः

ব্যষ্টিশ্ৰম্যা

र्ने अरबेर या मध्यूर कुत कर यर मया नाती

श्चितः प्रदान्यायाः याः याः विष्या । श्चितः श्चितः प्रदा । श्चितः श्चितः श्चितः श्चितः श्चितः । श्चितः श्चितः श्चितः । श्चितः श्चितः श्चितः । । श्चितः । श्चितः । श्चितः । । श्चितः । श्चितः

बेर्धिरप्देरदेशके के कि

र्षित्रः सम्बद्धाः सम्बद्

न्द्रभः सेन्-न्यायाः स्त्रुन्नः यान्यायाः स्त्रुनः स्त्य

न्देशसेन्यवरार्षेन्यासाधिकामवे धुन्

गयाने खुयानु सायर्गे गा हे द्या।

> के खूराने खें राने खूराने । भे प्रमाण के खूराने और या । ने खूराण र ने प्रमाण भे प्रमाण

स्रवादिते तुमाना मी मास्रुद्दे तुमान स्रवादित स्रवादित स्रवादित स्रवादित स्रवादित स्रवादित स्रवादित स्रवादित स्

ळ्ट्रस्त्रे द्वरावम्याम् क्रियाये दुर्म् मुर्श्याये द्वरायक्ष्म् याय्यायायायायायाय

याल्वन्त्रः खुत्यः यदिवे त्रुयः यः यो द्राप्तः द्रित्रः यो द्राप्तः यो विव्यानः यो विव्या

বাঝুম'মা

रट.ज.भक्षेटश.स.झट.च.ज.चीश्रीभी

न्यायाःश्च्रुनःश्चः निर्मेशः हेतःश्चः निर्मेशः निर्मेशः

नगनाञ्चनः शे निर्मा हेन ञ्चा निन्तु नञ्च नाम हो।

र्देन् होत्या प्याप्त निष्य प्राप्त होत्य क्षेत्र होत्य ह

येषु निवे मणावन में व येषु

र्धिन् सेन् स्मान्त्र समान्त्र समान्त्र

न्यायाः श्रुतः श्रीत्रायः निर्मायाः श्रुतः श्रीतः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर न्यायाः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रीः याविः स्वर्तः स्वरं स्वरं

शुर्देव'त्य'त्'र्यदेश्चेर्य तुःबेव'र्य'त्र' गृहेश'ग्रार'बेव'र्य'त्य'त्रहेव'र्य'ठव'श्चे'हेंग'र्यदे'ग्राश्चर'त्युत्य' इस्रश्राखेंत्'र्यदेश्चेर्य

ने प्यत्र से न प्यत्र स्ट्रिंग स्व स्व प्रत्ते व्यव्य स्व स्व प्रत्ते व्यव्य स्व स्व प्रत्ते व्यव्य व्यव्यव्य व्यव्यव्य व्यव्यव्य व्यव्यव्य व्यव्य व्यव्य व्यव्यव्य व्यव्य व्यव्य व्यव्यव्य व्यव्यव्य व्यव्य व

न्यायाःश्च्रायः निर्मायाःश्च्रायः निर्मायः निर्मायाःश्च्रायः निर्मायाः श्च्रायः निर्मायाः श्च्रायः निर्मायः नि

ये दुःचनिः सःगान्तः देनः ये दु।

वया धुःर्रेयावाञ्चर्यायरायुवानुस्यवाय्याययायुवा नेवेरहेसासुः चुर्याययुवा ने युवानुस्यसुय्येय स्वायाययायुवायरानेवेरहेसासुः युवायवेर रेसारुवाने ने युवानुस्यस्य स्वायाययायुवायरानेवेरहेमा क्षुर्यायवेर रेसारुवाने ने युवान्यस्य स्वायाययायुवाययः रेसार्ययाय्येयाययः चेसार्यने ने युवान्यस्य स्वायाययः चेसार्यने स्वयाययः चेसार्ये स्व

नुस्रायिः शुर्ते तर्मे निष्या प्रति श्रूराण्या नुः विष्या प्रति श्रूराण्या नुः विष्या प्रति श्रूरा नुस्राय विष्या प्रति श्रूरा नुस्राय विष्या प्रति श्रूरा नुस्राय विष्या प्रति श्रूरा नुस्राय विष्या प्रति ।

বাইশ্বা

रटः सळ्दः धेदः सः द्वावाः सः यः वाहेशा

चुर्त्। वुर्त्।

५८:स्र्

लीजाजा ही राया है।

ने भुभेवन

न्यायाः श्रुवः चेतः प्रदेश्वेषः प्रदेश्वः स्वरः प्रदेश्वः स्वरः स

क्रन्यदे द्रमादम्याम् भी क्रिया ये दुर्ग्यम् प्रदे द्रमान निर्म्य प्रमाय मान्य ये दि

श्चुनः ग्रेनः धिवः समः श्वया क्षनः सने वः श्वनः श्वनः

ळॅशःगडिमाःनश्चनशःससः १ विश्वस्थाः ग्री

ह्निंग्साने अञ्चार्था अवाश्वार्था हेन्द्रम् अश्वार्था हिन्द्रम् अश्वार्था अः ह्नाः स्वार्था अः ह्नाः स्वार्था हिन्द्रम् स्वार्थाः स्वार्थाः हिन्द्रम् स्वार्थाः हिन्द्रम् स्वार्थाः हिन्द्रम् स्वार्थाः हिन्द्रम् स्वार्थाः हिन्द्रम् स्वार्थाः हिन्द्रम् स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्

र्नेत्ते क्षेते नुभामाने क्षेत्र नेत्र नुमानि नित्ते क्षेत्र क्षेत्र नित्ते क्षेत्र क्षेत्र नित्ते क्षेत्र नित

नन्नाक्ष्य स्वर्गाः व्यानाः स्वर्गाः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः व विद्याः विद्या

त्र-५५-धेव-५

क्रमान्य विवादित्य विवादि

या ज्ञान्य प्राप्त प्रमानित्र प्रमानित्य प्रमानित्र प्

त्री ते श्रुवायाण्या त्रुवाया वर्षे व्याप्त वर्षे वर्

বাইশ্বা

धुवा उदाया श्रु र न दी।

ये दुःचनिः सःगान्तः देनः ये दु।

বাধ্যুম'শা

श्च-र्रेव-र्गनाःश्चितः हो र न्यंदे र द्वारा या ग्राश्वा

न्यायाः श्रुप्तः श्रीप्तः द्वीप्तः व्यायाः श्रीप्तः व्यायाः श्रीप्तः व्यायाः श्रीप्तः व्यायाः व्यायः व्यायः

न्ग्राञ्चुन चेन्द्र प्रदे हैं ग्रायाय सूर द्वाया दे।

श्वास्त्र व्याध्यायाः प्राप्त वित्र श्रुत्र प्राप्त वित्र श्रुव्य व्याध्य प्राप्त वित्र श्रुव्य व्याध्य प्राप्त वित्र श्रुव्य व्याध्य प्राप्त वित्र स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्व

ने यश्यावन यः में शक्षात्रम्।

न्वावाः श्रुवः चेन् प्रतिः ह्वां प्रतिः श्रुवः प्रतिः स्वावः स्व

বান্ট্র শ'শা

ने त्यात्र स्रून सदे स्वन् स्वरासी मार्ने नामें

शुर्ने व त्यान्याया श्रुवा गुरुष्य स्थान्ते स्थाने त्या श्री त्यर्ने या सा स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स

व्यन्दिं ले न

श्रुत्रःहे स्ट्रित्रः ह्रित्रः ह्रिते ह्रित्रः ह्रित्रः ह्रित्रः ह्रित्रः ह्रित्रः ह्रित्रः ह्रिते ह्रित्रः ह्रिते ह्रित्रः ह्रिते ह्रिते

देवे:श्रुँद्वासेद्रायम्बया स्टानी देवें दिस्यार्थे म्योद्याये स्वाप्त स्वाप्त

त्र्याम्ब्रह्मन्ति हेन्या वेत्राम् क्षेत्र प्रति हेन्या वेत्या हिन्या हेन्य हेन्या हेन्य हेन्य

ने'नविव'हेन'ने'स'नहगासम्।

ने खूट खुयायाय विद्यापायीय व्याप्त है या द्या विद्यापायीय प्राप्त विद्या स्था है या द्या विद्यापायीय स्था है या द्या विद्यापायीय स्था है या द्या विद्यापायी क्षेत्र खुया दिया है या द्या विद्यापायीय स्था स्था विद्यापायीय स्था स्था विद्यापायीय स्

शुर्देव नर्देश सें र से न ग्राम ने सूर निवे हे शन्या यश रम सर्व

क्रन्यदे द्रमादम्या में क्रिया से दुर्ग्य स्था देश द्रमाय भन्य स्था स्था से स्था स्था स्था से स्था स्था से स्था स्था से स्था स्था से स

यहेव.सपु.स.संदे.स्रीय.स.स्या स.ट्ट.सपु.स्य.सप्.सप्.स्या स.ट्ट.सपु.स्य.सप्.सप्.सप्.सप्.स्या

वह्याक्षेत्रत्याक्ष्याश्वाश्वर्षा ।

है 'क्ष्र-'श्रून-वाक्ष्र-'है। रेंग्डिंग होने 'वेंग्डिंग विदेश का सेन्द्रेन के सेन्

ने प्रज्ञरू उत्तर्भ ने । ने ने प्रयूक्ष मान्तर में त्राम्य क्षा ।

ये दुःचने संग्नन्द में दु

वर्त्वानायां से से न्या से से न्या माने प्यानायां से स्था से से न्या से से से न्या से से से न्या से न्या से से न्या से न्या से न्या से से न्या से से न्या से से न्या से न्या से न्या से न्या से से न्या से

ळ्ट्रास्त्रे इसावम्याम् क्रियाये दुर्म् मुसायि इसायक्ष्म प्रमायाम्याम् स्त्राम्

ম্ধিমানা মান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমা

র্ষুনা'নব্না'য়৾ব'য়ি'ব'অয়'য়ৄ৾না'ম'য়'য়ৢন'ম ব্'য়ৢন'য়ৢয়'য়য়' নতম'য়ৢ'য়৾'য়য়ৢন'য়য়৾ |

८८:स्र्

श्र्या-नर्गासेर्वित्रायसःश्र्यान्यसः स्वानायः वाहिश

त्रुसःसँग्रस्य । त्रुसःसँग्रस्य । ८८:स्र्

तुसःसँग्रायः नद्गासेदः दुःसे व्युनः सःदी

र्लिन्छिन्। श्रुवाश्वर्षे अप्यक्ष्म ।

र्युअ:र्सेग्राय:यन्या:सेन्:रु:यदय:क्रुय:प्रथ:व्य:सूद्य:यय:युव:

मर्शः स्ट्रिन् ग्राम् स्थान्य स्थान्त्र । स्रोत् स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र ।

यदःश्चेत्र। यद्रःश्चेत्र। यद्रःश्चेत्र। यद्रःश्चेत्र। यद्रःश्चेत्र। यद्रःश्चेत्र। यद्रःश्चेत्र। यद्रःश्चेत्र।

> सेन्यमार्थेनामासेन्द्रम्परा। 303

यत्रवःश्चित्राय्ययःश्चित्राः वेःश्चियः व। ।

र्श्वाक्ष्माञ्ज नन्तान्द्रमात्रेन्यमात्रेन्यमात्रेन्यमात्रेन्यमात्रेन्यमात्रेन्यमात्रेन्यम् सन्त्रमात्रेन्यमात्रेन्यम् सन्त्रम्यम् सन्त्रम्यम् नन्त्रम् नेन्यम् सन्त्रम्यम् सन्त्रम्यम् नन्त्रम्यम् सन्त्रम्यम् सन्तर्भः सन्तर्यः सन्तर्भः सन्तर्भः सन्तर्यः सन्तर्यः सन्तर्यः सन्तर्यः सन्तर्यः सन्तर्यः सन्तर्यः स

यर्दिन्त् भ्रेष्म् व्यक्ति विवक्ति वि

·······अः अर्चेदः नः धेतः षदः।।

सर्वेट्ट सेट्ट्याया मे स्ट्रिस मा

र्श्वनाः ने स्था स्वार्तः स्था स्वार्तः स्था स्वार्तः स्था स्था स्वार्तः स्वार्ते स्वारं स्वरं स्वारं स्वारं

श्र्वाळे शरुव। यद्वाओ प्रत्वायः विवायः श्राण्यः श्रेष्ट्रा व्याप्तः स्था यद्वायः स्था यद्वायः स्था यद्वायः स्था यद्वायः स्थायः स्था यद्वायः स्थायः स्था स्थाः स्थ

বাইস্থা

गर्सेद्रः सुरुष्य नद्रमा नडसः सुरसे व्यान परि

বাইপ্রমা

र्ष्ट्रिमाः एः ख्रुमाः सः ने द्रिमाः से द्र्याः से द्र

र्श्वा निष्य से त्या से त्या

द्येर्यः अर्थाः अर्थाः अर्थः अर्थः अर्थः ।

न्येर्न्त्रः श्रीमाश्चिम्राध्यम् । स्थित्रः स्थित्। स

माशुस्राय देव नसु न दी।

त्रीम् प्रत्नःह्वाश्रश्च व्यान्यः श्री । व्यान्यः स्वान्यः स्वत्यः स्वान्यः स्वान्य

মাধ্যমান্য বিষ্ট্রিন্ম এব দেই ক্লুমের বিশ্বাধ্যম

५८:स्र्

र्वे चिन्द्रवेयायायानके सामने

तुःनःगारःगोःनद्गाःकेदःक्ष्यः अत्यादः अदेनः अः विद्वाः विद्वाः

येन्द्रम्य स्थान्त्र स्था

क्रन्सित्रम्सारम् वात्रम् क्रिया से दुर्ग्युस्पित्र स्थान्त्रम् स्थान्त्रम् स्थान्त्रम् स्थान्त्रम्

योद्धेयात्रा विद्यान्य स्थात्र स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्

ने नित्रवा र्स्रेवा त्यास मुस्रास या विहेश

য়ৢয়য়ेऽ ५५वेऽ । हेऽ ५४ য়८ वर्षे। ५८ से। য়ৢয়য়৾ऽ ५वेऽ ५वेऽ

श्र्वाः क्षेत्रः रुवा गर्शेतः श्रुश्यः यान्याः नितः यात्वतः व्याः मितः स्वा व्याः स्व व्याः स्

ये दु 'निन' मान्त में तु ।

र्देव'ग्ववव'र्षेद'यथे'देश'य'येद'येद'र्येद्र । यद्या'र्षेद'य'व'देथे'हेश'शु' श्रेंया'र्षेद'ययथा यद्या'र्येया'रेद'येद'यद'श्रेंया'दे'ह्या'र्येद'र्य्या'यथे' से'श्रेद'यर'र्य्या यद्या'दे'ह्या'रु'ह्या'यथे'ह्र्य'शु'र्षेद'यथ'दे'र्थेया'यथे' ग्वि'से'श्रेद'यदे'र्थेर

> त्वर्याः वृतः स्टान्न विदः विदः विद्याः । कुः इस्रसः त्यसः विदः विदः विदः । विद्यसः विदः विदः विदः । कुः इस्रसः त्यसः विदः विदः । कुः इस्रसः विदः विदः विदः । कुः विदः विदः विदः विदः ।

श्रॅगाने केंश्राउदा डे स्ट्राचन्या ने श्राच केंन्य ने स्ट्राचित स्ट्राच स्ट्राचित स्ट्राच स्ट्राचित स्ट्राच स्ट्राचित स्ट्राचित स्ट्राचित स्ट्राचित स्ट्राचित स्ट्राचित स्ट्राच स्ट्राचित स्ट्राचित स्ट्राच स्ट्राच स्ट्राच स्ट्राचित स्ट्र

क्र्यास्त्रे म्रायमेयामे क्रियाये द्वराम्याये म्रायस्य स्यस्य म्यस्य स्यस्य स्यस्य स्यस्य स्यस्य स्यस्य स्यस्य स्यस्यस्य स्यस्यस्

गायाने मान्त्र होता हो ।

वर्त्ते वर्ते दे वर्ते वरते वर्ते वर

त्रायाक्षेत्रायम् स्रार्थेन्यम् प्रत्ये स्राया स्र

क्रिं-सञ्चर-च-व-वाहिश

र्हेन्श्वर द्रेश द्रा देवे यम द्रमामा पर्वे।

८८:स्र्

र्हेन्शूर-५र्देशन्त्री

वर्तः वर्षः प्रत्यः वर्षः व

व्यक्षः तुः विदेश्य स्वर्ण के व्यक्षः श्री के के स्वर्ण के व्यक्षः तुः विदेश के विद्यक्षः तुः विदेश के विदेश क

"""र्द्रायविव्यारियारिद्राक्रिया

देश'त्र'विंद'स्द'नवित्र'गिरुग'हेर'धेत्र'गह्रश्रश'स्र प्रथा विंद्र' शेदे'वर्ज्ञश'तु'धेत्र'स'द्र'श्राधेत'रा'गहेश'गदि'गवि'श्रश्रुत'धेत'रिटेश्चिर्

> याडिया'ते'रूर'यत्वेत्र'त्र'यात्।। यो'त्र'यो'भेत्र'रूर'यत्वेत्र'याहेशा।

नकुः चैत्रः श्रीः श्रीः निष्ठमाद्गे र्क्षेशः उद्या श्रेः भितः सन्दर्भे स्टर्ग्ने स्टर्गे स्टर्ग्ने स्टर्गे स्टर्ग्ने स्टर्गे स्

देशक्षाविक्षः सेन्यक्षः चिक्षः चिक्षः चिक्षः चिक्षः विक्षः विक्य

ने स्व र्द्धं व र्या प्रविव रेश राष्ट्रिया

देशक्षःस्ट्रम्बिद्यास्ट्रम् ।

त्रेशन् कुःशेन्द्रव्यक्षातुः दुः नः द्वाश्यक्ष्यः स्वाधिः विद्यः स्वाधिः विद्यः स्वाधिः विद्यः स्वाधिः विद्यः स्वाधः स्व

देवे खद द्याया य दी।

रु:दर:र्व्य:स्वाडेमाःहे:क्ष्र्र:प्रश्नुद्रा। इ:संव्यक्ष:माडेमाःहे:क्ष्र्र:प्रश्नुद्रा।

याने माने माने याने याने प्राप्त स्थान स्

कुन्दार्यः अगिष्ठे अगिष्ठा के अगिष्ठा विष्ठा विष्ठ

बन्द्राम्बेर्छ्द्रस्थित्।

दे भ्राधीत त ह्या श्राप्त प्याप्त प्याप्त प्याप्त प्याप्त प्याप्त स्थापत प्याप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र

र्रास्टार्टे में त्यायावशा श्रीम्। दे त्यी प्रदायावेवा उवा श्रीम्। वाद्यायो स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थापत

ये दुःचने संग्नन्द में दु

कुन्दर्देशकें शड्या नुश्राश्याविषाः अधित्यस्त्रया। स्टास्टर वी देश्वे स्वादेशस्त्र ह्या श्रें श्रें व्यावावश्यायि हिन्ना ने श्रें व प्यटा देवाश वी विषा हेश निहें नु सुर हो। वा ने स्वादेश ह्या स्वादेश स्टाद विवाह व हो। वा के वा हेश निहें सु स्वाद ह्या व विवाद व विवाह के स्वाद है। वा के वा हे स्वाद हैं स्वाद ह्या व विवाह व विवाह के स्वाद है। वा के दिन हो ने प्येव स्वादेश हैं स्वाद हिल्या का वा के स्वाद है।

दे 'चित्र से 'वे 'च' प्र प्र । । क 'चार 'ची स' वे 'से र हें चार 'प्र से । । हे व 'धेव '''। ।

नेशनने से हैं निश्वासी ।

ळंट्रासदे द्वाय वोय के के वाये दुर गुरा भंदे द्वाय न्नि वर यस वायय विद्

र्'चर्,रराष्ट्रियोश्राण्चीःक्ष्राश्चीयात्राच्यात्राच्यात्राच्या यनिष्ट्रम्हिन्यस्यम्यस्य स्याधितः विष्ट्रम्यस्य स्थितः स्याधितः स् ननभुे नामे अन्तरे भी म

বর্রঅবাইমমান্ত্রিশ্রাক্তর্মাবমূর্বারাআরিমা

कु:वन्नमारेमानेन्यन्य नन्यायाडेया यहोत्य न नन् होत इव्ययः हो दः धर्वे । ८८:स्र्

कुःदन्रसःदेसःग्रेन्यन्त्रःयंदी

सेर्नेशयान्यमामान्वरयादी। क्रिंगमानेनायमानुस्मिति। र्न्नाने त्यायहाया से न्राउद्या ने सूर यत्र राज्य वितार ने नितार मुना।

न्ना के ने व्यवस्थान के ना स्वर्धन स्वर्धन से ना स्वर्धन से ना शुअःशुःग्रात्र्रद्वासे देशहेरायेव शुराध्रव हेगा शेट सेव शी प्यव या गवित्रः तुन् भीराया नर्देश्या न रेत्रायया तुरान दे रेत्री मा ने रहेरा से न् रेत्र ने पविता

द्वशःदेशःवुद्यः अट्यः स्यायः स

#T\$\\

त्रत्रत्र्द्रभिरावश्चरत्राधी। यवाक्षेत्रक्षेत्रयाक्षेत्रप्रदेशिश्चरा। यवाक्षेत्रेक्षेत्रक्षेत्रप्रदेशि। यवाक्षेत्रेक्षेत्रक्षेत्रप्रदेशि।

য়्यायाष्ट्रवायम् इत्वित्तं क्षेत्रः यो व्याप्तः वित्तः वित्तं वि

ठे सूर रूर कु त्या है या व्या । रूर प्रविव से दाव से प्रवृत्त या ।

नेशः ग्रः यहिषाः प्रतः ग्रुशः शः हित्। विषः ग्रः में प्रतः यन् प्रतः विषः वि।

বাধ্যুম্র'মা

रेग्र उदायावदाधरारे सूर ग्रुवार वी

र्षुयाः उत्रास्त्रस्य स्था । यहतः क्षेत्रस्य स्था । यहतः क्षेत्रस्य स्था । यहतः क्षेत्रस्य स्था । यहतः क्षेत्रस्य स्था । क्षेत्रस्य स्था स्था । क्षेत्रस्य स्था । क्षेत्रस्य

यद्वत् चु:श्वु:श्वे:ह्वा:श्वुव:ग्वे:श्वेंवा:व्विव:यःग्वुव:यरःवश्वदःयःयशः

येषु निने मणान्तर में तर्थेषु

हेश्राध्यायियायुः उदाधीः यात्रदाक्षेयाश्राद्यायायाः स्वितः स्वास्यः देश्रास्यः क्षुश्रास्यः त्रभृतः सुदास्य स्वास्यः स्वास्यः स्वास्यः स्वास्यः स्वास्यः स्वास्यः स्वास्यः स्वास्य

বা্ধ্যুম'মা ম'ন্মীবা্ম'মন্ট'ন্মী'ন্নিমা,মু'মী'শ্লুব'মন্ট'লু'মক্লব'ল'বা্ধ্যুমা

८८.५ कु.८८.विय.वे८.स.८स्थाश्रायद्व.८स्य.स्थ्रंथ.स्य.स्थ्रं

र्से से के प्रत्ये कु सक्त के प्येत के त्या के कि प्रत्ये कि प्रत्ये के प्रत

कु'न्नरें नें क्षेया केन्ये श्री । देव क्षेया यर वे ने हिन्य यथा । क्षे न् क्षेया य ने देशे वे युवा य वे क्षेत्र। । इन्नर्य रहे स्याय अन्तरें। ।

यारायश्चिश्चेश्व

ने त्यतर क्षेत्र भाग्य व्यवस्था । या प्रवास क्षेत्र प्राच्य क्षेत्र प्राच्य क्षेत्र । या प्रवास क्षेत्र प्राच्य क्षेत्र प्राच्य क्षेत्र । या प्रवास क्षेत्र प्राच्य क्षेत्र । विश्व प्राच्य क्षेत्र । । या प्रवास क्षेत्र प्राच्य क्षेत्र । ।

ये दुःचनि सःगन्त देन से द्य

याह्रव्राक्षेत्राश्चाश्चाश्चार्यः व्याप्त्रात्त्र्यः प्रमान्त्रेत्रः व्याप्त्र्यः व्याप्त्रेत्रः व्याप्त्रेत्रः विष्ट्रेत्रः विष्ट्रेते विष्ट्रेते विष्ट्रेत्रः विष्ट्रेते विष्ट्रेते

क्रम् अत्र म्हारा में क्रिया के तुर मुक्ष प्रदेश मुक्ष प्रति महाराज्य विषय विषय

ये तर्भाक्ष भे स्वान्य स्वान्य स्वान्त स्वान स्वान्त स्वान स्वान्त स्वान स्वान्त स्वान स्वान्त स्वान्त स्वान स्वान्त स्वान स्वान स्वान्त स्वान स्वान स्वान स्वान स्वान्त स्वान स्वान्त स्वान स्वान

বার্ট্ড মান্য মন্ত্র বিষয়ের মান্ত্র বাহার বিষয়ের ক্রি মান্তর বিষয়ের বিষয়ে

त्रोयायाते अपिता व्याप्ता व्यापता व्याप्ता व्यापता व्यापता

ने त्यान्स्रेग्या सुनः इस्यया ग्री दी।

येषु निने मणान्तर में तर्थेषु

र्धिन्यन्भेग्रस्यस्यस्य विद्यस्य । ने भ्रिन्से से स्वर्थस्य स्वर्धस्य । भ्रिन्से ग्रस्ति स्वर्थस्य स्वर्धस्य ।

र्देव श्रुवा चेव श्रुवा श्रुव

नश्चुन नुःर्रेश म्बुर न ल मिहेश

न्देशकी

ध्ययः सेन् श्री मान्य स्थायः उत्र से । । नियाय हेन् श्री मान्य स्थाय स्थायः स्यायः स्थायः स्

मे संस्थित लेगा मुन्य मिन्।

त्रम्यम्यत्वापितः सः स्वित्रम्यते प्राप्तः प्राप्तः प्राप्तः प्राप्तः स्वित्राप्तः प्राप्तः प्राप्तः स्वित्रापतः प्राप्तः प्राप्तः स्वित्रापतः स्वतः स्वित्रापतः स्वित्रापतः स्वित्रापतः स्वित्रापतः स्वित्रापतः स्वित्रापतः स्वित्रापतः स्वतः स्वतः

न्भेग्रास्त्रम्यस्य मान्त्रस्थि। भेर्म्भग्रास्यस्य मान्त्रस्थि। नेर्म्भर्ते स्थित्रस्य स्थित। क्रिस्ते स्थित्रस्य स्थित।

र्थिन्द्रन्भेग्रान्द्रन्थे न्यान्यः वित्रान्यः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थान्यः

বাধিমা:সা ব্যক্তিম:মা

र्डेन्:श्रॅन्दो

यन्त्रम्यायायात्व्यायात्वे त्येत्रम्य दे त्य्यात्वे त्यायात्वे त्यायात्वे त्यायात्वे त्यायात्वे त्यायात्वे त्यायात्वे त्याया विष्टे त्यायात्वे त्यायायात्वे त्यायायात्वे त्यायायात्वे त्यायायात्वे त्यायायात्वे त्यायायात्वे त्यायायायात्वे त्यायायायाय्यायायाय्यायायाय्यायायाय्यायायायायाय्यायायाय्यायायाय्यायायाय्यायाय्यायायाय्यायाय्यायायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायायाय्यायाय्यायाय्याय्यायाय्यायायाय्याय्यायाय्याय्यायाय्याय्यायाय्यायाय्याय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्याय्याय्याय्याय्याय्यायाय्याय्याय्याय्याय्याय्याय्याय्याय्यायाय्यायय्याय्य

श्वरायायाय्ये द्वाराययाया । ग्रायय्यायाय्ये द्वारायया । ने प्रयय्याये द्वाराययाया । स्वार्थाये स्वार्थियायाय्ये । । स्वार्थियाय्ये स्वार्थियाय्ये । ।

तुस्रायासेद्रायते श्रुव्यास्त्रीति श्रुव्यास्त्रीत् श्रूव्यास्त्रीत् श्रुव्यास्त्रीत् श्रुव्यास्त्रीत् श्रुव्यास्त्रीत् श्रूव्यास्त्रीत् श्रूव्यास्त्रीत् स्त्

यवयाः चित्रः व्यव्याः स्ट्रां चित्रः स्ट्रां स्वरः स्ट्रां स्वरः स्ट्रां स्ट्रां स्ट्रां स्ट्रां स्ट्रां स्ट्रा यवयाः चित्रः व्यव्याः स्ट्रां त्रःश्रूत्रःत्रवरःविगाःश्रुवःत्रःत्रश्रूवःतःवे। यःत्रीयाश्रावः योतःवः श्रूत्रःशेः। श्रूतःश्रीः व्यातः व्य

यालव:द्याः हे अःशुः श्रे नहें दःय। ।

यह अर्गेट्र प्रदेश मान्य क्ष्य प्राचित्र प्रा

युन'म'न्द'हे कें अ'स बुद'यश। । नह'इद'हे द'र'यनय'हेगामें ।

ये तुः निव नामानिव निव स्थि द्य

> कु:न्द्रः अर्घेदः न्द्रः अर्थेदः यथा। कु:न्द्रः यर्थेदः कुनः निवः हे।।

> ने'यिष्ठेश'य'ते'यत्रश'र्शेयाशःश्चा । न'सून'र्नेत'त्'यगेंन'य'धेता।

ळॅ८.शतु.४४.५म्जातामी.क्रुया.जु.४५.या.४५८.४४.य.५५८.४४.या.या.या.या.या.या.या.

वर्त्ते र्ह्म्या होत् पर्रे दे रहेत् व्यावन्त्र स्त्रे प्रे स्त्र स्त्र हे स शुःवर्गे र्थेग ग्रुश ने छेन या कुवे नर्रेश श्रेर गो श्रुश श्रुन वें रायर नवे नेंव र्'नर्गेर्'स'लेब'सदे हिरा

व्यवाश्वास्त्र स्ट्रेंन्यवे क्युं सळन् क्युं शर्मेन्यस्य वि

कुं विश्वायम्य विश्वायम्यम्य विश्वायम्य विश्वायम्य विष्यमम्य विश्वायम्य विष्यमम्य विष्यमम्य विष्यमम्य विष्यमम्य विष्यमम्य विष्यमम्य विष्यमम्य विष्यमम्य वि वर्ने वे स्राम्बेव वर वर वर्ष श्रीम्। गान्त्रक्षेग्रारास्य म् वीत्र स्वर्धा बन्द्रायम्बेन्द्रभेम्स्याम्ब्रम्।

गहराक्षेत्रायाची र्यान्ते वित्राया स्वाया स्वाया वित्राया वित्राया वित्राया वित्राया वित्राया वित्राया वित्राया बन्दरायरार्द्रायिव सार्वे मुकायि मान्द्रा है मुकार्य से सार्वे सार्वे सार्वे सार्वे सार्वे सार्वे सार्वे सार्वे नश्रूव भन्ने कु अळव पेर्प ने अन्ये न अन्ये न अन्य न स्वित स्वित स्वाय थी। वर-तु-वर्भाग्यभावी-भ्रान्य-द्वीर्याव्यान्दियासु-साव-विदानीना दे वे र्रायने व रहण्या श्री वर र्रायन् या स्याप्ट्रिया में कु त्यया स्या यर.यथवी.येषु.वयंत्राची.श्रीय.त्राष्ट्रमेत्रात्रात्तर्त्यात्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रा

र्ट्रश्राम् कुर्विषाश्राम्यारश्रास्य विश्वायात्र । वर्ष्युरामुन यरप्रकर्पाने देवा भेन दे।

ये दुः निनं भागान्त में निष्ये दु।

বাঝুম'মা

अन्भेग्रभः भवे देव गान्त भः न्वन भः वाश्या

श्रूट:सुट:स्रान्धेम् श्राम्यदे:र्नेत:न्द्रा से:श्रूट:न्यःसन्धेम् श्राम्यःन्द्रा सन्देशम् श्राम्यः श्रीतः निवे:न्वे:नर्दे। न्दः सें।

अूट:रुट:स:द्येग्याय:यदे:र्देव:यःग्रुस

रदः चित्र संद्ये वा संदि ह्या संग्री मित्र कि संग्री स्वा संग्री स्वा संग्री स्वा संग्री स्वा संग्री स्वा संग्री स्वा संग्री स्व संग्री स्व संग्री स्व संग्री स्व संग्री संग्री

नश्चनः पान्तः। नश्चनः प्रति । नश्चनः प्रति । नश्चनः प्रति । नश्चनः प्रति । नश्चनः प्रति ।

মান্তমান্ত্রমান্তর্মান

तर्ने ते प्रयाय र्थे ते या ग्रायया । या प्रयाय र्थे ते या हिया उत् यी। । र्से ते भी प्रयाय प्रयाप विश्वा

नन्द्रमञ्जी

याडेवान्स्रियास्यायस्त्रेत्रेत्वेसः श्चेत्रः विस्त्रेत्रं स्यायः स्त्रेत्रं स्वायः स्वयः स्वायः स्वायः स्वयः स्

र्श्चित्यम् इव क्षेत्र यथा। देव क्षया ह्या प्रमाणका ।

ने भूते निष्ठ निष्ठ । विष्ठ निष्ठ निष्ठ । विष्ठ निष्ठ । विष्ठ निष्ठ ।

हैंग्याने न्वाक्ष्यया शुं हीं त्या या स्थ्या हीं ते स्था स्था निवास ने निवास निवास ने निवास निवास ने निवास ने

ने सुन मदे नें न ने।

ने भ्रिम् क्लिं न्ही म्हा के निष्या । मुन व्यक्ति ने निष्या में का ने के निष्या ।

विःश्वेरःत्रभःत्वाःमःयःदेशःमःवद्देवःमःस्टःदेवाःभर्देवःश्वभःयःदेशः यरःवर्ष्ट्रभःते। तुस्रःमदेःह्रसःमःउवःग्रीःत्वरःह्वेःतःस्तःहेत्ःश्वेरः यदःस्ताःसदेवःश्वसःस्त्रमःस्त्रमःयः

क्ट्रायदे द्रयादमेया में क्ट्रिया ये दुर्ग मुख्य प्रदेश द्रयाय भूटा वरायया यायया मेया मेट्रा

यर्देव-शुय्यानीयान्यवे-द्यदःस्विः यर्देव-शुय्यानीयानीयानेवे प्युत्यानीः देव-तुय्याना-दियान्यानान्यान्य-दिन्दियायान्यां यान्यानीयानेवे प्युत्यानीः

> देग्द्रःश्रेवःवः त्रुवाः श्रेदः श्रेत्र। दवादः षदः त्रुवः श्रेवः श्रेः दशुन्।

र्त्तुं स्टारेवा अर्देव श्रुं श्रूं श्रुं श्रूं श्रूं श्रुं श्रूं श्रुं श्रूं श्रूं श्रुं श्रुं श्रूं श्रूं

ने हे क्षूर गुन मने कंन ने

न्यायाः यावि र स्थेया सः प्रस्यायाः श्रुः न स्थेया सः प्रस्थः स्थायः स्थे। न यायाः स्थ्रीया सः प्रस्थः स्थ्रे स्थ्रे सः स्थे स्थ्रे सः स्थ्रे स्थ्रे संस्थितः स्थ्रे स्थ्रे संस्थितः स्थ्रे स्थ्रे संस्थितः संस्थितः स्थ्रे संस्थितः स्थ्रे संस्थितः संस्थितः स्थ्रे संस्थितः संस्थितः स्थ्रे संस्थितः संस्थितः स्थ्रे संस्थितः संस्थानः संस्थितः संस्थिते संस्य संस्थिते संस

म्द्रम्बित्। ह्यद्रास्य स्वतः श्रीतः यथा। मान्द्रम्य स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः ।

> ने भिराने से प्रमास सम्बद्धा । ने भ्यम मुन्यम स्वतान सम्बद्धा ।

तर्रेन्त्र। क्रेंक्षेर्यात्रेन्त्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेत्त्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयायश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयाश्चर्यात्रेयस्य विष्णेत्रेयस्य विष्ण

नेश्व स्थान्य स्थान्य

न्यानाः चालिः हेन् न्यानाः चुक्षः न्येत्रः याक्ष्यः चालितः याक्ष्यः याक्षः याक्ष्यः याक्षः याविः याक्षः याविः याक्षः याक्षः याक्षः याक्षः याविः याक्षः याविः याक्षः याविः याक्षः याविः याक्षः याविः याविः

বাঝুম'মা

याबवर री स्वाधित स्वा

लेव.सप्त.हीर.व.वीय.श्रेर.प्रधीर।

ध्रान्ध्रेम् अप्तान्ध्रम् अर्थः श्री अप्तान्ध्रम् अर्थः श्री व्यान्ध्रम् व्यान्यः व्यान्यः व्यान्ध्यः व्यान्यः व्यान्ध्रम् व्यान्यः व्यान्

নাইশ্বা

भ्रेन्थ्रदायायान्ध्रीम्यायाची

श्रेश्वरादेश्वराश्चेत्रप्ति । मान्त्रप्तान्त्रप्ति । श्रेश्वराद्यान्त्रप्ति । श्रेश्वराद्यान्त्रप्ति । श्रेश्वराद्यान्त्रप्ति । स्थार्ह्मान्यःश्चेत्रप्ति ।

क्रम् अत्र मुक्ष प्रमेषा मी क्षेत्र प्रमेश मुक्ष मुक्ष प्रमेश मुक्ष प्रमेश मुक्ष मुक्ष प्रमेश मुक्ष मुक्ष प्रमेश मुक्ष प्रमेश मुक्ष मु

र्षित्-सर्-स्रिक्षुं श्री भाग्यत् से प्रत्यात स्रुत्न श्री निष्ण स्राप्ति स्रिक्षः स्रिक्यः स्रिक्षः स्रिक्षः

व्ययात्रान्यायम् व्ययायीत्।

देश'राञ्च्याञ्चेर'याह्रद'ळेयाश'या । दर'रेंदे'द्यर'र्रु गुरुष'रा'धेदा ।

यान् भेग्राभाविः गान्त्र क्षेंग्राभावः भेनः स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थ

বাধ্যম'না

सन्ध्रेयासम्बद्धे राजायाविश

प्रतः देगा भी गात्र भारत्यायाया यहेत् प्रते सान्भेग्या प्रति हुँ राजदे न् हो जाते।

र्रा श्वेर्य प्राप्त विष्ट्र विष्ट्र

यान्येग्रायान्द्रभाश्वास्त्रात्ते। कुन्द्रप्ति । किन्य्याप्ति । किन्याप्ति । किन्यप्ति । किन्यप्ति । क

ळग्राश्रु ग्रु राद्याय यार्वे द हो द धिव संदे ही स्

व्यूट्रेन्यम् स्थान्त्रिन्यम्

नेरावया गर्वेन् ग्रामारिया स्थानित्र स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्

यत्रः हुं त्रः श्वरः त्यायः श्रीः दर्देशः त्यायः दरः । ह्याशः दरः द्यायाः श्रवेः र्केशः श्रीः त्यायः चः दरः । त्यायः चः देशः श्रीदः श्रीः र्क्षदः सः चल्दः पर्वे। । दरः सें।

यव्रक्षंव्रश्चर त्याया श्री द्रिश त्याया वी

यव र्द्धव प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त विवा । यह व प्राप्त प्राप्त विवा ।

र्श्वासं के भाउवार्षितार्श्वासम्बाधिवात्ता सवार्ष्वाश्वादमायायायात्रहेवा

ये दु 'निन' भागवन में न'ये दु।

ह्मारु:न्द्रम्मान् चुदे:क्रिंशःग्री:दमायःनःदी

ळॅन्'स'म्बित्सी स'मिर्डित'सित्सा । देस'सुर-५८'हे'स्रिस'मठस'मिर्वित्।।

श्रे म्वान्य के श्रे रहा श्रु त्र प्राचित्र त्र हो निये स्वान्य स्वान

ळॅ८.शंदु.४थ.तंग्रेल.ग्री.क्रुया.लु.४.ग्रेश.संदु.४थ.य.५८.४४.य.च्या.व्यायायाया.ग्रेटी

र्देव'ग्ववव'य'नर्देवे अ'रा'द्र्यायस्याय'नर्देश'रा'नविव'र्वे।।

यार-न्याः रूर् अश्यार्वे न् सदे त्यायाः न न्रः रूर् अयाव्य सीशः गर्वेद्र-प्रवेख्यायायायावेशासुप्रचेद्रायावे सेंद्रश्यायादे सक्रायाचे स इस्यान्वनाः स्रे। कॅन्स्स्यान्वेन्द्रनायायाः कुन्द्रनायाः क्रीस्यान्याः कंन् साम्यादेशासु सामाञ्चानापते धिरार्ने । यित रहेत श्वरायनायाया निहेत यदे प्रवाय हिन द्रीयाय पदे द्राया ह्याय छी द्रो की क्रिके रहता ह्या नशः ह्रेंट है। जुरु नवे ही र डेरा न हा नुदे।

বন্ধ্যমান্ত্রিন্ট্রেড্রেন্স্মান্ত্র্ব্র্যান্ত্র্ব্র্যান্ত্র্ব্র্যান্ত্র্ব্র্যান্ত্র্ব্র্যান্ত্

मुंश मुद्दानी मुंख यह मार्थ यह मार्थ यह मार्थ यह सामित ग्रे क्रें र न न क्ष्र मर्दे । द्रिम श्रुम् मी कुं या नहीं माना या वहीं वा देश द्वा ना या वही

कु पावन यश हो हे नर दी। गर्नेव से ज्ञानमाना वा वि

उधान्या है नरमाया धेरिने सेरायर मया हिंदा है। यह गाया हिंदा रा

यश्रिशः चूरः वी कुं वावव यश क्रे शर्य दे हिरा

न्रेशसिक्षुःषशः चुरःषीवःव।।

तुअ'मदे'न्र्स्यार्धदे कु'त्ययातुयाम'न्रा दे'त्ययादहे वा'माद्य हुर' न'धेव'मयादहे वा'मर'देयार्थे 'बे'वा

नकुर्भदेर्न्यस्य हे विग्राम्य

ने प्रति प्रकृत प्रति प

यायाने कुरे रायहियायावित्। ।

यायाने त्रुयायये कुन्याययाचे वायाने त्रुप्ताययाचे वायाने त्रुप्ताययाचे वायाने त्रुप्ताययाचे वायाने व्याययाचे वायाने वायाने व्याययाचे वायाने व

न्द्रश्रास्त्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रम्। प्रम्युत्रम्।

तुस्रायि प्रेंस्य में पे कि प्रमाय के विवा प्रायि प्रेंस्य के प्रमाय के विवा प्रायि के विवा के

ने ने नित्र मा हिन् स्त्र स्त

त्रुयः यहँ या यहँ या यह वा यह

ने भ्राक्षेत्र सम् के भ्रम् त्युम्। निम्म निम्म निम्म सम्। क्षेत्र सम्केत्र सम् क्षे स्ट्रिन निवा।

तुस्रायदे द्रस्यार्थ क्रिंश्वत् । तुस्रावस्य द्रिस्रायदे वाद्रस्य देश्वत् । स्यादे विद्रस्य क्रिंश्वर्य । स्यादे विद्रस्य विद्रस्य विद्रस्य विद्रस्य । स्यादे विद्रस्य विद्रस्य विद्रस्य । स्यादे विद्रस्य विद्रस्य विद्रस्य । स्यादे विद्रस्य विद्रस्य विद्रस्य विद्रस्य । स्यादे विद्रस्य विद्रस्य विद्रस्य । स्यादे विद्रस्य विद्रस्य विद्रस्य विद्रस्य विद्रस्य विद्रस्य । स्यादे विद्रस्य विद्रस्य विद्रस्य विद्रस्य विद्रस्य विद्रस्य । स्यादे विद्रस्य विद्रस

क्रिंशपासे प्रति स्थित स्थित स्थित । प्रति स्थारी स्थित स्थित स्थित स्थित ।

यहेर्मा यम यशुम सम् भूता विषय या निर्देश सामे स्वीत स्वी स्वीत स्

ने भूर शुर ने पूर्य के पूर पश्चा।

न्द्रभः सं गावस्य प्रति प्रति

বাইশ্বা

क्रूँ अयो नुर्श्वे र नि

यादःद्याःदेःख्यंद्रायात्वदःक्ष्र्यंत्रेत्रा । देन्याःदेःख्यंद्रायात्वदःक्ष्र्यंत्रा । देन्याःदेःख्याःखायोग्यायाः चेदःया । सेदःयः उदःख्याः व्यायाः योग्यायः चेदा ।

ये दुःचने संग्नन्द में दु

चश्रवः वर्ष्ठशः वर्ष्ठवः वर्ष्ठशः वर्षः वर्ष्ठशः वर्षे वर्षः वर्षे वर्षः वर्षे वर्षः वर्षे वर्षः वर्षे वर्षः वर्षे वर्षः वर्यः वर्षः वर्षः वर्यः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः व

स्वान्त्राहित्राहेत्। विद्यान्त्राहेत् । विद्यान्त्री । विद्यान्ति । विद्यान्त्री । विद्यान्ति । व

বাঝুঝ'মা

नन्द्रासम्भित्रसदेन्त्रानायामहेश

याबुदःहॅग्रथः नगदः नम्भवः यथे क्षेत्रः वर्षः के न नहें दः यः दर्। यदेवे देव हें ग्रथः यथे वर्षः यव व्यव के नम् नम्भवः यवे। न्दःस्र्वा वालुदःह्रिंग्यादान्य न्यायः न्यायः स्र्वा प्रतिः स्र्वा स्राप्ते स्राप्तिः स्राप्तिः स्राप्तिः स्राप्तिः स्राप्ति स्राप्तिः स्रापतिः स्राप्तिः स्रापतिः स्रापत

र्त्तें भि तुर्याय कुराय से दाय दे द्वा भी या या स्वय से दि दे हि दा हिंग्या से दाय से दाय

नर्हेन'त्युर्याशेन'हुया'यर'शुर्यायर'हुर्यायीर्यायीर्यायीर वित्रेन्यायीर्यायीर वित्रायीर्यायीर वित्रायीर्यायीर वित्रायीर्यायीर वित्रायीर्यायीर वित्रायीर वित्रायीय वित

र्म् त्य श्र श्री वर्षी भारत सिर्मि स्थानि स्थानि

ये छ नवी भागावन में न यो छ।

नदे कु रें के त रें इस्र रास्त्र स्पर कु सर्के के त रें ल वेस सर देशूर न नवित्रः नुर्देश । अवरः रद्यां ने ह्यां अर्थः विस्वारं र त्यू र निवे ह्याः अळतः पे द ने। रूट यन्य रावे देवा हु वर्षे न इसयाय हैं या राषे रूट न्य संदूर्य यर येग्र राज्य निरादि शुरदि वायर हो दाया थे हे दाया उता पी वाय दे ही स् र्ह्में क्रा की अर्थ किर प्रकाश हैं यो का शुर क्ष्या सें प्रा हैं की का सुवार्त हुर प न्ना नर्हेन्द्रम्थान्त्र्यार्थान् नुम्यार्थाः केते स्थित्रः स्वित्रः स्वित्रः स्वित्रः स्वित्रः स्वित्रः स्वित् र्ह्में विदायम् अवन् हिंदी तुर्याय कुम्य केम्य सम्बन्धे प्राया कें विद्याय है। न्नानी अःग्रमः वर्ने मः नश्रूनः पवे : बनः स्रविः ने · विं नः केनः नामः बनाः नमः स्रे अः वः नन्गासेन् प्रदेश्वेद्दरहेन् सबदान्या वित्रे सूर्द्र हैया सामसेन् पाउन प्रदेश यदे भ्रेरप्र प्रावर्हेन प्रयुषा वन प्र स्था बर्ग वहेंन प्रयुष्य की न हि सूया धराशुराधाने 'द्रवा'वी अ' ग्राटा वदी राज १९५ प्रवे 'अर्के वा'वी' दे 'विं द 'हे दा बर' यन्ता वस्राउद्याद्येवायन्तर्देरावर्षेद्रायस्याद्रादेश क्रून्याग्री:देग्यायाय्याञ्चनायदेःद्ध्याविंदिःर्ताः सूर्यः सर्वेदः नासेदःयः पूर्वः यदे भ्रेम ने न्यायी अयहें न् ग्रुवाय पान्य प्रमुख के यस यसूत हैं।

यहिन्दिः देवः हिंग्रम् संनेवः हुः सवः प्यवः के नरः नक्ष्वः संवे।

ने त्थू र भी व ' हं हैं वा या या र न्याया या ते ' दें व ' क्षें या या या ते या या ते या त

यहानान्तरे से न्द्रा है। स्यान स्या

नःक्ष्ररःवर्देशःग्रदःक्ष्रयःयःददःवर्षेत्रःनहदःनःसःधेतःयम् वयग्रयःयः वहसन्धयः स्ट हिन निर्देश सु र्चित या हिन ग्री या हे या सु न बुद निर्देश सु ना ग्रे न्नूद्र सेंदे : ष्यद्र : द्रवा : सदे : देव : सदे : यस : वा द्रवा : वा सव : वा स्व : वा सव : वा सव : वा सव यदे भ्रिम्प्रम्। श्रेम् शुन्य स्माना देर् नेर से नर्नेर्यर सुरस्य पाविष्ठ । ग्विर सुग्रास परि प्यर पेंत्र हन्यम् अयर्केन्यदेन्यम् हिसेन्यन्य प्राप्त म्याप्त स्थित्। वर् नदे न्तु अदे वस ग्री अवहे ना अध्य से द न् श्रुद्य भवे श्री स न् । दे <u> न्यायी श्राञ्चन्याया ने व्राधी वार्य न्याया हो न्याया सुवा सुवा स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स</u>्वाया यन्दरः ध्वाते। हैं स्रदे रेदिन ने स्री साम हैं दे ख्या मुसाय स्री दाय है सा वर्रेशःग्रदः र्ह्ने र्जेशःग्रीः श्रेषाः इस्राधरः द्वाः धः दरः स्वतः धवेशः स्वरूषः য়ৢ৾৽ঀ৾ঀৗ৵৻ঀ৾৾৽ঀ৾ৼয়ৼ৾ৼয়৻য়৾ঢ়য়য়৻য়ঢ়৻ৠৄ৾য়য়য়৻য়ৢ৾ৼঢ়ৢয়৻য়ৼ৻ঀৢ৾ৼ यः धेवः यदेः धेरः र्रे।

ळंट्रास्त्रस्य प्रमेषाय्य यावव ग्री देव ग्री छेपा ये दुर्ग्य स्राप्ते स्रोप्ति।

प्राक्षेत्रेरमङ्गेष्ठाक्षेत्र भूषाय्व मुखार्थे प्राप्त भूषाय्व मुखार्थे प्राप्त भूषाय्व भूषे प्राप्त भूषाय्व भूषे प्राप्त भूष्त भूषे प्राप्त भूष्य भूषे प्राप्त भूष्य भूष्य प्राप्त भूष्य भूष

त्राष्ट्री शास्त्र व्याप्त स्त्री स्त्री व्याप्त स्त्री व्याप्त स्त्री स्त्री

येषु निवे मणावन में व येषु

बर यस ग्रम्थ से दिया हिना

रैग्रभः सरःश्चान्येया द्वान्यो देन्द्राधि । मत्द्रास्यक्षेत्रा भेद्रात्त्र स्वान्य स्

कुषानिविष्येषान्त्रभा भी विषयेषान्त्रभा । भू भू भा भा कुष्य निष्येषा । भू भू भा कुष्य निष्येषा । भू भू भा कुष्य निष्येषा । भू भू भा कुष्य निष्येष्येषा ।

यरः र्वेशः र्वेतः पाहेरः ख्याः प्रवेतः श्रुपः शेः पर्हेत्। । द्रापः श्रुपः प्रवेशः प्रमः स्राधेतः द्रशः । वर्षः पर्वेः प्रथः प्रवेशः प्रमः स्राधेतः द्रशः । पर्वेः पर्वेः प्रथः प्रवेशः प्रभः स्रोतं ।

इत्राची नश्र्य स्थ्रे स्वायाय स्थ्रुय स्वयः स्थि। इत्राची नश्र्य स्थ्रे स्वयं या स्थ्रुयः स्वयः स्थि। त्रुनःचित्रः नश्रुवः यः व्रुश्रश्रामः सः नर्ते न् त्रश्रा । ने किन् खुवः ने नश्रवः याव्याः स्त्रेन् वित्रः न् श्रा

यदेःयानेवासःयश्रवःयः अविदःहेवासःयरःदगाय। यद्याःवे:र्वे संक्ष्यः रुसः स्त्रुदः श्चुद्दसःयः दस्य।। ययः हेः सःयन्वदः स्वाप्ययः यन्वदः यः स्वाप्य।। दसःयः श्चुवः स्वाद्यस्य सः स्वीतः स्वादः स्वादः ।

हे न इंत हुन हुन से ते प्रति है न से हिन से

क्रन्याम्यावमेषाम्। म्यान्यन्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्या यसः भ्रेत्रः वे सः वे वा स्मः वा स्वा न्या न्या ने ना ने वा ने हु'ग्वित'य'यत'र्यते श्रुग्राराहे केत'र्येशा नीट ह्या केत'र्ये सु श्रुप्रार्थित दि र्वेग्रथः सेन्याहेशः ग्रीःन्वेन्यः यदेः नेवः श्रेवः केः सः वेंग्यः यकेशः करः ग्रयायायम् सहिन्दि स्थित्र स्था स्थान्य श्रूयाश्रासहराम। विराधरात् भ्रियान्य विराधरात् विराधरात् विराधने विराधित विराध य. इसमा श्रेमा श्रुमा श्रुम्पा श्रेमप्तमा श्रेम्प्रमा श्रेमप्रमा श्रेमप्रम् श्रेमप्रमा श्रेमप्रम् श्रेमप्रमा श्रेमप्रम् श्रेमप्रमा श्रेमप्रम् श्रेमप्रमा श्रेमप्रमा श्रेमप्रमा श्रेमप्रमा श्रेमप्रमा श्रेमप्रम् शेशशन्नवः केत्रः से न्याया स्वात्वः सः हे न द्वातः केत्रः से न सन्यायिः विषास्य स्वराप्ता सर्दे स्वारा ग्री सावस्य स्वराप्त सम्बराप्ता गी। र्देन दे सा से द र प्रति से वा सा र प्रति त्या सा सा से वा सा सा सा सा से वा सा सा से वा सा से वा सा से वा सा र्देव समय द्या न भू न साम अ र विषय निषय द्वा प्रमान निषय निषय । व्यायाहे के तार्ये या पुतान्य विश्वास्य विश्वा ने के ता खुरार या है सा से ता नश्रभ्रयाथ्व म्रम्भाया र्ख्या निव न् प्रम्मा प्रमे स्व मा मुत्य न मुत्य न मुत्य न ग्री-द्रमार्यदे के मामासुमारा कुया नदे द्रों द्रमारा है स्वान निवाद रिवहें व मदेः क्रेंत्र त्यस्येग्रस्य मुन्यस्य क्रेंत्र स्वेत्र ঀৠয়য়ৣ৾৽ঀঽয়৻য়ড়য়য়৻য়য়ঀ৻৾৾ৼঀ৾৸৻য়য়ঀ৾৽ঀ৾য়য়৻ঀৢ৽ঀয়৻য়ৢৼ৻৾৾৾৾ঢ়য়য় *केर*माडेशःश्रुशःश्र्द्राः सदि स्रोधश्राद्यायः केत्रः से द्रायः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्व यः हे 'नर्ड्, त्र्री 'क्रु थः से 'क्रे 'नवर ग्राम्य पार्य प्राप्य प्रवर्धि । व्यास्य प्राप्य ग्रे विनयाग्रे स्यार्थे नेयान्नरयानि सुनिवाययान्ता न्यार्थे नद्वा

क्रन्सदे द्वार वोषा की क्रिया ये दुर वुषा पदे द्वार पत्र प्राप्त वाषा यो प्राप्त वि

सिर्यास्त्रेरिन्नरिर्मेर्ग्त्रित्वादर्भाषान्त्रीःविष्यः स्वायाया कर्षाः स्वा धररेश्रायाळायवाद्रावड्यायायेवायायराई्यावीटा वयवायायासुत्र रश्यावीवाश्याद्यराष्ट्रवायी श्रुवाश हेते ह्रस्य तसुव्य तर्ते वात्र् स्रेत्र स्रुवश ग्वरा नन्द्रभून ग्रीन्स्व यादिव या इस्य ग्री वदाव कुषा सक्व ग्री र्नेजा[ः]क्ष्ररःस्रेष्टें न'न्ययःष्ट्रन्तःस्र'स्य'न्य'स्त्रेत्रःकेत् क्तुत्यःसर्कत्नन्ययःन वरः र्रेदिःवयःश्वर्याण्चेःमश्चरामेश्वराम्भयान्द्रा नक्ष्मारामश्चरायाचेशः श्रूयाशुः सहरायिः श्रे श्रूरायहेताया स्राप्यायि । प्रताय । प्राप्याय । नु न सुया वर्षा सुनामिते से मारे वर्षा मारे के वर्षा मारे वर वर्षा मारे वर्षा मारे वर्षा मारे वर वर वर्षा मारे वर्षा मारे वर्षा मारे वर्षा मारे वर्त्रे केव में व से व स्वर्थ न स्वर्य न स्वर्य न स्वर्य न स्वर्य न स्वर्थ न स्वर्य नक्ष्मराभिता नसून मार्चेत्र न्यान्य स्वीत्र मार्चे स्वी सक्ष्मर न्याने स्वीत्र स्वी सक्ष्मर न्याने स्वीत्र स्व सन्दर्भन्य न्ययान्यस्क्रित्नी महिनायन्याप्तर्न् वेनायस्क्रिनानी नह्यः व्वायः यान्यः विटः रेवायः यरः श्चानः दरः यः रेवः केवः ग्रीयः श्चूरः नर्दे।

धियो पादे खुर प्रत्येषा श्राप्त स्थान स्य

ये दुः निवे संग्वित दें ताये द्व

क्र.ये.ही

स्व-यनेत्र-त्युन्-यावशः मुयः यश्व-र्येतः श्रुवः।। स्व-यनेत्र-त्यादः श्व-र्यं त्युनः स्व-र्यं त्युनः य्ये न्याः स्व-र्यः।। स्व-यनेत्र-त्यादः श्व-र्यं त्युनः स्व-र्यं विक्यः।। स्व-यनेत्र-त्यादः श्व-र्यं त्युनः स्व-र्यं विक्यः।।।

धेमार्ने र प्रात्र कर ख़ूमा धेर के प्रयोग पान्य मान्य न प्राप्त के प्राप्त के मान्य के प्राप्त के मान्य के प्राप्त के प्र

ភ្វះគ្នាក្រាក្សក្យ marjamson618@gmail.com